'उलटा वृक्ष' के सम्बन्ध में

उलटा वृक्ष कथा साहित्य में कृश्न चन्दर का एक नवीनतम प्रयोग है। इस प्रयोग के फलस्वरूप एक अतिकल्पनात्मक लघु-उपन्यास (Phantasy in shape of a Novelette) का जन्म हुआ है। इसे कृश्न चन्दर ने अल्पवयस्कों के लिए लिखना शुरू किया था। वास्तव में कृश्न चन्दर का उद्देश्य अपनी कल्पना-शक्ति से काम लेकर एक कल्पना-प्रधान कहानी लिखना था। परन्तु सावधानी के बावजूद चूक हो ही गई। इस नावलेट के लिखने के दौरान में न जाने कैसे लेखक की सामाजिक और राजनीतिक चेतना (Consciousness) उसकी कल्पना से छूती रही और इसका परिणाम यह निकला कि यह सुन्दर कृति एक बैटरी की भांति चार्ज होती रही और अब यह एक अतिकल्पनात्मक कृति (Phantasy) ही नहीं है, एक प्रबल सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य भी है।

इस नावलेट के पात्र भी अनोखे हैं। इसमें बच्चों की कहानियों के दैत्य भी हैं, जादूगर भी हैं, रहमदिल बूढ़ा भी है, सुलेमानी टोपी और उड़नेवाली छड़ी भी है। परन्तु साथ ही इसमें जादूगर चुनाव लड़ते हैं; फिल्म डायरेक्टर उल्लू बने पेड़ों पर लटकते हैं और मशीनों के शहर में पूंजीपति का इकलौता बेटा मशीनों के बटन दबाता नजर आता है। एक सरल स्वभाव पाठक के लिए यह एक अद्भुत और विचित्र कथा है, और अल्पवयस्कों के लिए

भी इसमें मनोरंजन की पर्याप्त सामग्री है। यह सब होने पर भी यह कृति 'गंभीर साहित्य' में भी एक महत्त्वपूर्ण वृद्धि है।

और जो चीज़ इस काल्पनिक कथा को 'गंभीर साहित्य' की श्रेणी में ला खड़ा करती है, वह है लेखक की प्रचंड सामाजिक और राजनीतिक चेतना। इस चेतना के स्पर्श से इस कहानी का हरएक काल्पनिक पात्र और उसकी हरएक असाधारण घटना एक सांकेतिक महत्त्व प्राप्त कर गई है।

कहानी के प्रारम्भ में ही मुख्य पात्र मोहन को 'उलटे वृक्ष' द्वारा पाताललोक (Underworld) में भेजकर कृश्न चन्दर अपने व्यंग्य को पूर्णतया मुक्त कर देता है। काल्पनिक से काल्पनिक वस्तु सामाजिक और राजनीतिक सत्यों की प्रतीक बन जाती है। आवाज़ों का गुम्बद एक काल्पनिक गुम्बद न रहकर साहित्य और कला की अमरवाणी और उसमें क्रान्ति लाने की शक्ति का प्रतीक बन जाता है। 'काला देव' जाति और रंग के भेद से पैदा होनेवाली प्रतिक्रिया का द्योतक है। जाति और रंग के भेद को कृश्न चन्दर ने इस प्रसंग में बड़े ही सीधे-सादे तर्क से ग़लत सिद्ध किया है।

सोने का देव, चांदी का देव, और राजकुमारी को रुलाकर आंसू प्राप्त करनेवाला जौहरी, बच्चों की कहानियों के पेटेण्ट पात्रों की भांति नहीं हैं। यहां वे उस क्रूरता, कष्ट देने की प्रवृत्ति और अमानुषिकता के प्रतीक हैं, जो पूंजीवाद से उत्पन्न होती है। सोने का देव इन्सान के ख़ून से सोने की दीवार उठाता है। उसे इन्सान के ख़ून का दर्द नहीं, केवल सोने की दीवार के ऊंचे होने का ज्ञान है :

> "मोहन ने घबराकर कहा—परन्तु यह तो मनुष्य का ख़ून है"

"देव ने हंसते हुए कहा—मगर यह भी तो देखो कि दीवार कितनी ऊंची हो गई।"

पूंजीवादी मनोवृत्ति की नृशंसता की इससे अधिक चुभती अभिव्यक्ति क्या हो सकती है ?

इसी प्रकार सोने और चांदी के देवों के शरीर की बनावट का वर्णन, कल्पना की उड़ान-मात्र नहीं है। देवों के मुंह से सोने-चांदी के सिक्के गिरना और फिर तश्तरी में गिरकर नली के जरिये फिर उनकी नाभि में चले जाना, उस क्रिया की ओर स्पष्ट संकेत है जिसके द्वारा पूंजीवाद व्यवस्था में दौलत सारे देश में नहीं, बल्कि दो-चार पूंजीपतियों के हाथों में घूमती है।

'मशीनों के शहर' में कृश्न चन्दर पूंजीवादी व्यवस्था के अन्त का एक लोमहर्षक चित्र चित्रित करता है। 'सिफ़र-सिफ़र एक' की उंगलियां उसके बाप द्वारा कटवाकर कृश्न चन्दर ने आतंकवादी मनोवृत्ति का परिचय नहीं दिया है, उसने तो दासता की उस मनोवृत्ति पर एक प्रबल प्रहार किया है जो मशीनों को मानव के हाथों पर प्रधानता देती है। जो श्रम की महानता से इस हद तक इनकार करने लगती है कि उंगलियों को कटा बैठती है। नावलेट के अन्त में श्रम करने के कारण 'सिफ़र-सिफ़र एक' (जिसका नाम यामीन हो जाता है) के हाथों पर उंगलियों का उग आना इस सत्य को घोषित करता है कि श्रम ही से शरीर का विकास होता है।

जादूगरी का चुनाव राजनीतिक व्यंग्य का एक सफल उदाहरण है। अलादीन चिराग़वाला, सुलेमानी टोपीवाला, काग़ज पर मन्त्र फूंकनेवाला—ये सब बच्चों और बड़ों के जाने-पहचाने पात्र हैं। परन्तु इनको जिस रूप में कृश्न चन्दर ने उपस्थित किया है, वह इनका

जाना-पहचाना और परिचित रूप नहीं है। यह इनका प्रतीकात्मक रूप है।

इनके भाषणों में क्या एक चतुर पाठक आजकल की राजनीति की छाती पर व्यंग्य की पैनी छुरी धरी नहीं देखता ? ये तीनों पात्र एक-दूसरे को निरावरण कर क्या आजकल की राजनीतिक प्रवृत्तियों का नग्न स्वरूप उपस्थित नहीं करते ?

'सांपों का शहर' भी इसी शृंखला की दूसरी कड़ी है। इस शहर के वर्णन में कृश्न चन्दर ने शासक-वर्ग की उन चालों को बे-नक़ाब किया है जिसके द्वारा वे प्रजा में भ्रम और आतंक फैलाते हैं और फिर उनके रक्षक बनकर अपना राजनीतिक भविष्य सुरक्षित बनाते हैं। सांपों का शहर एक ऐसा शहर है, जहां की प्रजा में सरकार ने सांपों का डर फैलाकर प्रजा को भयभीत और निरुत्साह कर रखा है। ये सांप हरी पोशाकवाले बाबा के शब्दों में :

> "बेटा, वे सांप नहीं थे, वे आदमी थे······ऐसे आदमियों के हृदय में ज़हर भरा होता है और आंखों में पुतलियों की जगह चांदी की टिकलियां होती हैं। यही वे आदमी हैं जो आदमियों को लूटते हैं और उनमें लड़ाइयां कराते हैं।"

इसी प्रकार 'सोतों के शहर' की प्रजा को देवों ने 'सोते-जागते' के चक्कर में फंसा रखा है और बूढ़े पादरी के शब्दों में :

> "न ये इतने खोए हुए हैं कि कोई काम न कर सकें और न इतना जागते हैं कि अपना बुरा-भला सोच सकें।"

बूढ़ा पादरी यामीन को लाल के बदले 'बोलनेवाला शंख' लाने के लिए कहता है जिसे बजाकर वह प्रजा को जगा सके और देवों

के साम्राज्य का अन्त कर सके। परन्तु कृश्न चन्दर का यह शंख भी प्रतीकात्मक अस्तित्व (Symbolic Existence) रखता है। वह उस समय तक उठाए नहीं उठता जब तक उसे सोने के क़िले से लाए हुए गुलाब से नहीं छुआया जाता। यह शंख कैसा है और गुलाब के फूल से छुआने की क्या बात है? शुरू में लगता है यह केवल कहानी में कौतूहल बढ़ाने का एक साधन है। परन्तु जब फूल से छुआते ही यह शंख हलका हो जाता है और राजकुमारी के फूंकने पर 'उठो, मेरी दुनिया के ग़रीबों को जगा दो' गाने लगता है, तब यह भेद खुलता है कि कृश्न चन्दर एक गहरे संकेत से काम ले रहा था। वह शंख को साहित्य और गुलाब को उसके कलात्मक गुणों के अर्थ में प्रयोग कर रहा था और इस सत्य को प्रस्तुत कर रहा था कि जब तक साहित्य में कला का समावेश न होगा वह बोझिल और गूंगा रहेगा। साहित्य राष्ट्र के जीवन में चेतना और क्रांति उसी समय ला सकता है जब वह गुलाब के फूल की भांति सुन्दर, कलापूर्ण और सूक्ष्म होगा। यही नहीं, साहित्य उस समय तक भी गूंगा रहेगा जब तक उसमें इन्सान के सांस की आवाज़ और उसके संघर्ष की गूंज शामिल न होगी।

परन्तु यह सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता और व्यंग्य इस कहानी में वर्णित शंख की भांति बोझिल रह जाते यदि कृश्न चन्दर ने इन्हें अपनी कला के मृदु स्पर्श से सजीव न बना दिया होता।

'उलटा वृक्ष' निस्सन्देह कृश्न चन्दर की कला का एक अनुपम उदाहरण है।

—रेवतीसरन

उलटा वृक्ष

१

जब राम के पिता का देहान्त हुआ तो राम के पास एक झोंपड़ा, एक गाय, एक कुआं और एक छोटा-सा बाग़ बाक़ी रह गया था, बाक़ी सब कुछ जो था, वह राम का पिता अपने जीवन ही में क़र्ज़ की भेंट चढ़ा चुका था—कुछ गांव के बनिये को, कुछ राजा को।

पिता की मृत्यु के पश्चात् राम की मां ने उससे कहा, "अब हमारे पास कुछ नहीं रहा। अब तू सीधा राजा के पास चला जा और उसकी फ़ौज में भरती हो जा।" राम बड़ा मूर्ख और मुंहफट था। वह केवल बारह वर्ष का था। उसे बात करने का भी ढंग न आता था। इसलिए उसने मां की बात न मानी, उलटा कहने लगा:

"वाह, मैं क्यों राजा के पास जाऊं? राजा क्यों न मेरे पास आए? फ़ौज की ज़रूरत उसे है, मुझे तो नहीं।"

मां ने घबराकर इधर-उधर देखा, बोली, "ज़रा धीरे से बात करो; राजा सुन लेगा तो जान से मार डालेगा।"

और ऐसा ही हुआ । यह बात राजा के कानों तक पहुंच गई, क्योंकि जो राजा अन्याय करता है वह देश-भर में गुप्तचर भी लगाए रखता है । जैसे ही उसने सुना जो राम ने कहा था, वह स्वयं ही राम के पास पहुंच गया । राम ने इससे पहले राजा को कभी नहीं देखा था । इसलिए उसने पूछा :

"तुम कौन हो ?"

"मैं रा-रा-राजा हूं । राजा ने कहा ।

राम ने हंसते हुए कहा, "अरे, तुम हक़ले हो ? क्या सब राजा लोग हक़ले होते हैं ?"

राजा को बहुत क्रोध आया । किन्तु उस समय उसे फ़ौज की ज़रूरत थी । इसलिए क्रोध को पी गया, बोला :

"नहीं, कु-कु-कुछ हक़ले होते हैं, कुछ ग़-ग़-ग़ंजे होते हैं, कुछ ब-ब-बहरे होते हैं । हरएक को-को-कोई न कोई बीमारी अवश्य होती है ।"

"तुम्हें क्या बीमारी है ?" राम ने पूछा ।

"मुझे अन्याय करने और ज़ुल्म ढाने की बीमारी है ।" राजा ने हक़लाते हुए कहा ।

परन्तु मैं कहां तक इस हक़लेपन का वर्णन कर सकता हूं । राजा के हक़लेपन का वर्णन करते-करते कहीं मेरी लेखनी ही न हक़लाने लगे । इसलिए अब सीधा-

सीधा लिखता हूं। आपके सामने जहां कहीं राजा की बातचीत आए, उसे स्वयं हक़लाकर पढ़ लें। बड़ा आनन्द आएगा।

राम ने कहा, "क्या मुझपर भी ज़ुल्म ढाने आए हो ?"

राजा ने कहा, "नहीं, नहीं, अपनी फ़ौज में भरती करने आया हूं।"

"वेतन क्या दोगे ?"

राजा ने कहा, "मैं अपनी फ़ौजों को वेतन नहीं देता; लूट में से चौथा हिस्सा देता हूं।"

"लूट कैसी ?"

"मेरे सिपाही दूसरे देशों में जाते हैं, लूट-मार करते हैं। जो माल लाते हैं उसमें से चौथा हिस्सा उनको दे देता हूं। किन्तु तुमको दसवां हिस्सा दूंगा, क्योंकि तुम अभी बहुत छोटे हो—बारह वर्ष के हो—ज़्यादा लूट मार न कर सकोगे। जल्दी बोलो, तुम्हें मेरी नौकरी मंज़ूर ? मेरे पास अधिक समय नहीं है।"

राम ने सोचकर पूछा, "दूसरे देशों में भी मनुष्य रहते हैं न ?"

"हां, बिल्कुल तुम्हारी तरह के मनुष्य रहते हैं।"

राम ने कहा, "तो फिर मैं तुम्हारी नौकरी नहीं कर

सकता ।"

राजा ने अकड़कर कहा, "जानते हो, तुम अपने राजा से बातें कर रहे हो ?"

राम ने भी अकड़कर उत्तर दिया, "जानते हो, तुम एक मोची के बेटे से बात कर रहे हो ?"

राजा मुस्करा दिया । उसने समझ लिया कि लड़का मूर्ख है । अब उसने दूसरा मार्ग चुना । उसने झोंपड़े के चारों ओर देखा । हरे-भरे बाग़ में सुन्दर रंग-बिरंगे फूल खिले थे । वह बोला :

"तुम्हारे बाग़ में बड़े सुन्दर फूल हैं ।"

राम इस प्रशंसा से बड़ा प्रसन्न हुआ, बोला :

"जितने फूल चाहिए ले जाओ ।"

राजा ने कहा, जिस भूमि में ये फूल खिलते हैं, वह स्वयं न जाने कितनी सुन्दर होगी । मैं इस भूमि ही को क्यों न ले लूं ?" यह कहकर राजा ने ताली बजाई । पचास फ़ौजी एक क्षण में उपस्थित हो गए और उन्होंने राम के बाग़ पर अधिकार कर लिया—सरकारी आज्ञा से ।

दूसरे दिन मां ने राम से कहा, "बेटा, बाग़ भी हाथ से गया, अब तो राजा की पलटन में भरती हो जाओ ।"

राम ने कहा, "मां, यदि मैं भरती हो गया तो मुझे ज़ुल्म करने की बीमारी हो जाएगी । मां, क्या तू चाहती

है कि तेरा बेटा बीमार हो जाए ?"

मां कानों पर हाथ धरकर बोली, "राम, राम ! बेटा, मैं तो दिन-रात तेरे भला-चंगा रहने की प्रार्थना करती रहती हूं।" इतना कह मां झोंपड़े के भीतर चली गई। राम कुएं से डोल खींचकर अपनी गाय को पानी पिलाने लगा। इतने में उसे अपने बाग़ में, जो अब राजा का हो चुका था, बड़े सुन्दर वस्त्र पहने एक लड़की दिखाई दी।

राम ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

लड़की ने कहा, मैं राजकुमारी हूं। मैं अपने बाग़ की सैर करने निकली हूं। झुककर मुझे नमस्कार करो।"

"क्यों करूं ? " राम ने पूछा।

राजकुमारी ने अकड़कर कहा, "मैं राजकुमारी हूं।"

राम ने अकड़कर कहा, "मैं मोची का बेटा हूं।"

राजकुमारी ने कहा, "मेरे कपड़े सोने के तारों के बने हुए हैं।"

राम ने कहा, "मेरे दांत बहुत मज़बूत हैं।"

राजकुमारी बोली, "मैं रोज़ गाजर का हलवा खाती हूं।"

राम बोला, "मैं गाजर उगाता हूं। क्या तुम गाजर उगा सकती हो ?"

सकता।"

राजा ने अकड़कर कहा, "जानते हो, तुम अपने राजा से बातें कर रहे हो ?"

राम ने भी अकड़कर उत्तर दिया, "जानते हो, तुम एक मोची के बेटे से बात कर रहे हो ?"

राजा मुस्करा दिया। उसने समझ लिया कि लड़का मूर्ख है। अब उसने दूसरा मार्ग चुना। उसने झोंपड़े के चारों ओर देखा। हरे-भरे बाग़ में सुन्दर रंग-बिरंगे फूल खिले थे। वह बोला :

"तुम्हारे बाग़ में बड़े सुन्दर फूल हैं।"

राम इस प्रशंसा से बड़ा प्रसन्न हुआ, बोला :

"जितने फूल चाहिए ले जाओ।"

राजा ने कहा, जिस भूमि में ये फूल खिलते हैं, वह स्वयं न जाने कितनी सुन्दर होगी। मैं इस भूमि ही को क्यों न ले लूं ?" यह कहकर राजा ने ताली बजाई। पचास फ़ौजी एक क्षण में उपस्थित हो गए और उन्होंने राम के बाग़ पर अधिकार कर लिया—सरकारी आज्ञा से।

दूसरे दिन मां ने राम से कहा, "बेटा, बाग़ भी हाथ से गया, अब तो राजा की पलटन में भरती हो जाओ।"

राम ने कहा, "मां, यदि मैं भरती हो गया तो मुझे ज़ुल्म करने की बीमारी हो जाएगी। मां, क्या तू चाहती

है कि तेरा वेटा वीमार हो जाए ?"

मां कानों पर हाथ धरकर वोली, "राम, राम ! वेटा, मैं तो दिन-रात तेरे भला-चंगा रहने की प्रार्थना करती रहती हूं ।" इतना कह मां झोंपड़े के भीतर चली गई । राम कुएं से डोल खींचकर अपनी गाय को पानी पिलाने लगा । इतने में उसे अपने वाग़ में, जो अव राजा का हो चुका था, वड़े सुन्दर वस्त्र पहने एक लड़की दिखाई दी ।

राम ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

लड़की ने कहा, मैं राजकुमारी हूं । मैं अपने वाग़ की सैर करने निकली हूं । झुककर मुझे नमस्कार करो ।"

"क्यों करूं ? " राम ने पूछा ।

राजकुमारी ने अकड़कर कहा, "मैं राजकुमारी हूं ।"

राम ने अकड़कर कहा, "मैं मोची का वेटा हूं ।"

राजकुमारी ने कहा, "मेरे कपड़े सोने के तारों के वने हुए हैं ।"

राम ने कहा, "मेरे दांत वहुत मज़वूत हैं ।"

राजकुमारी वोली, "मैं रोज़ गाजर का हलवा खाती हूं ।"

राम वोला, "मैं गाजर उगाता हूं । क्या तुम गाजर उगा सकती हो ?"

राजकुमारी बोली, "नहीं।"

राम ने मुंह बनाकर कहा, "तुम तो केवल हलवा खा सकती हो ! अच्छा, कहो क्या काम है, क्यों आई हो ?"

राजकुमारी बोली, "मुझे प्यास लगी है।"

राम ने कुएं से डोल खींचा और राजकुमारी को पानी पिला दिया।

राजकुमारी ने पानी पीकर कहा, "तुम्हारे कुएं का पानी तो बहुत मीठा है। ऐसा पानी तो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं पिया।"

राम ने प्रसन्न होकर कहा, "रोज़ यहां आ जाया करो तो मैं तुम्हें रोज़ इस कुएं का पानी पिला दिया करूंगा।"

"यदि यह पानी इतना मीठा है तो यह कुआं न जाने कितना मीठा होगा जिससे पानी निकलता है। मैं इस कुएं को ही क्यों न ले लूं।"

यह कहकर राजकुमारी ने ताली बजाई।

पचास सिपाही आ खड़े हुए और उन्होंने कुएं पर अधिकार कर लिया—सरकारी आज्ञा से।

तीसरे दिन फिर मां ने राम से कहा, "बेटा, अब तो फ़ौज में भरती हो जाओ, नहीं तो हम भूखे मर जाएंगे।"

राम ने कहा, "मां, अभी तो गाय बाक़ी है। गांव के बनिये के हाथ इसे बेचकर आता हूं। जो रक़म मिलेगी

उससे कुछ दिन रोटी खा लेंगे। फिर देखेंगे क्या होता है।"

मां रोने लगी। गाय उसे बहुत प्यारी थी। किन्तु भूख का क्या इलाज! राम गाय को खोलकर गांव के बनिये के पास ले गया। बनिये ने पूछा :

"गाय कितना दूध देती है?"

"तीन सेर।"

"केवल तीन सेर?"

"हां, पर होता बड़ा मीठा है, पीकर देख लो।"

"पी चुका हूं, जब तुम्हारा बाप जीता था तब की बात है। गाय बहुत अच्छी है, पर दूध बहुत कम देती है। तीन सेर दूध देती है, इसलिए इस गाय के तुम्हें तीन रुपये मिलेंगे।

"केवल तीन रुपये?" राम ने चकित होकर पूछा।"

"हां।" बनिये ने कहा, "एक सेर दूध का एक रुपया होता है न? इस हिसाब से तीन सेर के तीन रुपये हुए। यदि तुम्हारी गाय चालीस सेर दूध देती तो तुमको चालीस रुपये मिलते। किन्तु मैं क्या करूं, तुम्हारी गाय तीन ही सेर दूध देती है। यह तीन रुपये ले जाओ; हिसाब में कोई गड़बड़ नहीं है।"

राम बेचारे को हिसाब कहां से आता था; बोला :

"चाचा, इससे हमारे घर का काम नहीं चलेगा।"

वनिये ने कहा, तो ये तीन जादू के दाने ले जाओ।"

"ये तीन जादू के दाने कैसे हैं ?

"एक जादूगर को मेरा क़र्ज़ा देना था, वह दे गया। कहता था, जो इन तीन दानों को बोएगा उसके खेतों में दूसरे ही दिन एक जादू का पेड़ उग आएगा, जो आकाश की ओर ऊंचा और ऊंचा होता चला जाएगा—यहां तक कि वह आकाश को छू लेगा। फिर तुम उस पेड़ पर चढ़-कर आकाश तक जा सकते हो। परन्तु शर्त यह कि तुम इन तीनों जादू के दानों को इकट्ठा बोओ।"

राम चकित होकर वनिये की वातें सुनता रहा। अन्त में वनिये ने कहा :

"तो बोलो, क्या लेते हो ? ये तीन रुपये या तीन जादू के दाने !"

राम ने शीघ्रता से जादू के दानों को अपनी मुट्ठी में दबाया और अपने घर की ओर भागा। वनिया भागते हुए राम को देखकर मुस्कराया, बोला :

'खूब उल्लू बनाया गधे को !'

राम भागते हुए जब घर पहुंचा, तो मां ने कहा :

"रुपये लाए हो ?"

राम ने कहा, "मैं तो तीन दाने लाया हूं।"

मां ने सिर पीट लिया। बोली :

"सारे जन्म बच्चे ही रहोगे या कभी अक़ल की बात भी करोगे ? अरे, इन तीन दानों से क्या होगा ? रुपये लाते तो दो-चार दिन रोटी निकलती। कितना पागल है मेरा बेटा।"

राम ने कहा, "ये तीनों दाने जादू के दाने हैं। इन्हें बाहर बगीचे में बोऊंगा। फिर इनमें से एक जादू का पेड़ निकलेगा, जो आकाश तक जाएगा।"

मां ने कहा, "आकाश पर जाकर क्या करोगे ?"

बेटे ने कहा, "तुम्हारे लिए आकाश के तारे तोड़-कर लाऊंगा।"

मां ने सिर हिलाकर कहा, "कैसे-कैसे सपने देखता है मेरा बेटा ! इसको बनिये ने ठग लिया है। जाती हूं, पड़ोसी के घर से कुछ मांगकर लाती हूं।"

जब मां चली गई तो राम ने मुट्ठी खोली और जादू के दानों को बाहर बगीचे की घास पर रखकर, एक जगह भूमि खोदने लगा ताकि ये दाने बो दे। इतने में एक कौआ 'कांएं-कांएं' करता हुआ आया और जादू के दो दाने उठाकर ले गया। राम को बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि बनिये ने कहा था कि जादू के तीनों दाने इकट्ठे बोना, नहीं तो जादू का असर नहीं रहेगा। राम दुःखित होकर

रोने लगा। गाय भी गई, रुपये भी गए और अन्त में जादू के दाने भी गए अब उसके पास केवल जादू का एक दाना रह गया था। अब वह क्या करे ? अन्त में उसने सोचा, जो होगा देखा जाएगा। जादू का पेड़ न सही, पौधा तो उगेगा ही। मटर होगा तो मटर ही खाएंगे। यह सोचकर उसने जादू के दाने को बग़ीचे की नर्म-नर्म, भुरभुरी मिट्टी में बो दिया और झोंपड़ी में आराम से सो गया।

रात को बादल बहुत ज़ोर से गरजा और बिजली भी लहरा-लहराकर कौंधती रही। वर्षा, तूफ़ान और वायु के झक्कड़ों ने रात-भर राम को सोने न दिया। रात को कई बार उठकर उसने बिजली की रोशनी में बग़ीचे की ओर देखा, किन्तु उसे कहीं जादू का पेड़ दिखाई न दिया। जब सवेरा हुआ और तूफान थमा तो राम भागकर बग़ीचे में गया। तूफान ने बग़ीचे के बहुत-से पौधे उखाड़ फेंके थे। बहुत-से पेड़ गिर गए थे और जहां उसने जादू का दाना बोया था, वहां धरती बिजली गिरने से फट गई थी और धरती में एक बहुत गहरा गड्ढा दिखाई दे रहा था। परन्तु जादू का पेड़, जो उगकर आकाश को छूनेवाला था, कहीं न था। राम बहुत निराश हुआ। उसकी मां भी रोने लगी। इतने में राम ने जो ध्यान-

पूर्वक धरती के भीतर झांका, तो देखा कि एक बहुत बड़ा पेड़ उगा तो है परन्तु उलटा उगा है। वह पेड़ आकाश की ओर जाने के बजाय नीचे भूमि के भीतर ही भीतर, जहां तक राम की दृष्टि गई, चला गया था। आगे जाकर यह पेड़ अंधेरे में खो जाता था। मां ने हाथ मलते हुए कहा :

"हमारे भाग ही खोटे हैं कि पेड़ उलटा उगा है। इसे जाना था आकाश की ओर, चला गया धरती के भीतर। यह सब उस बनिये की करतूत है।"

राम धरती के गर्भ में उतर गया। उसने पेड़ के तने के गिर्द अपनी बांहें लपेट लीं और मां से कहने लगा :

"उलटा उगा है या सीधा, मैं तो अब पेड़ पर चढ़कर देखता हूं कि यह कहां जाता है?"

मां मिन्नत करते हुए बोली, "अरे बेटा, धरती के अन्दर मत जाओ। भीतर बहुत अंधेरा है, जाने क्या है, क्या नहीं है। मुझे तो आगे अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता है।"

परन्तु राम ने उसकी एक बात न सुनी। वह शीघ्रता से वृक्ष की टहनियों पर चढ़ता हुआ धरती के भीतर चला गया। कुछ देर तो सूर्य का प्रकाश उसके संग रहा और वह उसकी सहायता से पेड़ की टहनियों पर चढ़ता

रहा। किन्तु आगे जाकर उजाला खत्म हो गया और वह अंधेरे में पेड़ की टहनियों को टटोल-टटोलकर आगे बढ़ने लगा। कुछ दूर आगे जाकर इतना घटाटोप अंधेरा हो गया कि उसे कुछ भी दिखाई न दिया। यहां पर उसके कानों में भांति-भांति की आवाज़ें आने लगीं, "मारो, मारो, जाने न पाए ! विद्रोह कर दो, आग लगा दो, लुटेरों को लूट लो !"

राम बहुत घबरा गया। उसने हाथ से टटोला तो उसे पेड़ के पास एक सीढ़ी मिली। राम ने पेड़ छोड़ दिया और सीढ़ी के सहारे नीचे उतरकर वह एक दर-वाज़े पर पहुंचा। दरवाज़े को खटखटाया। दरवाज़ा खुल गया और उसने देखा कि वह एक बहुत बड़े गुम्बद के नीचे खड़ा है। चारों ओर लोहे की सलाखें हैं और एक आले में एक मोमबत्ती जल रही है। गुम्बद में कोई नहीं है, फिर भी ऐसा लगता है जैसे हज़ारों आवाज़ें एक-दूसरे से लड़ रही हैं।

"कौन है ?" राम गुम्बद के नीचे खड़ा होकर चिल्लाया।

"कौन है ?" राम का स्वर गुम्बद में गूंजा और उत्तर में हज़ारों क़हक़हे सुनाई दिए।

राम की देह के रोंगटे खड़े हो गए। परन्तु वह साहस

छोड़नेवाला नहीं था। उसने चिल्लाकर कहा, "जो हंसता है वह सामने आ जाए।"

उत्तर में फिर ज़ोर से क़हक़हे लगे और नारों की ऊंची-ऊंची आवाज़ें सुनाई दीं, जैसे हज़ारों-लाखों जुलूस एकसाथ चल रहे हों। अभी ये आवाज़ें उसके कान में आ ही रही थीं कि उसके बिल्कुल निकट ही से मानो एक आवाज़ बड़े हौले से सुनाई दी।

उस आवाज़ ने कहा, "जानते हो तुम कहां हो ?"

"नहीं।" राम ने सिर हिलाकर कहा।

"यह आवाज़ों का श्मशान-घाट है।"

"आवाज़ों का ?"

"हां।" नन्ही-मुन्नी हौले से बोलनेवाली आवाज़ ने कहा, "ये सब आवाज़ें उन लेखकों, कवियों और राज-नीतिज्ञों की हैं जिनको हमारे राजा ने या तो मौत के घाट उतार दिया है या जेलों में बंद कर दिया है, क्योंकि वे उसके अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करते थे।"

"फिर ?" राम ने पूछा।

"फिर यह हुआ कि मृत्यु-दण्ड देने के उपरान्त भी और जेल में डाल देने के बाद भी उन लेखकों, कवियों और राजनीतिज्ञों की आवाज़ें नहीं रुकीं और देश में गूंजती रहीं। इसलिए राजा ने सब आवाज़ों को भी पकड़

लिया है और इस गुम्बद में बन्द कर दिया है। अब उसका विचार है कि ये आवाज़ें सदैव के लिए दबा दी गई हैं और अब उसको हमसे कोई भय नहीं है। हा-हा-हा, राजा कितना मूर्ख है !"

"क्यों ?"

"क्योंकि—" नन्ही आवाज़ ने फिर धीरे से राम के कान में कहा, "क्योंकि हम सब आवाज़ों ने मिलकर इस गुम्बद के भीतर एक सुरंग तैयार की है। तुम जानते हो यह सुरंग राजा के महल तक जाती है ? यह गुम्बद—यह आवाज़ों का श्मशान-घाट ठीक राजा के महल के नीचे है। अब हम सब आवाज़ें मिलकर इस सुरंग में एक पलीते की भांति घुस जाएंगी, और तुम्हारा काम यह होगा कि तुम इस मोमबत्ती से उस पलीते को आग लगा दो क्योंकि हम केवल आवाज़ें हैं, हमारे हाथ नहीं हैं। और जब तक मनुष्य के हाथ इस काम में नहीं लगेंगे, पलीता नहीं जलेगा। लो, अब शीघ्रता से तुम यह काम कर डालो और फिर भागकर अपने पेड़ पर चढ़ जाना और वहां से सब तमाशा देखना।"

राम ने आले से मोमबत्ती उठाकर सुरंग में रख दी। गुम्बद की लाखों आवाज़ें गर्जने लगीं और बड़े वेग से सुरंग के अन्दर घुसती चली गईं।

राम भागकर दरवाज़े से बाहर निकल गया और जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया। अभी पेड़ की टहनी पर चढ़ा ही था कि एक ज़ोर के धमाके की आवाज़ आई, जैसे आवाज़ों का गुम्बद फट गया हो। और फिर उसने देखा कि दूर तक और बहुत दूर तक हज़ारों मोमबत्तियां जल रही हैं, और बहुत दूर तक उसके मार्ग में प्रकाश फैल गया है।

२

राम प्रसन्नचित्त पेड़ के ऊपर चढ़ता गया। तीन दिन और तीन रात पेड़ के ऊपर चढ़ता रहा। मार्ग में यदि उसे भूख लगी तो पेड़ से मटर के दाने तोड़कर खाता, जिनका स्वाद अंगूर की भांति मीठा था और अंगूर की तरह जिनमें रस भी था—जादू के थे न, इसीलिए। यदि दूसरे मटर होते तो उसके पेट में अब तक दर्द होने लगता।

तीन दिन, तीन रात ऊपर चढ़ने के पश्चात् फिर अन्धेरा छा गया। मोमबत्तियां खत्म हो गईं। अब फिर वह अंधेरे में ऊपर चढ़ता गया, किन्तु अंधेरा बढ़ता गया। उसने सोचा, वह क्या करे। आगे बढ़े या पीछे लौट जाए। अभी वह सोच ही रहा था कि किसीने एक झटके से उसे वृक्ष से उतार लिया। उसे लगा जैसे कोई उसे अपनी मुट्ठी में दबाए हुए वायु में उड़ाए लिए जा रहा हो। राम ने उसके पंजे से निकलने की बहुत चेष्टा की परन्तु सफल न हुआ। थोड़ी देर उसी प्रकार वायु में उड़ने के पश्चात्

किसीने उसे एक बहुत बड़े द्वार पर उतार दिया। यह द्वार इतना बड़ा था कि आदमी तो क्या दैत्य भी उसके नीचे से सुगमता से निकल सकता था। इसलिए राम बड़ी आसानी से द्वार के अन्दर चला गया। द्वार पर लिखा था :

'काले दानव का शहर'

अभी वह इतना ही पढ़ पाया था कि किसीने उसे अपनी मुट्ठी में फिर उठा लिया और राम ने देखा कि एक बहुत बड़ा काला हाथ है, एक बहुत बड़ी काली छाती है, एक बहुत बड़ा काला चेहरा है, जिसपर बड़ी-बड़ी चमकीली और काली आंखें हैं। ये काली आंखें उसे बहुत देर तक घूरती रहीं। अन्त में उन बड़े-बड़े काले होंठों में से एक गर्जीली आवाज़ निकली और उसने पूछा :

"तू कौन है ?"

राम ने पूछा, "तू कौन है ?"

"मैं काला दानव हूं।"

राम ने कहा, "मैं एक मोची का लड़का हूं। पृथ्वी से आया हूं।"

"किन्तु तेरा रंग कैसा है; न काला है न सफ़ेद है ?"

राम ने कहा, "हमारे उधर इसे गेहुआं रंग कहते हैं।"

"खेद है," काले दानव ने कहा, "तू मेरे किसी काम का नहीं। मैं तुझे स्वतंत्र करता हूं। जिधर से आया है,

उधर चला जा।"

राम की समझ में कुछ न आया कि दानव क्या कह रहा है। किन्तु वह अपने-आप बच जाने पर बड़ा प्रसन्न था। इसलिए जल्दी-जल्दी वहां से भागा। मार्ग में राम ने देखा कि वह एक बहुत बड़े शहर में से गुज़र रहा है, जहां के सब धनवान लोग काले हैं और निर्धन लोग सफ़ेद हैं। काले लोग सफ़ेद लोगों से ग़ुलामों की भांति काम लेते हैं और उन्हें बड़ी गन्दी झोंपड़ियों में रखते हैं। उन्हें हथकड़ियां पहनाते हैं, उन्हें कोड़े लगते हैं, उनसे मज़दूरी करवाते हैं—सब मेहनत का काम सफ़ेद लोग करते हैं और काले मनुष्य उनके परिश्रम पर भोग-विलास का जीवन व्यतीत करते हैं। राम ने चार दिन और चार रातें इस शहर में व्यतीत कीं और प्रत्येक स्थान पर यही दृश्य देखा। उसे बड़ा अचम्भा हुआ। इसलिए जाने से पहले वह फिर काले दानव के पास गया और उससे पूछा :

"काले दानव ! यहां यह अनोखी बात क्यों है ? यहां के सफ़ेद लोग गुलाम हैं और काले लोग उनपर राज्य करते हैं।"

काला दानव हंसा, बोला :

सुना है, तुम्हारी धरती पर सफ़ेद लोग काले लोगों पर राज्य करते हैं। मुझे यह जानकर बहुत क्रोध आया,

इसलिए मैंने अपने राज्य में सफ़ेद लोगों को अपना बन्दी बनाया है और काले लोगों को उनपर राज्य करने देता हूं। मैंने तुम्हारी धरती से सफ़ेद लोग पकड़वा-पकड़वाकर यहां मंगवाए हैं और उनको हथकड़ियों में जकड़ रखा है।"

"यह बहुत बुरी बात है।" राम ने कहा।

कैसे ?" दानव ने पूछा।

राम ने कहा, "एक सफ़ेद आदमी को मेरे सामने लाओ।"

एक सफ़ेद बन्दी राम के सामने लाया गया।

राम ने कहा, "इसकी अंगुली काटो।"

"हा···हा···हा, बड़ी प्रसन्नता से!" दानव ने सफ़ेद आदमी की अंगुली काट दी। उसमें से लाल-लाल रक्त बहने लगा। राम ने काले दानव से कहा, "अब अपनी अंगुली काटो।"

काले दानव ने अपनी अंगुली काटी। उसमें से भी लाल-लाल रक्त बहने लगा।

राम ने कहा, देखो, तुम्हारी रंगत काली है, परन्तु रक्त लाल है। इसकी रंगत सफ़ेद है किन्तु रक्त इसका भी लाल है। चमड़ी की रंगत से कोई भेद नहीं पड़ता।"

"फिर क्या होना चाहिए ?" दानव सोच में पड़ गया।

उधर चला जा।"

राम की समझ में कुछ न आया कि दानव क्या कह रहा है। किन्तु वह अपने-आप बच जाने पर बड़ा प्रसन्न था। इसलिए जल्दी-जल्दी वहां से भागा। मार्ग में राम ने देखा कि वह एक बहुत बड़े शहर में से गुज़र रहा है, जहां के सब धनवान लोग काले हैं और निर्धन लोग सफ़ेद हैं। काले लोग सफ़ेद लोगों से ग़ुलामों की भांति काम लेते हैं और उन्हें बड़ी गन्दी झोंपड़ियों में रखते हैं। उन्हें हथकड़ियां पहनाते हैं, उन्हें कोड़े लगते हैं, उनसे मज़दूरी करवाते हैं—सब मेहनत का काम सफ़ेद लोग करते हैं और काले मनुष्य उनके परिश्रम पर भोग-विलास का जीवन व्यतीत करते हैं। राम ने चार दिन और चार रातें इस शहर में व्यतीत कीं और प्रत्येक स्थान पर यही दृश्य देखा। उसे बड़ा अचम्भा हुआ। इसलिए जाने से पहले वह फिर काले दानव के पास गया और उससे पूछा :

"काले दानव ! यहां यह अनोखी बात क्यों है ? यहां के सफ़ेद लोग गुलाम हैं और काले लोग उनपर राज्य करते हैं।"

काला दानव हंसा, बोला :

सुना है, तुम्हारी धरती पर सफ़ेद लोग काले लोगों पर राज्य करते हैं। मुझे यह जानकर बहुत क्रोध आया,

इसलिए मैंने अपने राज्य में सफ़ेद लोगों को अपना बन्दी बनाया है और काले लोगों को उनपर राज्य करने देता हूं। मैंने तुम्हारी धरती से सफ़ेद लोग पकड़वा-पकड़वाकर यहां मंगवाए हैं और उनको हथकड़ियों में जकड़ रखा है।"

"यह बहुत बुरी बात है।" राम ने कहा।

कैसे ?" दानव ने पूछा।

राम ने कहा, "एक सफ़ेद आदमी को मेरे सामने लाओ।"

एक सफ़ेद बन्दी राम के सामने लाया गया।

राम ने कहा, "इसकी अंगुली काटो।"

"हा···हा···हा, बड़ी प्रसन्नता से !" दानव ने सफ़ेद आदमी की अंगुली काट दी। उसमें से लाल-लाल रक्त बहने लगा। राम ने काले दानव से कहा, "अब अपनी अंगुली काटो।"

काले दानव ने अपनी अंगुली काटी। उसमें से भी लाल-लाल रक्त बहने लगा।

राम ने कहा, देखो, तुम्हारी रंगत काली है, परन्तु रक्त लाल है। इसकी रंगत सफ़ेद है किन्तु रक्त इसका भी लाल है। चमड़ी की रंगत से कोई भेद नहीं पड़ता।"

"फिर क्या होना चाहिए ?" दानव सोच में पड़ गया।

राम ने कहा, "होना यह चाहिए कि न काला सफ़ेद पर राज्य करे और न सफ़ेद काले पर। दोनों मिल-जुलकर रहें और एक-दूसरे की लाभ-हानि को अपनी लाभ-हानि समझें। मेरी तो वुद्धि यही कहती है।"

दानव ने सिर हिलाकर कहा, "तुम्हारी वुद्धि ठीक कहती है। आज से मैं अपने सफ़ेद वन्दियों को आज़ाद करता हूं। आज से मेरे शहर में काले और सफ़ेद मिल-जुलकर रहेंगे और इकट्ठे परिश्रम करेंगे। तुम भी यहीं रह जाओ, मैं तुम्हें अपने शहर का सरदार बनाऊंगा।"

राम ने कहा, "तुमको अभी मुझे उस पेड़ पर चढ़ाना है, जहां से तुमने मुझे उतारा था। यदि मुझपर दया करना चाहते हो तो मुझे फिर उस पेड़ पर चढ़ा दो।"

दानव ने राम की वहुत मिन्नत की, पर राम नहीं माना। अन्त में काले दानव ने उसे अपने हाथ पर उठा लिया और वापस पेड़ की एक डाल पर रख दिया।

राम पेड़ पर चढ़ने लगा। अव उसने देखा कि वहुत दूर तक अंधेरा छा गया है और वहुत दूर तक धरती के गर्भ में वृक्ष की टहनियों पर लाखों जुगनू चमकते चले गए हैं।

इन जुगनुओं की सहायता से राम बहुत दूर तक पेड़ पर चढ़ता गया। किन्तु एक स्थान पर आकर जुगनुओं का प्रकाश खत्म हो गया, और अब जो अंधेरा आरम्भ हुआ तो राम घबरा ही गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह सात दिन और सात रातों से इसी वृक्ष पर चढ़ रहा है, परन्तु वृक्ष खत्म होने में नहीं आता। राम घबराकर वृक्ष से वापस लौटने ही वाला था कि उसे इस घटाटोप अन्धेरे में दो आंखें चमकती हुई दिखाई दीं। राम उन आंखों के पास गया तो देखा कि पेड़ की एक बड़ी डाल पर एक अजीब तरह का जानवर बैठा है, जिसका मुख उल्लू का है और बाक़ी शरीर मनुष्य का और उसकी आंखों में से एक भयंकर चमक निकल रही है।

राम ने चकित होकर उससे पूछा, "तुम मनुष्य हो कि उल्लू ?"

"मैं हिन्दुस्तानी फ़िल्मों का डायरेक्टर हूं।" इस अद्‌भुत जन्तु ने अपनी बड़ी आंखें झपकाकर कहा, "मैं दिन को सोता हूं और रात को जागता हूं।"

राम के गांव में एक बार चलता-फिरता सिनेमा आया था। इसलिए उसे इस अद्‌भुत मनुष्य की बातें समझने में अधिक देर न लगी।

राम ने कहा, "पर तुम यहां अकेले इस पेड़ पर

बैठे क्या कर रहे हो ?"

"मैं अकेला नहीं हूं।" फ़िल्म डायरेक्टर ने उत्तर दिया, "ज़रा इस डाल पर आगे बढ़कर देखो, मेरे दूसरे भाई-बन्द भी जादू के ज़ोर से उल्लू बने हुए यहीं बैठे हैं—घुप अन्धेरे में।"

और वास्तव में राम जब आगे बढ़ा तो उसे डाल पर ये सैकड़ों उल्लू-समान जानवर दिखाई दिए, जो चुपचाप डाल पर टांगें लटकाए, सिर झुकाए ऊंघ रहे थे।

राम को उन बेचारों पर बड़ी दया आई और बोला, "तुम्हारी ऐसी दुर्दशा किसने कर दी ?"

वही पहला फ़िल्म डायरेक्टर बोला, "दस वर्ष के एक बच्चे ने जादू के ज़ोर से।"

"तुम्हारा अपराध क्या था ?"

"वह बच्चा कहता था कि हम लोगों ने पिछले पच्चीस वर्षों में एक भी ऐसी फ़िल्म नहीं बनाई जो बच्चों के लिए हो। इसलिए उसने हमें यह सज़ा दी।"

"वह बच्चा कहां है ?"

फ़िल्म डायरेक्टर ने कहा, "इस डाल पर सीधे लगभग तीन सौ गज़ तक चले जाओ। आगे तुम्हें प्रकाश दिखाई देगा और वहां एक बहुत बड़ा कैमरा भी दिखाई

देगा। वह कैमरा इतना बड़ा है कि उसके शटर में से एक आदमी निकल सकता है। तुम वहां जाकर कैमरे का बटन दबाकर तीन बार कहना—'कट, कट, कट !' कैमरे का शटर स्वयं ही खुल जाएगा और तुम उसके भीतर चले जाना। आगे जाकर वह बच्चा स्वयं ही मिल जाएगा।"

राम ने कहा, "पर उस बच्चे की कोई निशानी तो बताओ ?"

डायरेक्टर ने कहा, "उस बच्चे के दोनों हाथों में केवल एक-एक अंगूठा है, बाकी सब अंगुलियां कटी हुई हैं।"

"ऐसा क्यों है ?" राम ने पूछा।

फ़िल्म डायरेक्टर ने उत्तर दिया, "हमें क्या मालूम ? हम फ़िल्म डायरेक्टर हैं, ज्योतिषी तो नहीं हैं।"

राम डाल पर आगे बढ़ गया। डाल की अन्तिम टहनी का अन्तिम पत्ता एक बहुत बड़े कैमरे को छू रहा था। यहां पर हल्का-हल्का प्रकाश था। राम ने कैमरे का बटन दबाया। कैमरे का शीशा दरवाज़े की भांति खुलकर अलग हो गया। थोड़ी देर तक वह अन्धेरे में चलता रहा, फिर एकाएक कहीं पर एक खटका-सा हुआ और चारों ओर उजाला ही उजाला हो गया। उसने देखा, वह एक बहुत बड़े दरवाज़े पर खड़ा है।

३

जहां तक दृष्टि जाती थी, राम को ऊंची-ऊची चिमनियों से धुआं निकलता दिखाई दे रहा था। वड़ी-बड़ी ऊंची इमारतें थीं। शहर वड़ा सुन्दर और साफ़-सुथरा था। राम उसे देखकर वड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोचा, चलो कुछ दिन इसी शहर की सैर करेंगे। यह सोचकर उसने दरवाज़े के भीतर पांव रखा। एकाएक उसके कानों में एक आवाज़ आई—"जेब संभालकर चलिए, जेबकतरों से सावधान रहिए।"

राम ने इधर-उधर देखा, किन्तु उसे कहीं कोई मनुष्य दिखाई न दिया जो यह आवाज़ दे सकता। राम दरवाज़े से निकलकर आगे सड़क पर चला गया। एकाएक फिर एक आवाज़ आई, "फुटपाथ पर चलिए सरकार !"

राम घबराकर फुटपाथ पर चलने लगा। सड़क पर मोटरें चलने लगीं—वड़ी सुन्दर मोटरें थीं। आगे चौक पर जाकर ये सब मोटरें रुक गईं। एक लाल रंग की

बत्ती के सामने ये मोटरें रुकी खड़ी थीं।

राम ने सबसे आगे की मोटर में झांककर देखा तो अचम्भे से उसका मुंह खुला का खुला रह गया, क्योंकि मोटर में कोई मनुष्य नहीं था। लेकिन ज्योंही राम ने मोटर में झांका, मोटर के भीतर से आवाज़ आई, "आइए, पधारिए !" फिर मोटर का दरवाज़ा अपने-आप ही खुल गया।

राम गद्दों की सीट पर डटकर बैठ गया। मोटर से फिर आवाज़ आई, "कहां जाइएगा श्रीमान ?"

राम ने कहा, "बाज़ार ले चलो।"

इतने में हरी बत्ती जली, मोटर स्वयं ही चलने लगी। अब मोटर बाज़ारों में से गुज़र रही थी। बाज़ार में प्रत्येक दुकान खुली पड़ी थी और हज़ारों वस्तुएं दुकानों पर दिखाई दे रही थीं। सुन्दर वस्तु, भांति-भांति के फल, केक-बिस्कुट और रंग-रंग की महकती हुई मिठाइयां। प्रत्येक वस्तु सजी हुई थी, किन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि सारे बाज़ार में कहीं कोई मनुष्य दिखाई न देता था। एक पैट्रोल-पम्प के निकट जाकर मोटर स्वयं ही रुक गई।

आवाज़ आई, "क्षमा कीजिए, पैट्रोल खत्म हो गया है। बस ज़रा थोड़ा पैट्रोल ले लूं, आप तब तक सामने

की दुकान की सैर कर आइए।"

दुकान देखने से पहले राम पैट्रोल-पम्प देखने लगा। उसने देखा, पैट्रोल का नल स्वयं उठा और मोटर में पैट्रोल डालने लगा, और जब पैट्रोल डाल चुका तो स्वयं ही अपनी जगह पर आकर अटक गया।

राम घूमकर दुकान की ओर मुड़ा, जहां बड़ी अच्छी-अच्छी मिठाइयां थालियों में सजी हुई रखी थीं। किन्तु न कोई दुकानदार था, न कोई गाहक।

राम ने दो गुलाबजामुन उठाए, दो रसगुल्ले खाए, एक इमरती खाई और रूमाल से मुंह साफ़ किया और वापस चलने को था कि किसीने कहा, "महोदय, आठ आने तो देते जाइए।"

राम चकित होकर पीछे मुड़ा, किन्तु दुकान पर कोई मनुष्य नहीं था। राम को बड़ा अचम्भा हुआ किन्तु उसने अपने अचम्भे को दबाते हुए कहा, "मेरी जेब में इस समय तो एक पैसा भी नहीं है।"

आवाज़ आई, "कोई बात नहीं, आपके हिसाब में लिख दिया जाएगा।"

इतने में एक खटका हुआ और राम ने देखा कि दुकान पर जहां दुकानदार बैठता है, वहां एक मशीन रखी है। राम के उत्तर देते ही इस मशीन में एक बत्ती

जली, 'खट-खट' की आवाज़ दो बार आई। मशीन से एक कमानीदार लोहे का हाथ निकला। इस हाथ में एक चीनी की तश्तरी रखी थी, और उस तश्तरी में काग़ज़ के टुकड़े पर एक बिल छपा था, जिसपर आठ आने की रक़म लिखी हुई थी।

आवाज़ आई, "इसे अपनी जेब में रख लीजिए, शहर से वापस लौटते समय आपसे हिसाब कर लिया जाएगा।"

राम ने चकित होकर पर्चा लिया और मोटर में बैठ गया।

मोटर ने पूछा, "कहां चलूं?"

राम ने कहा, "थक गया हूं, किसी ऐसी जगह ले चलो जहां आराम कर सकूं।"

मोटर एक शानदार होटल के सामने रुक गई। स्वयं ही मोटर का द्वार खुल गया। स्वयं ही होटल का भी द्वार खुल गया। राम भीतर चला गया। अब थोड़ी-थोड़ी बात उसकी समझ में आ रही थी। उसने इधर-उधर देखा। एक ओर एक बड़ी-सी मशीन पड़ी थी, जो उसके आते ही रंग-रंग की रोशनियों से चमकने लगी। राम इस मशीन के समीप चला गया और बोला, "मुझे एक कमरा चाहिए।"

मशीन ने कहा, "तुम्हारा नाम ?"

"राम ।"

"कहां से आए हो ?"

"राजा की नगरी से ।"

"कैसे आए हो ?"

"जादू के पेड़ पर चढ़कर ।"

"यहां कितने दिन रहोगे ?"

"जितने दिन किसी मनुष्य को सूरत दिखाई नहीं देती ।"

मशीन हंसी, राम भी हंसा ।

मशीन ने कहा, "यह सामने का कमरा है । इसको लिफ्ट कहते हैं । इसके अंदर जाकर खड़े हो जाओ । यह लिफ्ट तुमको तुम्हारे कमरे के सामने पहुंचा देगी ।"

राम ने ऐसा ही किया । लिफ्ट ने उसको एक बहुत बड़े कमरे के सामने उतार दिया । राम जब द्वार के निकट पहुंचा तो द्वार आप ही आप खुल गया ।

भीतर जाकर क्या देखता है कि एक कमरा है, बहुत बड़ा । वह सारा भांति-भांति की मशीनों से भरा पड़ा है । एक कोने में एक कुर्सी रखी है और उसपर एक छोटा-सा लड़का बैठा है । उसकी आंखों में अद्‌भुत

चमक और आकर्षण है। उस लड़के के हाथों पर अंगुलियां नहीं हैं, केवल अंगूठे बाकी रह गए हैं।

राम ने कहा, "नमस्ते !"

लड़के ने कहा, "हैलो !"

राम ने पूछा, "तुम्हारी अंगुलियां कहां हैं ?"

लड़के ने कहा, "अंगुलियों की आवश्यकता ही क्या है ? यहां सब काम बटन दबाने से हो जाता है, और इसके लिए अंगूठा ही काफी है !"

राम ने पूछा, "तुम्हारे इस शहर के लोग कहां रहते हैं ? मैंने बाज़ारों में, सड़कों पर सब जगह पर घूमकर देखा है, तुम्हारे अतिरिक्त किसी मनुष्य की सूरत दिखाई नहीं दी। इस शहर के लोग कहां रहते हैं ?"

लड़के ने कहा, "इस शहर में मनुष्य नहीं बसते, केवल मशीनें और बटन रह गए हैं।"

"मनुष्य कहां गए ?"

लड़के ने आह भरकर कहा, "वे सब मर गए या मार दिए गए। अब इस शहर में मेरे सिवाय कोई मनुष्य नहीं रहता।"

"तुम्हारे माता-पिता कहां हैं ?" राम ने पूछा।

"वे भी मर गए। मेरे पिताजी इस शहर के मालिक थे। उन्हें रुपया कमाने का बड़ा शौक़ था। इसलिए

उन्होंने इस शहर में जगह-जगह पर कारखाने खोले थे, जिनमें हज़ारों मज़दूर काम करते थे। मेरे पिताजी को नई-नई मशीनें मंगवाने का बड़ा चाव था। जब कभी कोई नई मशीन आती वह एक के बजाय एक सौ मज़दूरों का काम करती। मेरे पिताजी कारखाने में वह मशीन लगा देते। उसपर काम करने के लिए एक मज़दूर रख लेते और बाकी निन्यानवे मज़दूरों को निकाल देते। इस प्रकार ज्यों-ज्यों मशीनें बढ़ती गईं, लोग बेकार होते गए और भूख से मरते गए।"

"क्यों, ऐसा क्यों किया तुम्हारे पिताजी ने? जब एक मशीन सौ मज़दूरों का काम करती है तो तुम्हारे पिताजी सौ मज़दूरों को ही काम पर रखते, लेकिन हर-एक से थोड़ा-थोड़ा काम लेते, अर्थात् बारह घंटे के बजाय बारह मिनट काम लेते।"

"किन्तु पिताजी ऐसा नहीं सोचते थे। मेरे मज़दूर बार घंटे काम करते हैं। उनको बारह घंटे काम करना चाहिए, चाहे मज़दूर एक रहे या सौ। वे यही कहा करते थे।"

"परन्तु यह क्यों? मशीन मनुष्य के लिए है, मनुष्य तो मशीन के लिए नहीं है। अच्छी और शीघ्र काम करनेवाली मशीन का लाभ मनुष्य को मिलना चाहिए,

ताकि उसकी मेहनत कम हो—समझ में तो यही आता है।"

"किन्तु मेरे पिताजी की समझ में नहीं आता था। वे मज़दूर कम कर देने के लिए तैयार थे, परन्तु मज़दूर के काम का समय कम कर देने के लिए तैयार नहीं थे। कहते थे—इससे मज़दूर बिगड़ जाएंगे। मशीन बिगड़ जाती है तो उसका पुर्जा नया डाल देने से उसे ठीक कर लिया जाता है किन्तु जब मज़दूर बिगड़ जाता है तो उसे कौन सुधारे ?"

"अजीब उलटी खोपड़ी के मालिक थे तुम्हारे पिताजी !"

"सुनो तो !" लड़के ने कहा, "बात यहां तक जा पहुंची कि जब सब काम मशीनें करने लगीं और सब मनुष्य बेकार और गरीब हो गए तो मरने लगे। किन्तु पिताजी बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि उनका मुनाफ़ा बढ़ रहा था। फिर एक दिन वह आया कि अकाल से बाज़ार के बाज़ार खाली हो गए। बाज़ारों में सब सामान था, किन्तु लोगों के पास खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। इसलिए थोड़े दिनों में लोग हज़ारों की संख्या में भूखों मरते गए। बहुत-से लोग विद्रोह में मारे गए; जो बचे वे शहर छोड़कर भाग गए। एक दिन इस

शहर में केवल तीन प्राणी रह गए—मैं, मेरे पिताजी और माताजी। फिर मेरे पिताजी ने आत्महत्या कर ली क्योंकि शहर में अब कोई मनुष्य नहीं; इसलिए अब उनका मुनाफ़ा भी न था। तुम जानते हो मुनाफ़ा मशीनों से नहीं होता, मनुष्यों से होता है। अब कोई मनुष्य ही यहां नहीं रहता था, इसलिए पिताजी किससे मुनाफ़ा कमाते। अन्त में बेचारे मेरे पिताजी इस दुःख को न सह सके और आत्महत्या कर मर गए। तीन वर्ष हुए मेरी माताजी भी चल बसीं। तब से मैं इस शहर में अकेला हूं और मशीनों के बटन दबाता रहता हूं या अवकाश के समय सिनेमा देखता हूं। किन्तु कोई भी फ़िल्म ऐसी नहीं मिलती जो बच्चों के लिए हो। इसलिए मैंने तंग आकर सब फ़िल्म डायरेक्टरों को उल्लू बनाकर पेड़ पर रख दिया है। तुमने मार्ग में उनको देखा होगा।"

"हां, पर तुमने यह नहीं बताया कि तुम्हारी अंगुलियां किसने काट डालीं!"

"मेरे पिताजी ने, क्योंकि मुझे काम करने का शौक़ था और वे कहते थे काम करने की क्या आवश्यकता है। काम मशीन को करने दो, मनुष्य को केवल बटन दबाना चाहिए; इसलिए उन्होंने मेरी अंगुलियां काट

डालीं।" लड़के ने एक ठण्डी आह भरते हुए अपने हाथों की ओर देखा।

राम ने कहा, "तुम मेरे साथ चलो; इस शहर को छोड़ दो। यह शहर नहीं, बेकार और भूखों का श्मशान-घाट है।"

लड़के ने कहा, "तुम्हारे साथ जाकर क्या करूंगा?"

राम ने कहा, "वृक्ष पर चढ़ो, नया संसार देखोगे, भांति-भांति के लोगों से मिलोगे।"

लड़के ने कहा, "किन्तु मैं वृक्ष पर कैसे चढ़ूंगा, मैं तो केवल बटन दबा सकता हूं।"

राम ने कहा, "वह मैं सब सिखा दूंगा, तुम चलो तो मेरे साथ। क्या नाम है तुम्हारा?"

सिफ़र-सिफ़र एक (००१)"

"यह भी कोई नाम है? यह तो टेलीफ़ोन का नम्बर मालूम होता है।"

लड़के ने कहा, "हमारे शहर में मनुष्यों के नाम नहीं होते, नम्बर होते हैं। मेरा नम्बर 'सिफ़र-सिफ़र एक' है।"

राम ने कहा, "मैं आज से तुम्हें यामीन कहूंगा।"

"यामीन!" 'सिफ़र-सिफ़र एक' ने दुहराते हुए कहा, "यामीन अच्छा नाम मालूम होता है। घण्टी की

तरह बजता है।"

जब यामीन राम के संग चलने लगा तो उसने शहर पर अन्तिम दृष्टि डाली और बड़े दुःख से कहने लगा, "किन्तु यह इतना बड़ा शहर, ये सुन्दर सड़कें, कारखाने, कारें, दुकानें, घर, गली, कूचे, बाज़ार, दौलत के ढेर—इन सबका क्या होगा ?"

"मनुष्य के बिना इनका कोई मूल्य नहीं। इन समस्त वस्तुओं का मूल्य मनुष्य से होता है। वस्त्र मनुष्यों के पहनने के लिए होते हैं, मिठाइयां बच्चों के खाने के लिए होती हैं, सड़कें पथिकों के चलने के लिए होती हैं, किन्तु कारखानों में मज़दूर काम न करते हों, घरों में स्त्रियों की हंसी न सुनाई देती हो और गली-कूचों में बच्चों का कोलाहल न सुनाई देता हो तो……………
……………क्या तुमने कभी किसी गली-कूचे में शोर मचाया है ?"

"शोर मचाना किसे कहते हैं ?" यामीन ने बड़ी उदास दृष्टि से राम की ओर देखकर पूछा।

राम ने बात को अधूरा छोड़ते हुए यामीन को बाज़ू से घसीटते हुए कहा, "शीघ्र यहां से भाग चलो, नहीं तो यह चुप्पी जो शहर में छाई हुई है, तुम्हें खा डालेगी। अभी दस वर्ष की उम्र में तुम्हारे मुख पर झुर्रियां

दिखाई दे रही हैं।"

राम यामीन को बाज़ू से पकड़कर कैमरे की आंख से बाहर निकल आया। बाहर वृक्ष की टहनी पर फ़िल्म डायरेक्टर बैठे बड़े ज़ोर-शोर से एक-दूसरे से वाद-विवाद कर रहे थे। एक कह रहा था :

"मैं तुमसे बड़ा डायरेक्टर हूं।"

दूसरा कह रहा था, "नहीं, मैं तुमसे बड़ा हूं।"

"इसका प्रमाण ?" दूसरे डायरेक्टर ने पूछा।

इसका प्रमाण यह है कि मैं इस पेड़ की टहनी पर उलटा लटक सकता हूं।"

यह कहकर उसने अपने पंख फड़फड़ाए और पेड़ की टहनी से चमगादड़ की भांति उलटा लटक गया।

पहले डायरेक्टर ने कहा, "मैं तुम्हारी फ़िल्में देखकर इस नतीजे पर पहुंच गया था कि वे फ़िल्में भी तुमने कैमरे से उलटा लटककर ही बनाई हैं।"

राम ने यामीन से कहा, "इन लोगों के वाद-विवाद में पड़ना हम बच्चों का काम नहीं है; आओ हम आगे चलें।"

वृक्ष की टहनी पर धीरे-धीरे चलते हुए वे फिर पेड़ के तने पर आ पहुंचे। यामीन ने यह बड़ी बुद्धिमानी की थी कि अपने साथ शहर से बिजली की टार्च ले आया

था। क्योंकि यहां अभी तक घना अंधेरा था। अतः बिजली की टार्च के प्रकाश में दोनों मित्र पेड़ के ऊपर चढ़ने लगे।

आगे-आगे यामीन, पीछे पीछे राम, जिससे यदि यामीन वृक्ष से गिरने लगे तो पीछे राम उसे संभाल ले।

४

यामीन केवल अंगूठों की सहायता से वृक्ष पर चढ़ने में काफ़ी कठिनाई का अनुभव कर रहा था। थोड़ी दूर अन्धेरे में चढ़ने के पश्चात् धीमा-धीमा प्रकाश दिखाई देने लगा—ऐसा प्रकाश जैसा चांदनी रात में होता है। आगे जाकर उन्होंने देखा कि वृक्ष की एक ऊंची डाल पर एक पिंजरा लटका हुआ है और उसमें चांद बन्द है।

इस पिंजरे के पास एक अजीब शक्ल का दानव बैठा था, जिसकी रंगत चांदी के समान थी। उस दानव की आंखें चांदी की थीं, बांहें चांदी की और जिह्वा चांदी की थीं। जब बातें करता था तो उसके मुंह से वाक्यों के बजाय रुपये झड़ते थे। रुपये खनखनाते हुए, अजीब-सी आवाज़ करते हुए, नीचे एक बहुत बड़ी चांदी की तश्तरी में गिरते थे। इस तश्तरी के बीच में एक बड़ा-सा छेद था जिसमें नली लगी हुई थी। उसका एक सिरा तश्तरी में और दूसरा दानव की नाभि में लगा हुआ था। अतः रुपये दानव के होंठों से गिरते, तश्तरी में खनखनाते और

छेद में से होकर दानव की नाभि के अन्दर चले जाते। राम ने जब उन गिरते हुए रुपयों को हाथ से पकड़ना चाहा तो उसने 'सी' करके शीघ्रता से उन रुपयों को छोड़ दिया, क्योंकि रुपये आग की भांति तप रहे थे।

राम अपने हाथ की ओर देखने लगा। उसका हाथ जल गया था। हथेली पर जगह-जगह छाले पड़ गए थे।

यामीन ने पूछा, "अब तुम वृक्ष पर कैसे चढ़ोगे ?"

दानव ने हंसकर कहा, "आगे जाने की क्या आवश्यकता है, हमारे संसार में रहो।"

यामीन ने पूछा, "तुम्हारा संसार कैसा है ?"

दानव ने अपने निकट ही रखे हुए एक बहुत बड़े ढोल को उठाकर अपने गले में लटका लिया। यह ढोल बड़ा अद्भुत था। यह ढोल हड्डियों का बना हुआ था, अर्थात् जहां ढोल की लकड़ी होती है वहां हड्डियां थीं, और जहां ढोल की खाल होती है, वहां चमड़े की खाल मढ़ी हुई थी। एक ओर की खाल काली थी और एक ओर की सफ़ेद।

राम ने पूछा, "ऐ बड़े दानव, यदि प्राणदान दो तो कुछ निवेदन करूं।"

चांदी के दानव ने बड़े घमंड से कहा, "बोल, क्या कहता है, मैंने तुझे प्राणदान दे दिया। बोल, क्या बकता

है !"

राम ने कहा, "ये आपके ढोल में लकड़ी के बजाय हड्डियां क्यों लगी हैं ?"

दानव ने कहा, "लकड़ी बहुत महंगी होती है, इसलिए मैंने अपने ढोल को मनुष्य की हड्डियों से तैयार किया है; और इसपर चमड़ा भी मनुष्य का मढ़ा है, क्योंकि दूसरे जानवरों का चमड़ा बहुत महंगा आता है।"

यामीन ने पूछा, "एक खाल काली है, दूसरी सफ़ेद है। इसका क्या अर्थ है ?"

दानव ने कहा, "एक काले मनुष्य का चमड़ा है, दूसरा सफ़ेद मनुष्य का चमड़ा है, और मैं दोनों को एक ही छड़ी से पीटता हूं।" फिर चांदी के दानव ने दोनों खालों को बजाते हुए कहा, "डम-डम-डम, आओ जादू का संसार देखो। केवल चार आने, डम-डम-डम !"

राम ने कहा, "पर हमारे पास तो एक पैसा भी नहीं है।"

यामीन ने कहा, "नहीं, मेरी जेब में आठ आने हैं।"

यामीन ने दानव को आठ आने दिए और जादू के संसार में प्रवेश किया। भीतर जाकर राम और यामीन ने देखा एक बहुत बड़ा मरुस्थल है; धरती बंजर है, स्थान-स्थान पर रेत के टीले हैं।

मरुस्थल के बीच एक लम्बा-सा मार्ग है, जिसपर मनुष्यों की हड्डियां बिखरी पड़ी हैं और इस मार्ग पर लाखों मनुष्य कराहते हुए, एक-दूसरे को ढकेलते हुए आगे चल रहे हैं।

आगे दोनों लड़कों ने देखा कि प्रत्येक मनुष्य के पांव में सोने की वेड़ियां पड़ी हुई हैं और ये बेड़ियां अगले मनुष्य की बेड़ियों से वंधी हुई हैं। वे लोग वहुत दुर्बल दिखाई देते थे। उनसे वड़ी कठिनता से चला जाता था। वहुत-से लोग तो ऐसे थे कि उनकी पसलियां तक अलग-अलग दिखाई देती थीं।

राम ने पूछा, "तुम कौन लोग हो ?"

एक मनुष्य ने कहा, "हम लोग सोने के दानव के बन्दी हैं। उसने हमको कैद कर रखा है।"

राम ने कहा, "सोने का दानव कहां है ?"

"वह तुमको आगे मिलेगा।"

"आगे कहां ?"

"जहां यह मार्ग खत्म होता है।"

जहां पर मार्ग खत्म होता था, वहां पर वास्तव में सोने का दानव बैठा था। उसकी शक्ल चांदी के दानव से बहुत मिलती-जुलती थी। अन्तर केवल इतना था कि वह बात करता था तो उसके मुंह से रुपयों की बजाय

अशर्फियां गिरती थीं, और चांदी की तश्तरी की बजाय सोने की तश्तरी में गिरकर दानव की नाभि में समा जाती थीं।

दानव ने लड़कों से कहा, "तुम्हारा टिकट कहां है ?" लड़कों ने डरते-डरते अपने टिकट दिखाए।

सोने के दानव ने कहा, "अच्छा है कि तुम्हारे पास टिकट हैं, नहीं तो मैं तुम्हें भी बन्दी बना लेता। अच्छा, अब मेरा तमाशा देखो।"

इतना कहकर दानव ने अपने सामने लटके हुए एक परदे को हटाया।

और दोनों बच्चों ने देखा कि सामने बहुत बड़ा मरु-स्थल है, उसमें एक बहुत बड़ी दीवार खड़ी है, और यह दीवार सारी सोने की है। इतनी बड़ी सोने की दीवार उन्होंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी। किन्तु यह देखकर उनको और भी अचम्भा हुआ कि उस दीवार की नींव में छोटे-छोटे छेद हैं और छोटे-छोटे दानव मनुष्यों के पांवों में बंधी हुई ज़ंजीरों को खींचकर ला रहे हैं और उन छेदों पर रख रहे हैं।

"यह क्या हो रहा है ?" यामीन ने पूछा।

दानव ने कहा, "मैं यह सोने की दीवार उगा रहा हूं।"

"सोने की दीवार भी उगती है?" यामीन ने आश्चर्य से पूछा।

दानव ने कहा, "जितनी देर तुम्हें आए हुए हुई है, उतनी देर में यह दीवार दो फुट ऊंची हो गई है। देखो, ध्यान से देखो, तुम्हें दीवार उगती हुई दिखाई देगी।"

बच्चों ने ध्यान से देखा। वास्तव में दीवार उगती हुई मालूम होती थी।

राम ने दीवारों की ओर देखते हुए कहा, "किन्तु ये सोने की दीवार के पास क्या कर रहे हैं?"

"इसकी नींव को सींच रहे हैं।"

एकाएक दानव ने ताली बजाई और कहा, "खुल जा सम-सम!" और छोटे-छोटे दानवों ने अपनी सुनहरी ज़ंजीरों को छेद में डाल दिया और यामीन और राम ने देखा कि वे सुनहरी ज़ंजीरें न थीं, नलियां थीं, जिनमें से मनुष्य का रक्त फुवारे की भांति बहकर सोने की दीवार के छेद में जा रहा था। राम ने घबराकर कहा, "किन्तु यह तो मनुष्य का रक्त है!"

दानव ने हंसते हुए कहा, "लेकिन यह भी तो देखो कि दीवार कितनी ऊंची हो गई है।"

राम और यामीन वहां से सिर पर पांव रखकर भागे। भागते-भागते जादू के संसार के बिल्कुल दूसरे

भाग में पहुंच गए। यहां एक चबूतरे के चारों ओर बहुत-से लोग एकत्र थे। सैकड़ों-हज़ारों की संख्या में लोग इकट्ठे थे और चबूतरे की ओर देख-देखकर बोली दे रहे थे।

"दस हज़ार !"

"बीस हज़ार !"

"तीस हज़ार !"

यामीन ने पूछा, "क्या बात है, किस चीज़ की बोली बोली जा रही है ?"

राम ने कहा, "आओ, आगे बढ़कर देखें।"

चबूतरे के निकट जाकर उन्होंने देखा कि एक लोहे के खम्बे से लोहे की ज़ंजीरों में बंधी हुई एक बड़ी ही सुन्दर राजकुमारी है। उसके कोमल काले-काले केश कमर तक गिर रहे हैं; कमल की टहनी-सी नाजुक उसकी गर्दन एक ओर को ढुलक गई है, और आंसू उसकी सुन्दर आंखों से निरन्तर गिर रहे हैं।

किन्तु राम और यामीन को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी आंखों से जो आंसू गिर रहे हैं, वास्तव में वे आंसू नहीं हैं, अमूल्य मोतियों के
जो उसकी आंखों से निकलकर नीचे भूमि पर गिरते जा रहे हैं। एक पुरुष गुलाबी रंग के कालीन पर बैठा उनको

चुनता भी जाता है ।

"बोलो, बोलो, दाम लगाओ । यह कोई साधारण राजकुमारी नहीं है। यह रोती है तो इसकी आंखों से मोती गिरते हैं—देखते जाओ और दाम लगाते जाओ ।"

"एक लाख !" एक मनुष्य ने घबराकर कहा ।

"दो लाख !"

"दस लाख !"

"चालीस लाख !"

बोली बढ़ रही थी ।

मोती धरती पर गिर रहे थे ।

यामीन ने कहा, "तुम इसकी क्या बोली दोगे ?"

राम ने कहा, "मैं तो इसका एक पैसा भी न दूंगा । मुझे तो रोती हुई राजकुमारी तनिक भी पसन्द नहीं । मुझे तो हंसती हुई राजकुमारी चाहिए ।"

यामीन ने कहा, "किन्तु सोचो तो, यह मोतियों की रानी है ।"

राम ने कहा, "फिर क्या हुआ ! यह भी तो सोचो कि मोती प्राप्त करने के लिए इसे हर समय रुलाना पड़ेगा । इसको नाना प्रकार के कष्ट देने पड़ेंगे, भूखा रखना पड़ेगा, ज़ंजीरों से बांधकर कोड़े लगाने पड़ेंगे, तब कहीं ये मोती मिलेंगे । मैं तो इस अन्याय के लिए तनिक

भी तैयार नहीं हूं।"

यामीन ने कहा, "तुम ठीक कहते हो। पर इस बेचारी को किसी न किसी प्रकार बचाना चहिए।"

राम ने कहा, "राजकुमारी तुम्हें अच्छी लगती है?"

यामीन ने कहा "मेरे पास एक कहानियों की किताब थी। मेरे पिताजी ने वह किताब मुझसे छीन-कर फाड़ डाली थी। उसमें ऐसी ही राजकुमारी का जिक्र था।"

राम कुछ देर चुपचाप रहा। फिर उसने वहां से चिल्लाकर कहा, "ऐ राजकुमारी! तनिक हंसकर तो दिखाओ।"

मोती चुननेवाला मनुष्य ज़ोर से चिल्लाया, "खबर-दार जो हंसी! प्राण निकाल डालूंगा!"

यह कहकर उसने ज़ोर से राजकुमारी की पीठ पर कोड़ा लगाया।

राम ने फिर ज़ोर से कहा, "यदि बचना चाहती हो तो हंसो, ज़ोर से हंसो। कष्ट हो रहा हो तो भी हंसो। फिर देखो क्या होता है!"

राजकुमारी ने ज़ोर-ज़ोर से हंसना आरम्भ किया। एकाएक उसकी आंखों से मोती गिरने बन्द हो गए और होंठों से फूल झड़ने लगे। किन्तु ये साधारण फूल

थे, जैसे गुलाब, जूही और नरगिस के फूल ।

ग्राहकों को उनसे कोई लगाव न था। नीलाम करनेवाला कोड़े पर कोड़े लगाता गया, परन्तु राजकुमारी फिर भी हंसती रही। राजकुमारी को खरीदनेवाले घबराकर भाग गए, क्योंकि वे मोतियों के ग्राहक थे, फूलों के नहीं ।

थोड़ी ही देर में चारों ओर उल्लू बोलने लगे। फिर कोड़े मारनेवाला भी मारते-मारते थककर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा, क्योंकि वह फूलों की सुगन्ध न सह सकता था। उसने आज तक न फूल देखे थे और न ही उनकी सुगन्ध सूंघी थी । इसलिए वह बेचारा मूर्च्छित होकर वहीं फूलों के ढेर पर गिर गया ।

यामीन और राम ने आगे बढ़कर राजकुमारी की ज़ंजीर खोल दी, उसे चबूतरे से नीचे उतारा और अपने साथ ले चले ।

चलते-चलते यामीन ने राजकुमारी का हाथ पकड़ लिया। राजकुमारी बहुत हंसी, बोली, तुम्हारे हाथ में तो केवल एक अंगूठा है ।"

ज्योंही वह हंसी, उसके होंठों से एकसाथ बहुत-से फूल झड़ गए । जहां फूल झड़कर धरती पर गिरे, वहां बहुत-से फूलों के पौधे उग आए। इस प्रकार जहां-जहां

राजकुमारी, राम और यामीन चलते गए, मरुस्थल एक हरा-भरा उपवन बनता गया। यामीन को राजकुमारी मिल गई थी, इसलिए वह बहुत प्रसन्न था। राम से कहने लगा, "भाई चलो, वापस लौट चलें।"

राम ने कहा, "भाई, अभी तनिक और इस जादू के संसार की सैर कर लें। चार आने का टिकट लिया है, कोई मुफ़्त थोड़े ही आए हैं। देखो, वह सामने क्या है ?"

५

सामने वहुत-से लोग रंग-विरंगी झंडियां हिलाते हुए जा रहे थे। राम, यामीन और राजकुमारी भी उनके पीछे-पीछे चलने लगे। लोग ज़ोर-ज़ोर से नारे लगा रहे थे :

"अलाउद्दीन को वोट दो !"

"जो अलाउद्दीन को वोट नहीं देगा, वह देशद्रोही कहलाएगा !"

"अलाउद्दीन ज़िन्दावाद !"

यह जनसमूह इस प्रकार नारे लगाता हुआ, झंडियां हिलाता हुआ, नगर के वड़े चौक में जा पहुंचा।

राम ने देखा यद्यपि लोग भूखे दिखाई देते थे, उनके कपड़े मैले और फटे-पुराने थे, किन्तु फिर भी वे प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

राम ने पूछा, "भाई, क्या बात है ?"

एक मनुष्य ने विस्मित होकर कहा, "सारी दुनिया को मालूम है, और तुम्हें पता नहीं ? आज जादूगरों का

चुनाव है। वह देखो सामने अलाउद्दीन अपना चिराग़ हाथ में लिए चुनाव लड़ रहा है।"

राम ने देखा, सचमुच बड़े-बड़े रंग-बिरंगे झण्डों के बीच अलाउद्दीन खड़ा भाषण दे रहा था। वह कह रहा था :

"भाइयो और बहनो, मैं भी तुम्हारी तरह एक साधारण मनुष्य हूं। मैं एक दर्ज़ी का बेटा हूं। मैं तुम्हारे दुःख-दर्द पहचानता हूं; मुझे मालूम है तुम लोग भूखे हो, ग़रीब हो, तुम्हारी देह पर वस्त्र नहीं हैं, बच्चों के लिए शिक्षा नहीं है। मैं जानता हूं, पिछली सरकार ने तुम लोगों के लिए कुछ नहीं किया। किन्तु वह सोने के दानव का राज्य था। मैं दर्ज़ी का बेटा हूं। मैं तुम्हारे सारे दुःख-दर्द दूर करूंगा। अपने इस जादू के चिराग़ की सहायता से मैं तुम्हारे लिए सब प्रकार के सुखों की सामग्री इकट्ठी करूंगा। देखिए, मेरे जादू के चिराग़ के कारनामे !"

और यह कहकर जैसे ही अलाउद्दीन ने जादू के चिराग़ को अपनी हथेली पर रगड़ा—एक दानव वायु में उड़ता हुआ दिखाई दिया और वायु ही में खड़ा होकर कहने लगा :

"अलाउद्दीन, क्या आज्ञा है ?"

"मैं शहर के भूखे लोगों के लिए शानदार महल बन-

वाना चाहता हूं। ज़रा एक महल तो लाकर दिखाओ।"

दानव ने सिर झुकाया और लोप हो गया। दूसरे ही क्षण वही दानव अपने हाथ पर शानदार सात मंज़िलों-वाला, चमकता हुआ महल लिए उपस्थित हुआ।

लोगों की दृष्टि उस सुन्दर महल की ओर खिचती चली गई। महल के द्वार खुले थे, खिड़कियां खुली थीं, महल के भीतर दीपक जगमग कर रहे थे, अन्दर कमरों में वाजे वज रहे थे। सुन्दर क़ालीन और सोफे विछे दिखाई दे रहे थे। लम्वी-लम्वी मेज़ों पर भांति-भांति के फल रखे हुए थे। घूमती हुई मेज़ों पर मिठाई, पूरियां, सब्ज़ियां, आइसक्रीम, शरवत और अन्य वस्तुएं रखी हुई दिखाई दे रही थीं।

लोगों ने एक कण्ठ से गर्जना की :

"अलाउद्दीन को वोट दो!"

"अलाउद्दीन ज़िन्दावाद!"

"एक वोट, एक देश!"

"एक अलाउद्दीन, एक चिराग़!"

"अलाउद्दीन ज़िन्दावाद!"

एकाएक अलाउद्दीन ने ताली वजाई और दानव अपने महल समेत लोप हो गया।

"पहले मुझे वोट दो, फिर यह महल तुम्हें मिलेगा।"

लोग अन्धा-धुन्ध वोट देने के लिए जाने लगे। एका-एक दूसरी ओर से आवाज़ आई :

"मूर्ख मत बनो ! यह अलाउद्दीन, दर्ज़ी का बेटा, तुम्हें मूर्ख बना रहा है। असली जादू तो मेरे पास है, जादू की टोपी—सुलेमानी टोपी।"

लोगों की भीड़ अब दूसरी ओर पलट पड़ी, जहां एक बहुत बड़े बैंडबाजे के साथ एक बहुत बड़े चबूतरे पर दो दर्जन लाउडस्पीकरों के सामने एक जादूगर सुलेमानी टोपी हाथ में लिए भाषण दे रहा था। राम, यामीन और राजकुमारी भी उधर चले गए।

सुलेमानी टोपीवाला जादूगर कह रहा था :

"अलाउद्दीन तो ठग है। उसको भूलकर भी वोट न देना। अलाउद्दीन का चिराग़ पुराना हो चुका है। उसका दानव भी बूढ़ा हो चुका है। इतने दिनों से वह तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सका, अब क्या करेगा ? अब की बार तुम मुझे वोट दो, क्योंकि मेरे पास सुलेमानी टोपी है। यह टोपी मैंने बड़ी कठिनाई से प्राप्त की है। हज़ारों कष्ट सहकर, अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर, बड़े परिश्रम के पश्चात् मैंने इस टोपी को प्राप्त किया है।"

यामीन ने कहा, "इस टोपी में क्या अनोखी बात है ? मुझे तो सीधी-सादी सफ़ेद रंग की टोपी दिखाई

देती है।"

जादूगर ने यामीन की वात सुन ली। वह वहीं अपने चवूतरे से चिल्लाकर बोला :

"यह कोई साधारण टोपी नहीं है। इसे पहनकर मनुष्य ऐसे ग़ायव हो जाता है, जैसे गधे के सिर से सींग। देखो, देखो, सुलेमानी टोपी का चमत्कार देखो!"

और यह कहकर जादूगर ने टोपी पहन ली। जादूगर एकसाथ ग़ायब हो गया, केवल उसकी आवाज़ आ रही थी :

"देखो, यह सुलेमानी टोपी का चमत्कार है। इसे पहनकर मनुष्य ग़ायब हो सकता है।"

जादूगर ने टोपी उतारी, और अब वह लोगों को दिखाई देने लगा।

"इस टोपी को पहनकर हर मनुष्य ग़ायब हो सकता है, जहां चाहे घूम सकता है। वह सारे संसार की सैर कर सकता है। वह जहां चाहे बिना टिकट लिए जा सकता है और उसे कोई पूछनेवाला नहीं। इस टोपी को पहनकर मनुष्य बड़े-बड़े रहस्य जान सकता है, बड़े-बड़े लोगों के बड़े-बड़े रहस्य! वह ऊंची से ऊंची सोसायटी में जा सकता है और कोई उसे टोक नहीं सकता। इस टोपी को पहन-कर प्रधान मंत्री बन सकता है; नौकरी प्राप्त कर सकता

है। यह सुलेमानी टोपी है। इसके सामने अलाउद्दीन का चिराग़ कोई महत्त्व नहीं रखता। इसे रगड़ने की आवश्यकता नहीं। किसी दानव को बुलाने की आवश्यकता नहीं। बस, इसको सिर पर पहन लो और आपके सब कार्य सिद्ध हो जाएंगे। फिर अलाउ ीन के पास एक ही चिराग़ है किन्तु मैंने आपके लाभ के लिए हज़ारों टोपियां तैयार कराई हैं। ये बंडल के बंडल, जो आप चबूतरे पर देख रहे हैं, सब सुलेमानी टोपियां आइए, मुझे वोट दीजिए और एक-एक सुलेमानी टोपी लीजिए !"

"एक वोट, एक सुलेमानी टोपी।"

लोग धड़ाधड़ वोट देने के लिए भागने लगे और कोलाहल मच गया :

"सुलेमानी टोपी, ज़िन्दाबाद !"

"अलाउद्दीन का चिराग़, मुर्दाबाद !"

इतने में तीसरे चबूतरे से एक ज़ोर का क़हक़हा उठा और सब लोग उधर देखने लगे। वहां एक और जादूगर सिर पर सफ़ेद काग़ज़ की टोपी रखे सफ़ेद काग़ज़ का कोट पहने, आंखों पर ऐनक लगाए हुए कह रहा था :

"मित्रो, यह सुलेमानी टोपीवाला बहुरूपिया है, बहुरूपिया ! यह वोट ले के स्वयं तो ग़ायब हो जाएगा, और आपको कपड़े की टोपियां दे जाएगा। आप चाहे

सिर पर ओढ़ें, चाहे थैला बनाकर घर ले जाएं। मित्रो, यह सुलेमानी टोपी किस काम की ? ग़ायब होकर आप क्या करेंगे ? यदि आपको इस संसार में रहना है तो सच्चा जादू ढूंढ़ने का प्रयत्न करें और सच्चे जादूगर को अपना प्रधान बनाएं। मुझे देखिए, मेरा जादू किसीको ग़ायब नहीं करता; कोई हवाई महल नहीं बनाता; वह आपको वह वस्तु देगा जिसकी आपको आवश्यकता है।"

जादूगर ने अंगुली के संकेत से एक मनुष्य की ओर इशारा किया :

"कहो, तुम क्या चाहते हो ?"

उस मनुष्य ने कहा, "मुझे अपने खेतों में कुआं चाहिए।"

जादूगर ने अपने चबूतरे पर पड़े काग़ज़ के ढेर में से एक बड़ा-सा काग़ज़ निकाला। उसपर मन्त्र पढ़कर फूंका, फिर उस मनुष्य को वह काग़ज़ दिया। उसने काग़ज़ को देखा। उसे काग़ज़ पर अपने खेतों का चित्र दिखाई दिया। खेत बंजर पड़े थे। एकाएक खेतों के बीच में एक कुआं नज़र आया। कुआं क्या, उसपर रहट भी चल रहा था, पानी फुवारे की भांति निकलकर खेतों को सींच रहा था। उस मनुष्य के चेहरे पर रौनक आ गई। उसने देखा उसके झोंपड़े से उसकी पत्नी निकली—पानी का

उ—४

घड़ा लिए हुए। पत्नी ने मुस्कराकर पति की ओर देखा, और पति उसी समय वह काग़ज़ हाथ में लिए हुए अपने घर की ओर भागा। वह शोर मचाता जाता था—"मुझे मिल गया, मेरा कुआं मुझे मिल गया !"

"तुम्हें क्या चाहिए ?" जादूगर ने अब दूसरे मनुष्य से पूछा। उस मनुष्य ने कहा, "हमारे कस्बे में कोई पाठशाला नहीं है।"

जादूगर ने एक दूसरा काग़ज़ का टुकड़ा उठाया और उसपर मन्त्र पढ़कर फूंका और फिर वह काग़ज़ का टुकड़ा उस मनुष्य के हाथ में दे दिया। उस मनुष्य ने ध्यान से उस काग़ज़ को देखा। जहां उसका घर था, उसके बिल्कुल निकट ही एक नई, बहुत ही सुन्दर-सी पाठशाला की इमारत खड़ी दिखाई दी। बच्चे हाथ में पुस्तक लिए जा रहे थे। कितनी सुन्दर और स्वच्छ दिखाई दे रही थी वह पाठशाला ! उसे ऐसा जान पड़ा मानो पाठशाला बिल्कुल उसके सामने खड़ी मुस्करा रही है। एकाएक पाठशाला के मुख्य द्वार पर उसे अपने दो बच्चे दिखाई दिए। वह दोनों उसे हाथ हिलाकर "हैलो पापा !" कहने लगे।

वह मनुष्य उसी समय वह काग़ज़ अपने हाथ में लेकर भागा। भागते-भागते वह कह रहा था—"हमें पाठशाला

मिल गई, हमें पाठशाला मिल गई ।"

फिर क्या था, जनसमूह जादूगर पर टूट पड़ा ।

एक बोला, "मुझे जूता चाहिए ।"

जादूगर ने उसे काग़ज़ का टुकड़ा दिया ।

दूसरा बोला, "मुझे मोटर चाहिए ।"

जादूगर ने उसे भी काग़ज़ का टुकड़ा दिया ।

तीसरा बोला, "हमें अपने गांव में एक हस्पताल चाहिए, एक पाठशाला और एक नहर और एक सिनेमाघर भी चाहिए ।"

जादूगर ने उसे भी एक काग़ज़ का टुकड़ा दे दिया ।

यामीन ने राम से पूछा, "तुम्हें काग़ज़ पर कुछ दिखाई देता है ?"

राम ने कहा, "मुझे तो सफ़ेद काग़ज़ ही दिखाई देता है ।"

यामीन ने कहा, "क्या यह सम्भव है कि उन लोगों को कुछ दिखाई देता है ? किन्तु यदि मान भी लिया जाए कि उन्हें कुछ दिखाई देता है, तो भी काग़ज़ ही पर तो दिखाई देता है न ? उसकी वास्तविकता क्या है ?"

राम ने उस मनुष्य को बांहों से पकड़ लिया जिसने जादूगर से जूता मांगा था और उससे पूछा :

"तुम्हें जूता मिल गया ?"

उस मनुष्य ने बड़े क्रोध से वह कागज़ का टुकड़ा राम के मुंह के सामने लाकर कहा, "देखते नहीं, मिल गया है। यह देखो!"

राम को सफ़ेद कागज़ सफ़ेद ही दिखाई दिया।

राम ने कहा, यदि यह जूता है तो इसे पहनकर दिखाओ?"

उस मनुष्य ने कागज़ के टुकड़े को अपने पांव में पहनने का यत्न किया। कागज़ उसी समय बीच में से फट गया।

शेरों जैसी आवाज से जादूगर ज़ोर से गरजा।

"कौन है? कौन यथार्थवादी यहां घुस आया है हमारे जादू के संसार में। इसे शीघ्र निकालो, नहीं तो यह सब कुछ बरबाद कर देगा। हमारा जादू खत्म हो जाएगा।"

इतना सुनते ही अलाउद्दीन चिराग़वाला, सुलेमानी टोपीवाला, जादू के कागज़वाला और उनके साथी राम, यामीन और राजकुमारी के पीछे भागे। अच्छा हुआ कि राम ने बड़ी चतुराई से काम लिया। उसने शीघ्रता से सुलेमानी टोपियों के बंडल से तीन टोपियां निकालीं और उन्हें पहनकर तीनों अदृश्य हो गए। नहीं तो इतनी बड़ी भीड़ उनकी हड्डी-पसली चूर-चूर करके रख देती।

हांफते-हांफते तीनों जादू के संसार के द्वार से वाहर आ गए। वाहर चांदी का दानव वैठा चार आने के टिकट बेच रहा था। उन्हें वापस आते देखकर वड़ी दीनता से कहने लगा :

"तुम्हारे पास कुछ खाने को है ? तीन सौ वर्षों से भूखा वैठा हूं। मेरी दशा पर दया करो, कुछ खाने को दो।"

राम, यामीन और राजकुमारी ने तीनों टोपियां दानव के हाथ में थमा दीं और कहा, "इन तीन टोपियों को मिलाकर पहन लो, फिर तुमको सब कुछ मिल जाएगा।"

६

जादू के संसार में क्योंकि उन्हें खाने को कुछ नहीं मिला था, इसलिए राम, यामीन और राजकुमारी तीनों भूखे थे। और राजकुमारी तो बहुत ही भूखी थी, क्योंकि उसे रुलाने के लिए भूखा रखा जाता था। इसलिए तीनों जादू के संसार से वापस लौटते ही पेड़ से मटर के दाने तोड़-तोड़कर खाने लगे।

खाते-खाते यामीन ने राजकुमारी से पूछा, "तुम किस देश की राजकुमारी हो?"

राजकुमारी ने कहा, "मैं जन्म से राजकुमारी नहीं हूं। मैं तो एक डबलरोटी बेचनेवाले की लड़की हूं।"

"हैं! राजकुमारी नहीं हो?" यामीन ने अचम्भित होकर कहा, "किन्तु वह बेचनेवाला तो तुम्हें......"

"बात यह है" राजकुमारी ने कहा, "शहर में मेरे पिता की एक छोटी-सी दुकान थी, जहां वह डबलरोटी बनाया करता था। मेरे पिता, मेरी माता और मैं, हम तीनों खमीरा आटा गूंथते थे। उसे डबलरोटी के सांचे

में भरकर भट्ठी में पकाते थे। खमीर उठाना, आटा मांडना, सांचे में डालना, सांचे को आग में उतनी ही देर रखना कि रोटी ठीक पक जाए पर जलने न पाए, यह सब बड़ा कठिन काम था और मैं छोटी-सी थी, खेलना चाहती थी। फिर भी मुझे काम करना पड़ता था।"

एक दिन क्या हुआ कि मेरी मां बीमार पड़ गई। अब मेरे पिता को और मुझे—हम दोनों को दुकान का सारा काम करना पड़ा। मैंने बहुत-सी रोटियां जला डालीं। इसपर मेरे पिता ने मुझे खूब मारा और मुझे दुकान से बाहर निकाल दिया। मैं बाहर सड़क पर खड़ी होकर रोने लगी। उसके बाद मुझे पता नहीं क्या हुआ। मैंने इतना देखा कि एक बूढ़ा मेरे पांवों पर झुका हुआ धरती पर से कुछ चुन रहा है। बूढ़ा उठकर खड़ा हुआ और मेरी ओर अचम्भे से देखने लगा। थोड़ी देर बाद वह मेरा हाथ पकड़कर दुकान में वापस ले गया।

उस बूढ़े ने मेरे पिता से कहा, "इस छोटी-सी बच्ची को पीटते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आती ?"

पिता ने कहा, "यह मेरी बच्ची है; मैं इसे पीट सकता हूं। मैं इसका पिता हूं; इसे मेरी दुकान पर काम करना होगा। मुझपर बहुत-सा क़र्ज़ चढ़ा हुआ है।

आज इसने कई दर्जन डबलरोटियां जला डाली हैं। इस नुक़सान को कौन उठाएगा? मैं या तुम? मैं इतना ग़रीब हूं कि एक समय का खाना भी बड़ी मुश्किल से चलता है। इसपर तुम इसकी तरफ़दारी करने आए हो, जबकि मैंने इसे पहली बार आज ही पीटा है।"

"यदि तुम इतने ग़रीब हो और इसका पालन-पोषण नहीं कर सकते, तो इस लड़की को मुझे दे दो। मैं इसे अपनी बेटी बना लूंगा। इसे बहुत अच्छी तरह से रखूंगा। इसे अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनाऊंगा, अच्छे-अच्छे खाने दूंगा, अच्छी शिक्षा दूंगा।"

मेरे पिता ने कहा, "और इसकी जगह मेरी दुकान पर कौन काम करेगा, तुम?"

बूढ़े ने कहा, "इसके लिए मैं तुम्हारा सारा क़र्ज़ चुकाए देता हूं, और तुम्हें इतना धन दिए देता हूं कि तुम जीवन-भर आराम से रह सकोगे।"

इतना कहकर बूढ़े ने अशर्फियों से भरी हुई एक थैली मेरे पिता के हाथ में थमा दी। मेरा पिता कभी मेरी ओर देखता था, कभी थैली की ओर। अन्त में उसने थैली ले ली और बेटी बेच दी। शायद इसलिए कि मेरा पिता बहुत ग़रीब था और उसने सोचा होगा कि चलो, मेरी बेटी तो धनवान बूढ़े के घर में सुख से पलेगी।

"तो तुम अपने पिता से बिछुड़ गई ?" राम ने पूछा।

"हां।" राजकुमारी ने कहा, "वह बूढ़ा एक अमीर जौहरी था। मुझे अपनी सुन्दर गाड़ी में बिठाकर अपने घर ले गया। मार्ग में उसने मुझसे पूछा :

"क्या तुम रोज़ रोती हो ?"

"नहीं तो, मैं तो हंसती हूं। आज ही पहली बार रोई हूं।"

"हूं।" बूढ़ा कुछ सोचने लगा।

घर ले जाकर बूढ़े ने मुझे बड़े आराम से रखा। अच्छे-अच्छे खाने, सुन्दर वस्त्र और सैर के लिए चार घोड़ों वाली गाड़ी दी। उसके घर में सब प्रकार का सुख था। बस एक दुःख था।

"वह क्या ?" यामीन ने पूछा।

बूढ़ा हर रात को भोजन के बाद मुझे पीटता था। मैं रोती-चीखती-चिल्लाती तो ग्रामोफोन बजाने लगता ताकि मेरी आवाज़ बाजे की आवाज़ में दब जाए। यह मारपीट एक घण्टा या आध घण्टा चलती। जब तक कि मैं रो-रोकर थक न जाती, बूढ़ा चैन से न बैठता। वह मेरी आंखों से गिरते हुए आंसुओं के मोतियों को एक रेशमी रूमाल में चुन लेता और अपनी दुकान पर ले

जाकर सजा देता। गाहक उन मोतियों को देखकर बड़े हैरान होते, क्योंकि किसी भी जौहरी की दुकान पर इस प्रकार के मोती दिखाई नहीं देते थे। ऐसे सफ़ेद, स्वच्छ और चमकते हुए मोती थे कि सागर के मोती उनके सामने बिल्कुल झूठे लगते।

धीरे-धीरे यह खबर राजा तक पहुंची। राजा ने जौहरी के मोतियों को परखा, देखता रहा, क्योंकि राजा को भी अच्छे-अच्छे मोतियों, जवाहरात और दूसरे मूल्यवान पत्थरों के इकट्ठा करने का बहुत चाव था। हर एक व्यक्ति को चीज़ें इकट्ठी करने का चाव होता है। कोई पत्थर इकट्ठे करता है, कोई टिकटें जमा करता है।

थोड़ी देर मोतियों को देखने के बाद राजा ने जौहरी से पूछा :

"यह मोती तुम कहां से लाते हो?"

जौहरी ने दो-चार बार झूठ बोलने का यत्न किया, परन्तु राजा बहुत चतुर था। उसने जौहरी से कहा :

"सच-सच बताओ, यह मोती कहां से लाए हो, नहीं तो मारे जाओगे।"

राजा ने जल्लाद को उपस्थित होने की आज्ञा दी।

जौहरी थर-थर कांपने लगा। उसने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाकर अपने प्राणों की भिक्षा मांगी और निवेदन

किया, "महाराज, यह मोती सागर के नहीं हैं। यह मोती एक डबलरोटी बेचनेवाले की लड़की के आंसू हैं।"

राजा को विश्वास नहीं आया, किन्तु जौहरी के बार-बार कहने पर राजा को मानना पड़ा। उसने जौहरी से कहा :

"जाओ, उसे जल्दी से दरबार में उपस्थित करो।"

"इसपर मुझे दरबार में लाया गया। यही नहीं, मुझे दरबार में रुलाया भी गया। राजा मुझे रोता देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने जौहरी से मुझे छीन लिया; उसको कत्ल कर दिया और मुझे अपने महल में रख लिया। उसने मेरे कमरे के चारों ओर पहरेदार बिठा दिए।"

"राजा के महल में मुझे एक बार नहीं, चार-चार बार पीटा जाता था। क्योंकि राजा अपने निकट के एक दूसरे देश पर चढ़ाई करना चाहता था, और चढ़ाई के लिए फ़ौज की, और फ़ौज के लिए सामान की, और सामान के लिए रुपये की आवश्यकता होती है। आवश्यकता पूरी करने के लिए मेरे आंसू काम में लाए गए। और जब राजा का खज़ाना मोतियों से भर गया तो उसने दूसरे देश पर चढ़ाई कर दी। परन्तु होनी बलवान होती है। राजा बुरी तरह हार गया और दूसरे देशवालों ने राजा की राजधानी पर हमला कर दिया। खूब लूट-मार हुई।

राजा का महल भी लूटा गया। इस लूट में मैं भी एक सिपाही के हाथ आई। उसने मुझे एक छोटी-सी लड़की समझकर दस हज़ार अशर्फियों के बदले एक सौदागर के हाथ बेच दिया, जो गुलामों का व्यापार करता था। आगे जो कुछ हुआ, तुम जानते ही हो।"

राम ने यामीन से कहा, "चलो भाई, अब आगे भी बढ़ोगे कि कहानियां ही सुनते रहोगे?"

७

राम, यामीन और राजकुमारी तीनों पेड़ पर चढ़ने लगे। राम ने यामीन से कहा, "मैं आगे-आगे चलता हूं, तुम मेरे पीछे-पीछे आओ। और मिस डबलरोटी !" राम ने राजकुमारी से कहा, "तुम ज़रा यामीन की सहायता करो, बेचारे के हाथ पर केवल अंगूठा है। यदि तुम सहायता नहीं करोगी तो यह पेड़ पर चढ़ नहीं सकेगा।"

राजकुमारी को अपना नाम बहुत पसन्द आया। 'मिस डबलरोटी !' और वह हंसने लगी। फिर बोली, "यामीन बेचारा भी कितना बेबस है।"

यामीन ने क्रोध से कहा, "मैं इतना बेबस नहीं हूं। इस पेड़ पर चढ़ते-चढ़ते हाथों में खुजली-सी होने लगी है। मुझे ऐसा लगता है, जैसे मेरे हाथों की अंगुलियां भीतर ही भीतर फिर से उग रही हैं।"

बहुत देर तक राम, यामीन और मिस डबलरोटी पेड़ के ऊपर चढ़ते रहे। राम, यामीन को टार्च से मार्ग दिखाता जा रहा था। अन्त में एक स्थान पर जाकर राम

रुक गया। पेड़ की एक बहुत बड़ी टहनी पर एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा हुआ था। उसपर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा हुआ था :

'ख़बरदार ! इधर पैर न रखना; यह सांपों का शहर है।'

"उई।" राजकुमारी ज़ोर से चिल्लाई, "भाई, मुझे सांपों से बड़ा डर लगता है।"

"मुझे भी।" यामीन बोला, "चलो आगे चलो।"

राम ने कहा, "नहीं, भीतर चलो। यह शहर भी देखकर जाएंगे।"

पेड़ की टहनी पर चलते-चलते वे दोनों शहर के द्वार पर पहुंच गए। द्वार अन्दर से बन्द था। राम के खटखटाने पर एक पहरेदार ने कहा :

"अगर अपनी जान की ख़ैर चाहते हो.........।"

राम ने टोककर कहा, "हम नहीं चाहते।"

पहरेदार ने कहा, "तुम्हारा भला इसी में है कि लौट जाओ।"

"चलो जी !" राम ने यामीन और राजकुमारी को हाथ से पकड़ा और द्वार के भीतर घुस गया। उनके अन्दर जाते ही पहरेदार ने उनकी अच्छी तरह तलाशी ली और फिर शीघ्रता से द्वार बन्द कर दिया। यह बड़ा

सुन्दर शहर था। गलियां, मकान, बाज़ार, सड़कें—सब पक्की थीं। सीमेंट और कंकरीट की बनी हुई। सफ़ाई इतनी थी कि कहीं पर एक तिनका भी पड़ा दिखाई न देता था। लोग साफ़-सुथरे कपड़े पहने घूम रहे थे। किन्तु सब चुपचाप, भयभीत दृष्टि से इधर-उधर देखते हुए चल रहे थे। किसीके मुख पर मुस्कान न थी। दुकानदारों ने दुकानों के आगे लोहे की जालियां लगा रखी थीं और उनके पीछे चुपचाप बैठे थे। गाहक आता और सौदा मांगता। लोहे की एक छोटी-सी खिड़की खुलती और दुकानदार का हाथ उसमें से बाहर निकलकर सौदा देता, पैसा लेता और फिर यह लोहे की खिड़की खट-से बन्द हो जाती। बड़ी अचम्भे की बात यह थी कि दुकानों पर ही लोहे की जालियां न थीं, बल्कि हर घर के द्वार पर, हर गली के मोड़ पर, हर मकान की खिड़की पर लोहे की जालियां लगी हुई थीं।

"वह देखो, वह क्या ?" यामीन ने ऊपर आकाश की ओर दृष्टि दौड़ाते हुए राम से कहा।

राम ने सिर ऊंचा करके देखा—शहर के अन्दर सबसे ऊंची इमारत के ऊपर, बहुत ऊपर, एक लोहे का जाल लगा हुआ था। यह जाल सारे शहर को ढके हुए था।

राम ने कहा, "बड़ा अनोखा शहर है !"

राजकुमारी ने कहा, "सबसे अनोखी बात यह है कि हमें इतनी देर हो गई इस शहर में घूमते हुए, पर हमने कहीं पर कोई पेड़ नहीं देखा, न कोई झाड़ी, न बग़ीचा, न कोई फूल—कुछ भी तो नहीं।"

अब जो राम और यामीन ने ध्यान दिया तो उन्हें भी यह बात बड़ी उलझन में डालनेवाली लगी। सचमुच सारे शहर में एक भी वृक्ष नहीं था। कोई बाग़, कोई फूल दिखाई न देता था।

"बात क्या है ?" राम ने चकित होकर कहा। उसने निकट से जाते हुए लोगों से भी पूछा, किन्तु किसी-ने उसके प्रश्न का उत्तर न दिया—उलटे सवाल सुनते ही लोग कांपने लगते। उनके चेहरे पीले पड़ जाते और वे चुपचाप सिर झुकाए आगे बढ़ जाते।

"अवश्य ही कोई बात है।" राम ने अपने साथियों से कहा।

यामीन ने कहा, "चलो, यहां से भाग चलें। इसे देखकर मुझे अपना शहर याद हो आता है। अन्तर केवल इतना ही है कि वहां लोग नहीं थे; यहां लोग हैं, पर ऐसा जान पड़ता है, जैसे इनका होना न होना बराबर है।"

राम ने कहा, "नहीं, नहीं, अब आए हैं तो मालूम करके ही जाएंगे।"

शाम को ये तीनों साथी थककर एक धर्मशाला में जाकर ठहरे। परन्तु यहां भी उनकी भली प्रकार तलाशी ली गई। राम के प्रश्न पर धर्मशालावाले ने भी कुछ नहीं बताया कि वह क्यों उनकी तलाशी ले रहा है।

अपने कमरे में पहुंचकर राम ने देखा कि लोहे के पलंग पर, लोहे के अत्यन्त बारीक तारों का बना हुआ बिस्तर लगा है। तकिया, चादर, ग़िलाफ़ हरएक वस्तु लोहे के बारीक तार से बुनी थी। बिस्तर इस तरह का बना हुआ था कि मनुष्य बिस्तर में घुसकर ऊपर से लोहे की जाली लगाकर बिना किसी डर के उसके अन्दर आराम से सो सकता था, जैसे मनुष्य किसी लोहे के पिंजरे में सो रहा हो।

"अनोखा शहर है।" राजकुमारी ने कहा, "मुझे प्यास लगी है।"

राम ने इधर-उधर देखा। अन्त में उसे एक कोने में पानी का नल दिखाई दिया। नल की टोंटी पर भी लोहे की छलनी लगी हुई थी, जिसमें से पानी छन-छनकर आता था। राजकुमारी ने पानी पिया।

खैर हुई कि पानी लोहे के बारीक तारों का बना हुआ नहीं था। नहीं तो राजकुमारी के गले में फंस जाता।

शाम होते ही ज्यों ही सूर्य अस्त हुआ, इन तीनों साथियों ने देखा कि सारे शहर में एक सूर्य की भांति चमकता हुआ प्रकाश फैल गया। प्रकाश इतना था कि शहर का कोई कोना इससे वचा न रहा।

कहीं पर अन्धेरा न था, कहीं पर परछाईं दिखाई न देती थी। वाहर की सड़क शीशे की तरह चमक रही था। उसपर यदि एक वाल भी पड़ा होता तो साफ दिखाई देता।

"यह प्रकाश कहां से आ रहा है?" राम ने पूछा।

यामीन ने वाहर खिड़की की ओर संकेत कर कहा, "वह देखो!"

"खिड़की से वाहर देखने की क्या आवश्यकता है, छत की ओर देखो।" राजकुमारी ने कहा।

वे तीनों छत की ओर देखने लगे। धर्मशाला की छत शीशे की वनी हुई थी और उसमें से प्रकाश छनकर अन्दर आ रहा था। प्रकाश एक वहुत वड़ी मीनार के ऊपर से आ रहा था, जिसके ऊपर एक सूर्य की भांति चमकनेवाला गोला घूम रहा था।

राम ने कहा, "इस प्रकाश में सो कैसे सकेंगे?"

राजकुमारी ने कहा, "वड़ी आसान वात है। अपने हाथ आंखों पर रखो और सो जाओ।"

फिर उन तीनों ने ऐसा ही किया। अपने हाथ अपनी आंखों पर रखे और सो गए। एकाएक आधी रात के समय कहीं ज़ोर की चीख सुनाई पड़ी। राजकुमारी हड़-बड़ाकर जाग उठी। उसने यामीन को जगाया, यामीन ने राम को। राम ने आंखें मलते हुए कहा :

"क्या है भई, सोने भी नहीं देते !"

"उठो, उठो, यह चीखें सुनते हो ?"

सचमुच धर्मशाला के बाहर चीखों की आवाज़ें बढ़ती जा रही थीं। अब इसमें स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों के रोने की आवाज़ें भी मिल गई थीं। अब राम, यामीन और राजकुमारी जल्दी-जल्दी उठे और धर्मशाला के बाहर गए।

धर्मशाला के बाहर लोगों की बड़ी भीड़ थी, किन्तु इस भीड़ में हरएक मनुष्य रो रहा था और अपनी छाती पीट रहा था। आगे-आगे कुछ लोग दस सन्दूक़ों को अपने सिर पर उठाए चल रहे थे।

"भई, इन सन्दूक़ों में क्या है ?" राम ने एक मनुष्य से पूछा।

"शी, धीरे से बात करो। इन सन्दूक़ों में उन भाग्य-शाली लोगों का शव है, जिनको आज रात श्री सर्पजी महाराज ने काटा है।"

"सर्प ने काट खाया है ?"

"शी !" उस मनुष्य ने धीरे से कहा, "सर्प नहीं, श्री सर्पजी कहो। यदि कहीं उन्होंने सुन लिया तो रुष्ट हो जाएंगे।"

"कौन रुष्ट हो जाएंगे ?"

"श्री सर्पजी महाराज ! और मुझे भय है कि फिर कहीं तुमको भी काटकर भाग्यशाली न बना दें।"

"सर्प के काटने से आदमी भाग्यशाली बन जाता है ! वह तो मर जाता है।" राजकुमारी ने चकित होकर कहा।

"हां, मर तो जाता है, पर हम लोग उसे भाग्यशाली कहते हैं, क्योंकि इस शहर पर श्री सर्पजी महाराज का राज्य है और हर रोज़ दस आदमी उनके ज़हर से मर जाते हैं। मेरा मतलब यह है कि वे भाग्यशाली बन जाते हैं।"

"तुम इस सर्प को मार क्यों नहीं देते ?"

"शी ! शी ! क्या बात करते हो।" उस मनुष्य का रंग एकदम पीला पड़ गया और वह राम, यामीन और राजकुमारी को छोड़कर भीड़ में मिल गया और सिर पर धूल डालकर रोने और चीखने लगा।

भीड़ बढ़ रही थी। लोग जलूस में सम्मिलित होकर

रोते जाते थे। काले संदूक़ों पर काली चादरें पड़ी हुई थीं। ये संदूक़ बहुत बड़े-बड़े थे। एक संदूक़ को बारह आदमी मिलकर उठाते थे, तब कहीं वह संदूक़ उठ पाता था।

"क्या यह संदूक़ बहुत भारी है?" यामीन ने एक आदमी से पूछा।

"हां, इसमें मरनेवाले की सारी दौलत भी रखी हुई है। अशर्फियां, सोना-चांदी, हीरे-जवाहरात, मकान, ज़मीन की सनद के काग़ज़।"

"वह क्यों?"

"यहां यह चलन है। मेरा मतलब है कि जब कोई सर्पजी महाराज के काटे से मर जाता है तो सरकारी क़ानून के अनुसार उसे इस काले संदूक़ में डाल दिया जाता है और उसकी सारी दौलत भी इस संदूक़ में रख-कर—वह सामने ऊंचा गुम्बद देखते हो न, वहां पहुंचा देते हैं।"

"क्यों?"

"इस गुम्बद में हमारी सरकार रहती है, और यह उसका क़ानून है।"

"अनोखा क़ानून है। मरने के पश्चात् मरनेवाले की सारी दौलत भी ले ली जाती है।"

रोते जाते थे। काले संदूक़ों पर काली चादरें पड़ी हुई थीं। ये संदूक़ बहुत बड़े-बड़े थे। एक संदूक़ को बारह आदमी मिलकर उठाते थे, तब कहीं वह संदूक़ उठ पाता था।

"क्या यह संदूक़ बहुत भारी है ?" यामीन ने एक आदमी से पूछा।

"हां, इसमें मरनेवाले की सारी दौलत भी रखी हुई है। अशर्फियां, सोना-चांदी, हीरे-जवाहरात, मकान, ज़मीन की सनद के काग़ज़।"

"वह क्यों ?"

"यहां यह चलन है। मेरा मतलब है कि जब कोई सर्पजी महाराज के काटे से मर जाता है तो सरकारी क़ानून के अनुसार उसे इस काले संदूक़ में डाल दिया जाता है और उसकी सारी दौलत भी इस संदूक़ में रख-कर—वह सामने ऊंचा गुम्बद देखते हो न, वहां पहुंचा देते हैं।"

"क्यों ?"

"इस गुम्बद में हमारी सरकार रहती है, और यह उसका क़ानून है।"

"अनोखा क़ानून है। मरने के पश्चात् मरनेवाले की सारी दौलत भी ले ली जाती है।"

"शहर को वनाने के लिए खर्च भी तो कितना होता है।" आगे उस मनुष्य ने कहा, "यह भी तो सोचो यह गुम्वद के ऊपर जो रोशनी का गोला है, उसकी विजली पर कितना खर्च होता है—हज़ारों रुपया लग जाता है। फिर शहर के ऊपर और चारों ओर लोहे के तारों का जाल लगाया गया है, ताकि श्री सर्पजी महाराज भीतर न घुस सकें। सारे शहर के पेड़ काट डाले गए हैं जिससे श्री सर्पजी महाराज उनमें न रह सकें। तुमने सारे शहर में कोई पेड़ देखा ? यह सव श्री सर्पजी महाराज से वचने के लिए किया जाता है। सारी सड़कें, सारे मकान, गलियां-कूचे, वाज़ार पक्के बने हुए हैं। सारी नालियां, भूमि की दरारें आदि लोहे की जाली से ढंक दी गई हैं। शहर की सरकार ने इस आफत से वचने के लिए हर तरह का प्रवन्ध कर रखा है, फिर भी प्रतिदिन दस आदमी श्री सर्पजी महाराज के काटने से मर जाते हैं।"

"क्या यह सर्प किसीको दिखाई नहीं देता ? क्या बात है कि इतना उजाला होते हुए भी आप इस सर्प को मार नहीं सकते।" राम ने झुंझलाकर कहा।

"शी ! ऐसी वात न करो। वह सुन लेंगे तो तुम्हें भी डस लेंगे।"

उस मनुष्य के मुख पर एकदम पीलापन आ गया और

वह भी भाग खड़ा हुआ और भीड़ में जाते ही चकराकर गिर पड़ा और भूमि पर तड़पने लगा—"काट खाया मुझे, सर्पजी महाराज ने काट खाया !"

लोग ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। स्त्रियों ने केश खोलकर अपने सिर में मिट्टी डाल ली और वैन करना आरम्भ कर दिया। राम, यामीन और राजकुमारी भागकर उस मनुष्य के पास पहुंचे, परन्तु वह उनके आते-आते ठंडा हो चुका था। उसके माथे पर सर्प के नीले डंक का निशान था, किन्तु सर्प का कहीं पता नहीं था। कहां से आया, किस ओर चला गया।

शीघ्रता से काला संदूक़ लाया गया और उसमें उस आदमी की लाश वन्द कर दी गई। एकाएक ज़ोर की आवाज़ वादल की तरह गरजकर बोली :

"डरो, शहर के रहनेवालो, श्री सर्पजी महाराज के क्रोध से डरो। जो कोई उनसे द्रोह करेगा, इस मनुष्य की भांति मौत के घाट उतार दिया जाएगा।"

"नहीं, नहीं, हम सब आपके दास हैं, तुच्छ सेवक हैं।" स्त्रियां, पुरुष, बच्चे सब धरती पर झुककर गिड़गिड़ाने लगे। केवल राम, यामीन और राजकुमारी खड़े रहे।

एक आदमी ने कहा, "झुको, झुको, तुम लोग भी

झुक जाओ।"

"वाह, हम क्यों झुकें ?"

"हम किसी निर्दयी सर्प के सामने नहीं झुकते !"

"डरो, डरो !" वह दैवी आवाज़ फिर आई— "श्री सर्पजी महाराज के प्रकोप से डरो।"

लोग ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे और संदूक़ों को उठाकर चलने लगे। जब वे मीनार के बहुत निकट आ गए तो एक लोहे के जंगले के निकट आकर रुक गए। यहां पर लिखा था :

'आगे जाना मना है।'

लोगों ने काले संदूक़ों को यहीं रख दिया और नतमस्तक होकर गुम्बद की ओर देखने लगे। मीनार के लोहे के फाटक बंद के बंद रहे, किन्तु गुम्बद के ऊपर से आवाज़ आई :

"नगरवासियो ! अपने-अपने घर लौट जाओ। हम लाशों को बिजली से जला देंगे और इनका धन तुम्हारे हित और आराम के लिए खर्च करेंगे। घबराओ नहीं, एक न एक दिन यह ज़हर तुम्हारे शहर से दूर होगा। हम हर प्रकार से यत्न करते हैं कि तुम्हें श्री सर्पजी महाराज न डसें। इसके लिए सब प्रकार के उपाय किए गए हैं, किन्तु खेद है कि अभी तक हम इसमें सफल नहीं हो सके। शायद

भगवान की और श्री सर्पजी की भी यही इच्छा है। हमारा क्या बस चल सकता है। अब जाओ, मेरे बेटो, वापस जाओ, अपने-अपने घरों को लौट जाओ !"

यामीन ने पूछा, "यह किसकी आवाज़ है ?"

"यह हमारी सरकार की आवाज़ है।"

"तो सरकार मीनार से बाहर आकर क्यों नहीं काम करती ?"

"श्री सर्पजी के भय से।"

"सरकार की शक्ल कैसी है ?"

"सरकार को किसीने नहीं देखा, न उसके सदस्यों को। वे सब लोग मीनार के भीतर रहते हैं और बाहर नहीं आते। उनकी आवश्यकता की वस्तुएं उन्हें वहीं पहुंचा दी जाती हैं।"

"जाओ-जाओ, मेरे बच्चो, शीघ्र वापस लौट जाओ !" आवाज़ फिर आई।

सब लोग वापस लौट गए। केवल राम, यामीन और राजकुमारी वहीं खड़े रहे।

यामीन ने राम से कहा, "चलो, हम उस धर्मशाला को लौट चलें।"

राम ने कहा, "मैं तो सरकार की शक्ल देखकर जाऊंगा।"

"सरकार की शक्ल तो आज तक किसीने भी शहर में नहीं देखी, तुम कैसे देखोगे ?"

"मैं देखना चाहता हूं, वे सन्दूक़ों को अन्दर कैसे ले जाते हैं।"

राम ने सन्दूक़ों को खोलकर देखा। दबी आवाज़ फिर आई :

"खबरदार जवान, संदूक़ों को हाथ मत लगाना। वापस जाओ, परदेसियो, वापस जाओ !"

राजकुमारी ने कहा, "चलो राम, यहां से भाग चलें। मुझे बड़ा भय लगता है।"

"और मुझे भी।" यामीन ने कहा।

राम, यामीन और राजकुमारी तीनों वापस लौट चले। किन्तु एक मकान की ओट में आते ही राम फिर खड़ा हो गया और बोला :

"मैं तो यह तमाशा देखकर ही वापस जाऊंगा।"

यामीन और राजकुमारी ने बहुत समझाया, किन्तु राम नहीं माना।

एक घंटा तक राम, यामीन और राजकुमारी मकान की ओट में खड़े गुम्बद की ओर देखते रहे, किन्तु कुछ न हुआ। मीनार का फाटक बन्द रहा और काले सन्दूक़ उसी जंगले के पास पड़े रहे। आखिर डेढ़-दो घंटे

के पश्चात् एकाएक मीनार के ऊपर बिजली के गोले का प्रकाश बुझ गया और सारे शहर में अन्धेरा छा गया। चारों ओर से लोगों की चीख-पुकार, हाय-हाय सुनाई देने लगी।

राम ने राजकुमारी का हाथ यामीन के हाथ में देकर कहा, "तुम लोग यहीं खड़े रहो; मैं मीनार के पास जाकर देखता हूं कि क्या बात है।"

राजकुमारी ने कहा, "राम, मत जाओ, मत जाओ।"

राम ने कहा, "जाना आवश्यक है; मेरा विचार है, इस समय अन्धेरा है और वे लोग संदूक़ उठा रहे होंगे।"

यामीन ने कहा, "क्या इस शहर की सरकार अन्धेरे में काम करती है?"

"इस शहर ही में नहीं, बहुत-से शहरों में सरकारें अन्धेरे में काम करती हैं और शहरियों की आंखों से ओझल रहकर बहुत-सी बातें तय कर लेती हैं। भई, मुझे जाने दो।" राम ने कहा।

चारों ओर घटाटोप अन्धेरा था। शहरवालों की चीख-पुकार बन्द हो गई थी। अब चारों ओर सन्नाटा था। केवल राम के दौड़ते हुए पांवों की चाप सुनाई दे रही थी। थोड़ी दूर जाकर यह चाप भी बन्द हो गई। फिर कुछ क्षण के बाद एक ज़ोर की चीख सुनाई दी

और फिर सन्नाटा छा गया।

राजकुमारी भयभीत होकर यामीन से चिपट गई। एकाएक चारों ओर प्रकाश फैल गया।

राजकुमारी और यामीन की आंखें चौंधिया गईं। कुछ क्षणों के उपरान्त जब वे मकान की ओट से बाहर निकले तो उन्होंने देखा कि मीनार के सामने से वे सब संदूक़ ग़ायब हैं और लोहे के जंगले के पास राम की लाश पड़ी है।

"हाय-हाय !" राजकुमारी और यामीन रोते-रोते राम की लाश के पास दौड़ते-दौड़ते पहुंचे।

राजकुमारी ने राम का सिर अपनी गोद में रख लिया। राम के माथे पर सांप के डंक का नीला निशान था।

राजकुमारी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। यामीन भी चीख़ने और चिल्लाने लगा।

इन दोनों को रोते देखकर एक बूढ़ा उनके पास आया और कहने लगा, "क्या बात है बच्चो, क्यों रो रहे हो ?"

"हमारा साथी मर गया। इसे सर्प ने काट खाया।"

"सांप कहां है ?"

"दिखाई नहीं देता।"

बूढ़ा मुस्कराने लगा। उसने हरे रंग की पोशाक पहन रखी थी। उसके हाथ में एक छड़ी थी, जिसकी मूंठ पर चांदी के दो पंख लगे हुए थे, जो हर समय फड़फड़ाते-

से लगते थे। ऐसा लगता था कि यह छड़ी अभी-अभी उस बूढ़े के हाथ से निकलकर अपने-आप ऊपर उड़ जाएगी। इस बूढ़े की दाढ़ी बड़ी लम्बी और चमकदार थी।

बूढ़े ने मुस्कराकर कहा, "तुम्हारा साथी मरा नहीं है, मूर्च्छित है।"

राजकुमारी और यामीन ने बूढ़े का हाथ पकड़ लिया और बड़े विनीत स्वर में प्रार्थना की, "बाबा किसी प्रकार हमारे साथी को अच्छा कर दीजिए।"

बूढ़े ने कहा, "मैं इसे अच्छा नहीं कर सकता। मैं बूढ़ा हूं। हां, तुम इसे अच्छा कर सकते हो।" उसने यामीन की ओर संकेत किया।

"मैं?" यामीन ने पूछा, "वह कैसे?"

बूढ़े ने कहा, "इस सर्प के काटे का एक ही इलाज है।"

"किसके पास है?"

बूढ़े ने कहा, "तुम दवा खोजने जाओगे?"

"जाऊंगा, अगर मुझे अपने साथी की जान बचाने के लिए अपनी जान भी देनी पड़े तो दूंगा।"

"शाबाश, यामीन!" बूढ़े ने यामीन की पीठ थपककर कहा, "अब सुनो तुम्हें क्या करना है। तुम्हें इस शहर से बाहर निकलकर फिर वापस अपने पेड़ पर जाना होगा।"

"जाऊंगा।"

"वहां पेड़ पर एक मील तक चढ़ते जाना। कोई एक मील ऊपर जाकर एक बहुत बड़ी टहनी आएगी।"

"बाईं ओर या दाहिनी ओर ?"

"बाईं ओर। उसपर एक बोर्ड लगा हुआ होगा—'सोतों का शहर'। तुम इस डाल पर चलने लगोगे तो कोई दो-ढाई मील जाकर वह डाल खत्म हो जाएगी। वहां तुम्हें एक गुफ़ा मिलेगी। यह गुफ़ा सात मील तक एक पर्वत के भीतर चली गई है। जब तुम इस गुफ़ा से निकलोगे तो एक सुन्दर घाटी में पहुंच जाओगे। सोतों का शहर इस घाटी में है। वहां शहर के सबसे बड़े गिरजे में तुम्हें एक बूढ़ा पादरी मिलेगा। उसके गले में एक क्रास का निशान और एक सुनहरी ज़ंजीर में लटकता हुआ लाल होगा। यदि वह पादरी तुमको यह लाल दे दे तो राम की जान बच सकती है, क्योंकि उस लाल में यह गुण है कि अगर उसे सर्प के काटे पर लगाया जाए तो वह ज़हर चूस लेता है और फिर मनुष्य जीवित हो जाता है। किन्तु यह सब काम तीन दिन में हो जाना चाहिए, नहीं तो सर्प का ज़हर चलता-चलता राम के दिमाग़ में पहुंच जाएगा और फिर वह किसी प्रकार भी न बच सकेगा।"

"मैं अभी जाता हूं, लेकिन राजकुमारी…?"

"तुम घबराओ मत, इसे मैं संभालूंगा। मैं सामने-वाले मकान के तहखाने में जाता हूं, तुम लाल लेकर वहीं आ जाना।"

जब यामीन चला गया तो बूढ़े ने राजकुमारी से कहा, "आओ, अब चलें।"

'परन्तु राम ....."

बूढ़े ने कहा, "इसे यहीं पड़ा रहने दो। वे स्वयं इसकी लाश को उठाकर भीतर ले जाएंगे?"

"किन्तु वे तो जला देंगे न?" राजकुमारी बोली।

"नहीं, तीन दिन तक नहीं जलाएंगे।"

"आपको कैसे मालूम?"

"तुम मेरे साथ आओ, सब बताता हूं। हमारा अधिक देर तक यहां ठहरकर बातें करना ठीक नहीं है। सरकार सुन लेगी तो नाराज़ हो जाएगी और संदेह करने लगेगी।"

बूढ़ा राजकुमारी को लेकर अपने तहखाने में चला गया। वहां उसने संदूक़ से एक शीशा निकाला।

"यह क्या है?" राजकुमारी ने पूछा।

"यह जादू का शीशा है।" इसमें सब कुछ दिखाई देता है।"

बूढ़े ने शीशे के दूसरी तरफ कुछ तार जोड़ दिए।

थोड़ी देर बाद शीशे में गति उत्पन्न हुई, जैसे पानी

में कंकड़ फेंकने से होती है।

राजकुमारी ने देखा यामीन पेड़ पर चढ़ रहा है। फिर उसने देखा मीनार के फाटक खुल गए हैं और मीनार से नक़ाबपोश बाहर निकले और राम की लाश को उठाकर भीतर ले गए। फाटक बन्द हो गया। अब कुछ दिखाई न देता था। किन्तु बूढ़े ने शीशे को घुमाया। अब उसे मीनार के अन्दर का दृश्य दिखाई दे रहा था। नक़ाबपोश राम की लाश को उठाकर एक शानदार दरबार में पहुंचे। दरबार में नाच हो रहा था और एक ऊंचे सिंहासन पर एक अधेड़ आयु का मनुष्य बड़े ही मूल्यवान वस्त्र पहने बैठा था। उसने नक़ाबपोशों को संकेत किया। नक़ाबपोश राम की लाश को बर्फ़ख़ाने लेकर चले गए। बर्फ़ख़ाने ले जाकर उन्होंने राम की लाश को रख दिया और बर्फ़ख़ाने को ताला लगाकर वापस चले गए।

"यह नक़ाबपोश कौन थे? सिंहासन पर कौन बैठा था? वह नाचनेवाली लड़की कौन थी?" राजकुमारी ने बूढ़े से पूछा।

बूढ़ा मुस्कराने लगा, उसकी छड़ी के पंख ज़ोर से फड़फड़ाने लगे। उसने धीरे से कहा, "बेटी, यामीन को आ जाने दो, फिर सब बता दूंगा।"

८

उधर यामीन जब पेड़ पर अकेला चढ़ रहा था, तो उसे बड़ा कष्ट हो रहा था, क्योंकि उसके हाथ में केवल एक ही अंगूठा था और बाकी अंगुलियां कटी हुई थीं। इसलिए वह बड़ी कठिनाई से ऊपर चढ़ रहा था। आज उसकी सहायता करनेवाला साथी भी उसके साथ न था। आज सब काम उसे स्वयं ही करने पड़ रहे थे। किन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी, वह बड़े साहस से अंधेरे ही में पेड़ के ऊपर चढ़ता रहा। उसके हाथ छलनी हो गए, फिर भी यामीन ने हिम्मत न हारी। उसके अंगूठों से रक्त बहने लगा पर फिर भी वह पेड़ के ऊपर चढ़ता गया। कई बार वह ऊपर जाकर नीचे फिसल गया, परन्तु फिर हिम्मत करके ऊपर चढ़ गया।

जब वह टहनी पर पहुंचा तो उसके समस्त शरीर में खरोंचें आ गई थीं और हाथ-पांव में से रक्त बह रहा था।

एक क्षण के लिए उसका जी चाहा कि वह वापस

लौट जाए, किन्तु राम की लाश का ध्यान आया तो उसने उसी क्षण अपना विचार बदल दिया। उसने अपने दांत भींच लिए और गिरता-पड़ता उस बड़ी डाल पर हो लिया जहां से बूढ़े के कहने के अनुसार 'सोतों के शहर' को रास्ता जाता था।

एक मील तक उस डाल पर चलते-चलते यामीन और भी थक गया और थकान के कारण एक जगह से जो उसका पांव फिसला तो वह नीचे लटक गया। अब उसका सारा शरीर नीचे और टांगें ऊपर थीं। केवल दो अंगूठों ही से उसने पेड़ की टहनी को ज़ोर से पकड़ रखा था, क्योंकि उसे मालूम था कि यदि उसके अंगूठे की पकड़ से टहनी निकल गई या टूट गई तो फिर वह कई मील नीचे अंधेरे में गिर पड़ेगा और फिर शायद उसकी हड्डी-पसली भी न मिलेगी।

दूसरी बार डाल पर आने के लिए उसने धीरे से बन्दर की भांति टहनी को झुलाना शुरू किया। धीरे-धीरे वह पींग बढ़ाता गया। यद्यपि इस प्रयत्न में उसके शरीर की सारी शक्ति खर्च हो रही थी परन्तु यहां तो जीवन और मरण का सवाल था। किसी समय भी यह टहनी टूट सकती थी। किन्तु इस भय की परवाह न करते हुए यामीन टहनी को झुकाता गया और फिर एक

ही छलांग में ज़ोर लगाकर उसने बड़ी डाल को पकड़ लिया। किन्तु छोटी टहनी उसके अंगूठे की पकड़ से बाहर निकल गई और अब वह वायु में उलटा लटक रहा था। अब क्या करे?

यामीन ने इधर-उधर बहुतेरे हाथ मारे, परन्तु कहीं कोई टहनी उसके हाथ में न आई। वह उलटा ही लटका रहा। अन्त में बड़े प्रयत्न से और बहुत ही धीरे से उसने अपने पांव डाल की टहनियों से अच्छी तरह उलझाए और हाथों और शरीर को सिकोड़कर ऊपर की ओर घुमाते हुए आया। इस प्रयास में उसे ऐसा लगा जैसे उसके शरीर की समस्त हड्डियां टूट जाएंगी। फिर भी यामीन ने हिम्मत न हारी।

आखिर वह बड़े यत्न से घूमकर और सिकुड़कर और टेढ़ा होकर वापस पेड़ पर सीधा होने में सफल हो गया। उसका सारा शरीर पसीने से भीग गया था। और जब वह पसीना पोंछने के लिए अपना हाथ माथे पर ले गया तो एकाएक उसके माथे से अंगूठे के बजाय पांच उंगलियोंवाला हाथ लगा और वह हर्ष से चिल्ला उठा :

"अहा, मेरे हाथ में पांचों उंगलियां उग आई हैं।"

और अब वास्तव में यामीन के दोनों हाथों पर पांच-पांच उंगलियां थीं, जैसे सभी मनुष्यों के हाथों में होती

हैं। यामीन विस्मय और हर्ष से अपने हाथों की ओर देखने लगा। फिर उसने अपने दोनों हाथ चूम लिए। ठीक उसी समय चारों ओर हल्का-हल्का गुलाबी प्रकाश फैल गया और उसके हाथों और पांवों में शक्ति आ गई, और इस प्रकाश की सहायता से वह डाल पर दौड़ता गया। यहां भी वही गुलाबी प्रकाश उसे मार्ग में दिखाई दिया। यह सात मील का मार्ग भी उसने दौड़ते-दौड़ते पूरा कर लिया।

अब वह गुफा के दूसरी ओर निकला तो उसने देखा कि वह एक ऊंचे पर्वत की चोटी पर खड़ा है। चारों ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं और पर्वतों से घिरी हुई एक सुन्दर घाटी है, ढलान पर भेड़-बकरियां चर रही हैं। फूलों, सेबों, नाशपातियों, आड़ुओं और अनारों से पेड़ लदे खड़े हैं। धरती पर घास मखमल की तरह कोमल है। धान के खेतों में पानी चांदी की भांति चमक रहा है और घाटी के बीच में एक सुन्दर किला खड़ा है। यामीन ने सोचा यही 'सोतों का नगर' होगा।

यामीन पर्वत से नीचे उतरने लगा। मार्ग में उसे एक गड़रिया मिला जो भेड़ें चरा रहा था। यामीन ने उससे पूछा :

"क्यों भई, नीचे घाटी में यह किला और बहुत-से

मकान दिखाई देते हैं; क्या यही सोतों का शहर है ?"

गड़रिये ने धीरे से कहा, "एं...गूं...गूं...क्या कहते हो ?"

यामीन ने चिल्लाकर कहा, "मैं पूछता हूं कि सोतों का शहर क्या यही है ?"

"एं...हां...आ...य...ही...है...खर...खर...।"

गड़रिया अपनी बात कहकर फिर वृक्ष से टेक लगाकर सो गया और खुर्राटे लेने लगा।

यामीन ने अपने मन में कहा, 'बड़ा अजीब गड़रिया है यह !'

आगे चला तो कुछ दूर जाकर उसने देखा कि पहाड़ी चश्मे के नीचे एक स्त्री मटका रखे बैठी है, और पास जाकर देखा तो मालूम हुआ वह बैठी नहीं है, सो रही है। मटका भरा हुआ है और वह मटके को एक हाथ से थामे बैठी सो रही है। उसकी आंखें खुली हुई हैं, परन्तु आंखें जैसे किसी वस्तु को नहीं देख रही हैं।

यामीन ने कहा, "मटका भर गया है। उठो, मैं पानी पी लूं।"

"एं !" स्त्री ने नींद में डूबी हुई आवाज़ में कहा।

यामीन चिल्लाया, "मैं कहता हूं मटका भर गया है। इसे परे हटा लो। मैं चश्मे से पानी पी लूं।"

स्त्री धीरे से उठी। धीरे से उसने मटका ऊपर उठाया, अपने सिर पर रखा और नीचे घाटी की ओर चल दी। चलते-चलते फिर ऐसा लग रहा था, जैसे वह जागते हुए नहीं, सोते हुए चल रही है—जैसे कई लोग नींद में चलते हैं। बस, वैसे वह चल रही थी।

यामीन आगे बढ़ा तो उसे दस जुलाहे खड्डियों पर काम करते दिखाई दिए। यहां भी वही हाल था। कपड़ा बुना जा रहा था, किन्तु निद्रित अवस्था में जुलाहों के हाथ-पांव काम कर रहे थे। सब ऐसे, जैसे सो रहे हों।

यामीन ने एक ताने के दो-तीन धागे तोड़ दिए तो एक जुलाहे ने बिना किसी क्रोध के धीरे से कहा :

"क्यों···तंग···कर···ते···हो···सो···जा···ओ।"

ऐसा जान पड़ता था, जैसे जुलाहों ने अफीम खा रखी है।

आगे चला तो नाशपातियों के झुण्डों को देखकर खड़ा हो गया। पकी, सुनहरी, सुन्दर नाशपातियां झुकी हुई शाखाओं से लटक रही थीं। उन्हें देखकर यामीन के मुंह में पानी भर आया। उसने एक नाशपाती को तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तो आवाज़ आई :

"एं···क्या करते हो ? मुझे सोने दो···न···।"

पहले तो यामीन ने सोचा, बड़ी विचित्र जगह है।

यहां की नाशपातियां भी सोती हैं और सोते-सोते बोलती हैं। फिर उसने सिर घुमाकर उधर-इधर देखा तो उसे पेड़ के नीचे माली आधा सोता और आधा जागता हुआ मिला।

यामीन ने माली से पूछा, "गिरजाघर किधर है।"

"वह···क्या···है?···सामने···जाओ—खर-खर।" माली उत्तर देकर फिर सो गया।

गिरजाघर की सीढ़ियों पर पादरी खड़ा था। हां, यह वह पादरी था जिसका अता-पता बूढ़े ने बताया था। उस पादरी के गले में वही क्रास का चिह्न लटक रहा था और वही लाल, जिससे राम की जान बच सकती थी।

यामीन ने सोचा कमबख्त यह पादरी भी सोता हुआ जान पड़ता है। सीधे इसकी गर्दन से लाल उतारकर ले चलो। इन सोतों के शहर में किसीसे कुछ मांगना या बात करना बेकार है। यह सोचकर यामीन ने सीधा उचककर पादरी के गले में पड़े हुए लाल को उतारना चाहा, लेकिन सहसा पादरी ने कसकर उसका हाथ पकड़ते हुए कहा :

"तुम कौन हो ?"

"अरे, तुम सोते हुए नहीं हो ?"

"नहीं तो।" पादरी ने कड़ककर उत्तर दिया।

"क्षमा कीजिए, मुझसे गलती हुई। वास्तव में रास्ते-भर जितने मनुष्य मुझे मिले, सब सो रहे थे। मैंने सोचा आपको जगाने का कष्ट क्यों मोल लूं ? अपना काम करके चलता बनूं।

"तुम्हें क्या काम है मेरे बेटे ?" पादरी ने बड़े प्यार से पूछा।

अब यामीन ने सारी राम-कहानी सुनाई और लाल की आवश्यकता बताई। फिर विनीत स्वर में कहा :

"देखिए पादरी साहब, अगर आप यह लाल नहीं देंगे तो मेरा साथी मर जाएगा।"

पादरी ने कहा, "मैं लाल तो दे सकता हूं, पर एक शर्त पर।"

"वह क्या है ?"

"तुम्हें इस लाल के बदले में बोलनेवाला शंख लाकर देना होगा।"

"बोलनेवाला शंख ? कहां से मिलेगा वह ? मेरे पास तो नहीं है !"

"मैं जानता हूं, तुम्हारे पास नहीं है। परन्तु तुम कोशिश करो तो लाकर दे सकते हो।"

"तो जल्द बताइए, शंख कहां है ?"

पादरी ने हाथ फैलाकर कहा, " नीचे घाटी में वह

जो किला है न, उसमें सात दानव रहते हैं। इस घाटी पर उन्हीं दानवों का राज्य है। उन दानवों ने इस घाटी के लोगों को सोते-जागते के चक्कर में फंसा रखा है, अर्थात् सारी घाटी के लोग इतने सोए हुए होते हैं कि कोई काम न कर सकें, और न इतने जागते हुए होते हैं कि अपना भला-बुरा सोच सकें। बस, इस अवस्था में इन लोगों को छोड़कर दानव लोग अपने किले में बड़े आराम से ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। घाटी के समस्त लोग उनका काम करते हैं और दानव लोग जो उन्हें दे देते हैं, प्रसन्नता से स्वीकार कर लेते हैं और काम किए जाते हैं।

पादरी कुछ कहकर फिर बोला, "उन्हें मालूम नहीं है कि वे दानवों के गुलाम हैं। वे अब मनुष्य नहीं रहे, सोई हुई भेड़ें बन चुके हैं। मैं उन्हें इस नींद से जगाना चाहता हूं।"

"किन्तु उस बोलनेवाले शंख से क्या होगा ?"

जिस समय वह शंख मेरे हाथ आ जाएगा और मैं उसे फूंक-फूंककर बजाना आरम्भ करूंगा, उस समय उसकी आवाज़ सुनते ही यह सारी घाटी और इसके सारे लोग जाग उठेंगे। उस समय दानवों का राज्य समाप्त हो जाएगा। शंख की आवाज़ में लोगों के लिए जीवन है और दानवों के लिए मृत्यु है। बस, इधर ये लोग जगने

आरम्भ हुए, उधर दानव लोग मरने शुरू होने लगेंगे। उसकी आवाज़ सुनकर दानवों के कान फट जाएंगे, उनके दिमाग़ फट जाएंगे, वे मर जाएंगे, और सारी घाटी आज़ाद हो जाएगी। इसीलिए तो उन दानवों ने उस शंख को अपने पास बड़ी सावधानी से रखा है और दिन-रात पहरा देते रहते हैं।"

"तो फिर मैं कैसे उसे प्राप्त कर सकता हूं। मैं तो एक साधारण-सा लड़का हूं, पादरी साहब।"

"यदि तुम मुझे वह शंख लाकर नहीं दोगे, तो मैं तुम्हें यह लाल नहीं दूंगा।" पादरी यह कहकर गिरजे के भीतर घुस गया।

दिन ढलता जा रहा था, शाम हो रही थी। यामीन बहुत घबराया। क्या करे, क्या न करे। यदि उसे लाल अभी मिल जाता तो वह अभी वापस हो सकता था। कल दूसरा दिन आरम्भ हो जाएगा और बूढ़े ने कहा था कि यदि वह तीन दिन में वापस लौट आएगा तो राम की जान बच जाएगी, वरना नहीं।

बहुत देर सोचने के पश्चात् यामीन ने किले के भीतर घुसकर बोलनेवाला शंख चुराने का फैसला कर लिया।

वह घाटी से उतरकर शहर की गलियों में घूमता रहा और जब रात का अंधेरा भली प्रकार चारों ओर

फैल गया तो उसने किले की ओर रुख किया। किले के चारों ओर एक गहरी खाई थी, जिसमें पानी भरा हुआ था। क़िले के बड़े फाटक के सामने एक लकड़ी का पुल था, जो दानवों की इच्छा से खाई के आर-पार लगाया जा सकता था।

यामीन मौक़े की बाट जोहने लगा। थोड़ी देर के बाद उसने देखा शहर के कुछ लोग धीरे-धीरे चलते हुए आए और खाई के उस पार आकर खड़े हो गए। उन लोगों ने अपनी पीठ पर सामान लादा हुआ था। किसीके हाथ में सब्ज़ियां और फल थे; कोई गेहूं लाया था, कोई चावल; जुलाहे कपड़े लाए थे और गड़रिये भेड़ें और बक-रियां। वे लोग खाई के उस पार सारा सामान रखकर वापस चले गए। वहां केवल चार आदमी खड़े रह गए थे— दो युवतियों और दो युवक। चारों बहुत ही सुन्दर थे।

यामीन ने उनसे पूछा, "तुम यहां क्यों खड़े हो?"

"हमको खाया जाएगा।" एक लड़की ने कहा।

"तुमको खाया जाएगा?" यामीन ने भयभीत होकर पूछा।

"हां।" एक लड़का बोला, "हम चारों को आज दानव लोग खाएंगे।"

"और तुम ऐसे मजे में धीरे-धीरे सोए हुए बातें कर

रहे हो, जैसे तुम दावत में जा रहे हो।"

"हां, दावत ही तो है।" तीसरी लड़की ने कहा।

"परन्तु यह तो तुम्हारे जीवन-मरण का सवाल है ? तुम्हें तो लड़ना चाहिए।"

"दानवों से कौन लड़ सकता है ?" चौथे युवक ने कहा, "यह तो हमारा भाग्य है कि आज हमें खाया जाएगा। आखिर हम भी तो भेड़-बकरियां खाते हैं !"

"परन्तु तुम भेड़-बकरियां नहीं हो, तुम मनुष्य हो।"

"तो क्या हुआ।" पहला लड़का रुक-रुककर बोला, "दानव लोग कहते हैं कि मनुष्य का रक्त पीने में बड़ा आनन्द आता है।"

"लेकिन···लेकिन···।" यामीन इतना चकरा गया कि कुछ न कह सका। वे चारों युवक-युवतियां बड़े आराम से खाई के किनारे खड़े अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। इतने में खाई पर धीरे से एक लकड़ी का ऊंचा पुल नीचे आ लटका और खाई के ऊपर बिछ गया। फिर क़िले के ऊंचे फाटक खुले और भीतर से एक दानव लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ बाहर आया।

यामीन उसे देखकर शीघ्रता से भेड़ों में घुस गया। दानव ने आकर सारे अनाज, सब्ज़ियां, फल, चारों युवक-युवतियों, भेड़ों, बकरियों को अपनी बड़ी चादर के एक

कोने में बांध लिया और अपने कन्धे पर डालकर क़िले के अन्दर चला गया।

क़िले के भीतर जाकर वह सीधा रसोईघर में घुस गया, जहां बड़े-बड़े चूल्हे जल रहे थे। दानव ने अनाज को अलग रखा, सब्जियों को अलग रखा, भेड़-बकरियों को अलग रखा और यामीन को हाथ में उठाकर चारों युवक-युवतियों के साथ ऐसे बांध दिया, जैसे रसोइया साग की एक गड्डी को धागे से बांध देता है।

"हा...हा...हा...। आज हमारी जनता ने चार के बजाय पांच आदमी हमारे भोजन के लिए भेजे हैं।" दानव प्रसन्नता से गरजा और बाकी दानवों को यह सुखद सन्देश सुनाने चला गया।

जब दानव चला गया तो यामीन ने बाकी साथियों से कहा :

"आओ, इस रस्सी को तोड़ डालें और बाहर भाग चलें।"

"भागकर कहां जाओगे। अपने भाग्य से बचकर मनुष्य किधर जा सकता है ?" वे चारों बोले। यामीन रस्सी को तोड़ने का यत्न करने लगा। इतने में दानव बाकी साथियों को लेकर आ गया। ये सब यामीन को देखकर बड़े प्रसन्न हुए।

"हमारी प्रजा समझदार होती जा रही है।" एक दानव बोला। उसके सिर पर सफ़ेद सींग उगे हुए थे।

"हां, कल से आप इन्हें आज्ञा दीजिए कि हर रोज़ पांच आदमी हमारे खाने के लिए भेजा करें।" सफ़ेद सींगवाले दानव ने काले सींगवाले दानव से कहा।

काले सींगवाले दानव ने रसोई में खाना पकानेवाले दानव से कहा, "अब जल्दी से खाना तैयार कर डालो; सबसे पहले इनको पका डालो।" दानव ने यामीन और दूसरे साथियों की ओर संकेत करते हुए कहा।

"बहुत अच्छा।"

दानव ने रस्सी खोल दी और यामीन और दूसरे युवक-युवतियों को साफ करने के लिए एक डोल में डाल दिया और खुद छुरी लेने के लिए दूसरे कमरे में चला गया।

यामीन ने अपने साथियों से कहा, "आओ, यहां से भाग चलें, मौत सिर पर मंडरा रही है।"

"अरे भई, हमें मरने दो न, आराम से सोने दो न।" उन चारों ने बड़े थके हुए स्वर में कहा।

यामीन हिम्मत करके जो डोल में से उछला तो एक मछली की भांति तड़पकर नीचे फर्श पर आ गया, और वहां से तेज़ी से भागकर बड़े-बड़े बर्तनों की पंक्तियों के पीछे से होता हुआ, रसोई से बाहर निकल गया और

एक अंधेरी सीढ़ी के नीचे जाकर छिप गया।

थोड़ी देर में भाग-दौड़ शुरू हो गई। दानव उसे ढूंढ़ने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे। एक-एक कमरे में से सामान उठाकर पटका जा रहा था और यामीन सीढ़ी के नीचे छिपा हुआ अपने जीवन की घड़ियां गिन रहा था।

एकाएक सीढ़ियों के ऊपर दानवों की बातचीत सुनाई दी :

"आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ।"

"सफ़ेद सींगवाला कहां है ?"

"वह शंखवाले कमरे के बाहर पहरा दे रहा है।"

"उसे बुलाओ न, उसकी नाक तो मानुस-गन्ध को बहुत जल्दी सूंघ लेती है। ज़रा देर में क्या हो जाएगा, शंख तो ताले के अंदर है।"

"अच्छा बुलाता हूं।"

एक दानव वापस गया। दूसरा दानव सीढ़ियों के ऊपर सफ़ेद सींगवाले दानव को बुलाने गया।

यामीन शीघ्रता से पग बढ़ाकर धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ने लगा। उसका विचार था कि इस अवसर पर दानव पलटकर नहीं देखेगा। उसका यह विचार ठीक निकला। दानव धम्म-धम्म चलता हुआ सफ़ेद सींगवाले दानव के पास गया जो शंखवाले कमरे के बाहर पहरा दे रहा था।

सफ़ेद सींगवाला दानव उस दूसरे दानव को देखते ही बोला :

"मानस-गन्ध, मानस-गन्ध ।"

"कहां है मानस-गन्ध ?" दूसरे दानव ने बड़े कड़े स्वर में कहा, "इसीलिए तो मैं यहां आया हूं । वह पांचवां मनुष्य भाग गया है, नीचे चलो उसे ढूंढ़ें ।"

"पर यह शंख ?"

"यहां, मैं पहरा देता हूं ।"

दानव घूमा । यामीन भी उसके साथ-साथ घूम गया । सफ़ेद सींगवाला बोला, "मुझे तुमसे मानस-गन्ध आती है ।"

"कहां से आती है ? मेरी जेब टटोलकर देख लो । मैंने किसी आदमी को नहीं छिपा रखा ।"

सफ़ेद सींगवाले दानव ने उसकी जेबें टटोलनी आरम्भ कर दीं । पीछे से यामीन भागकर शंखवाले कमरे में चला गया । जब सफ़ेद सींगवाले को काले सींगवाले दानव की जेबों से मनुष्य नहीं मिला तो उसने शंखवाले कमरे को ताला लगा दिया और चाबी जेब में रखकर दूसरे दानव के साथ रसोईघर में चला गया ।

इधर यामीन ने द्वार बन्द होते देखकर ज़रा चैन का सांस लिया और इधर-उधर देखा । कमरे के चारों ओर

बड़े-बड़े पिंजरे लटके हुए थे, जिनमें गानेवाले सुरीली आवाज़ के पक्षी बन्द थे—बुलबुल, मैना, तोते आदि। सब अपनी-अपनी बोलियां बोल रहे थे और राग सुना रहे थे। कमरे के बीच एक बहुत बड़ी मेज़ पर मखमल के कपड़े के ऊपर बोलनेवाला शंख जगमग-जगमग कर रहा था। यामीन भागकर मेज़ की ओर गया और प्रसन्नता से चिल्लाया—"अब राम की जान बच गई।" यामीन ने सोचा इस शंख को उठाकर बजाना आरम्भ कर दूंगा तो उसकी आवाज़ से दानव लोगों के दिमाग़ फट जाएंगे और फिर सारी घाटी जाग उठेगी।

यह सोचकर यामीन ने शंख को हाथ लगाया ही था कि एक आवाज़ आई—"ख़बरदार।"

यामीन ने पहले तो इधर-उधर देखा। उसने सोचा, शायद किसीने देख लिया है। थोड़ी देर इधर-उधर देखने के बाद उसने फिर शंख को हाथ लगाया तो फिर आवाज़ आई:

"ख़बरदार, जो मुझे हाथ लगाया।"

यामीन बड़ा विस्मित हुआ—"तो आप बोलते हैं?"

"हां, शंख का काम है बोलना, मैं क्यों न बोलूं?"

"परन्तु आपको तो, मेरा मतलब है शंख को, लोग मुंह से बजाते हैं, परन्तु आप तो स्वयं ही बोलते हैं।"

"हां, मैं स्वयं ही बोलता हूं।"

"तो चलिए, मैं आपको अपने हाथों में उठाए लेता हूं, आप बोलना आरम्भ कीजिए—ज़ोर-ज़ोर से ताकि दानवों के दिमाग़ फट जाएं।"

"अच्छा, उठाओ मुझे।"

यामीन ने शंख को उठाने का प्रयास किया पर शंख बहुत भारी था, यामीन से उठाया न गया।

"आप तो बहुत भारी हैं!"

"तो मैं क्या करूं?"

"आप यहीं से बोलना आरम्भ कर दीजिए।"

"नहीं!" शंख बोला, "जब तक कोई मनुष्य मुझे उठाकर अपने मुंह तक न ले जाएगा, मैं नहीं बोल सकता।"

यामीन बोला, "मैं तो उठा नहीं सकता।"

"तो मैं बोल नहीं सकता।"

"आप बहुत भारी हैं, शंख तो इतने भारी नहीं होते। सीप का शंख तो बड़ा हल्का होता है।" यामीन ने कहा।

"मैं कोई साधारण शंख नहीं हूं।" शंख ने उत्तर दिया, "मैं लोगों को जगानेवाला शंख हूं और अत्याचारी दानवों का संहार करनेवाला शंख हूं। मुझे उठाने के लिए शक्ति चाहिए।"

"किन्तु मैं तो एक साधारण लड़का हूं।" यामीन ने उदासी से कहा, "क्या आपका वजन किसी प्रकार कम नहीं हो सकता ?"

"हो सकता है।" शंख बोला, "परन्तु इसके लिए तुम्हें फिर से पेड़ पर जाना होगा और तीन मील ऊपर चढ़कर जब एक बड़ी डाल आएगी···"

"बाईं ओर या दाईं ओर ?" यामीन ने बात काट-कर पूछा।

"दाईं ओर···तो उस डाली पर तीन मील चलकर एक हीरों से जड़ा हुआ द्वार आएगा। द्वार के अंदर चले जाना, किन्तु खबरदार ! द्वार को हाथ न लगाना। अंदर जाओगे तो दो सौ गज ऊंची सीढ़ी मिलेगी। सीढ़ी के ऊपर चढ़ते जाना। खबरदार जो सीढ़ियों के दोनों ओर की सोने की दीवारों को हाथ लगाया। सीढ़ी पर चढ़कर एक बड़ा कमरा मिलेगा। उस कमरे की प्रत्येक वस्तु सोने की होगी। उस कमरे के अंदर जो मनुष्य होगा उसका शरीर भी सोने का होगा। उस मनुष्य के पास एक कौआ होगा और कौए की चोंच में चांदी की एक डिबिया होगी। उस डिबिया के भीतर गुलाब का एक फूल है।"

"गुलाब का फूल ?"

"हां, गुलाव का फूल ; और उस गुलाव के फूल में यह गुण है कि वह फूल कभी नहीं मुरझाता, सदा ताज़ा और सुगन्धित रहता है। यदि तुम उस मनुष्य से वह फूल ले आओ और मुझसे छुआ दो तो मैं हल्का हो जाऊंगा। फिर तुम मुझे अपने हाथों में उठा लेना और मैं अत्याचारी दानवों का संहार कर दूंगा···शी·· देखो वह द्वार खुला।"

यामीन शीघ्रता से मुड़ा, किन्तु दानव ने द्वार खोल लिया था और यामीन को देख लिया था। सफ़ेद सींग-वाला एक प्रसन्नता-भरी चीख मारकर यामीन को अपनी मुट्ठी में कुचलनेवाला ही था कि शंख ने धीरे से कहा :

"दानवजी महाराज, इस वच्चे को छोड़ दीजिए।"

"क्यों ?"

"यह आपकी घाटी का वच्चा नहीं है, यह बाहर से आया है। यह सोते मनुष्यों का वच्चा नहीं है, यह जागते हुए मनुष्यों का वच्चा है। मैं इससे वातें करूंगा तो मेरा मन वहला रहेगा। मेरा कहना मानिए तो इसे एक पिंजरे में वन्द करके मेरे निकट रख दीजिए। मेरा मन इससे वातें करने को चाहता है।"

"पर मेरा मन इसको खाने को चाहता है।"

"मेरा जी जब इससे बातें कर भर जाएगा, तब आप इसे खा लीजिएगा।"

"हां, यह ठीक है।" दानव बोला।

दानव ने यामीन को एक बड़े पिंजरे में इस प्रकार बन्द कर दिया, जिस प्रकार हम लोग एक तोते को या मैना को बन्द कर देते हैं, और उसको शंख के सामने रख दिया और फिर द्वार बन्द करके ताला लगाकर चला गया।

९

जब दूसरा दिन बीत गया और यामीन नहीं आया तो राजकुमारी बहुत चिन्तित हुई और बाबा से कहने लगी, "जरा जादू के शीशे में देखो यामीन कहां है ?"

बाबा ने शीशे के तार जोड़े तो शीशे की सतह पहले तो धुंधली हो गई, जैसे चारों ओर से तूफ़ान उठ रहा हो, फिर थोड़ी देर के बाद स्वयं ही साफ़ हो गई। अब शीशे में एक पिंजरा लटका हुआ दिखाई दे रहा था। इस पिंजरे में यामीन बन्द था।

"यामीन !" राजकुमारी ज़ोर से चिल्लाई।

यामीन ने एक हाथ पिंजरे से बाहर निकालकर कहा, "राजकुमारी, मुझे बचाओ।" राजकुमारी ने यामीन का हाथ पकड़ने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया कि एकदम शीशे में अंधेरा छा गया और यामीन शीशे की सतह से अदृश्य हो गया।

राजकुमारी निराश होकर बाबा की ओर पलटी और रो-रोकर गिड़गिड़ाई :

"मैं आपके पांव पड़ती हूं, किसी प्रकार यामीन को बचा लीजिए।"

बूढ़े बाबा ने कहा, "यामीन एक ही तरीके से बच सकता है।"

"वह क्या है ?"

"यदि कोई सोतों के शहर के दानवों को मार दे।" बूढ़े ने कहा।

उन दानवों को मारने की क्या युक्ति हो सकती है ?" राजकुमारी ने पूछा।

"उन दानवों के प्राण एक पहाड़ी कौए में हैं, और उस कौए का पिंजरा सोतों के शहर से सौ मील की दूरी पर एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर एक बहुत बड़े क़िले के भीतर लटका हुआ है। यदि कोई उस कौए को मार दे और उसकी चोंच में दबी हुई चांदी की डिबिया को खोलकर उसमें से गुलाब के फूल को बोलनेवाले शंख के ऊपर रख दे तो यामीन का पिंजरा स्वयं ही खुल जाएगा और शंख आसानी से उठाकर पादरी को दिया जा सकता है, और पादरी के गले का लाल लेकर यदि तुम आज सूरज छिपने के पहले-पहले यहां पहुंच जाओगी तो राम को जान भी बच सकती है, नहीं तो नहीं।"

राजकुमारी रोने लगी, और बोली, "यह सब कुछ

तो एक दिन में क्या एक सप्ताह में भी नहीं हो सकता।

बाबा ने उसे हिम्मत दिलाई और बोला, "यदि तू कोई राजकुमारी है तो वास्तव में इस काम को नहीं कर सकती। लेकिन अगर तू डबलरोटीवाले की लड़की है तो इस काम को तू अवश्य कर सकती है।"

राजकुमारी बोली, "मैं सचमुच डबलरोटीवाले की लड़की हूं।"

"तो मेरी यह छड़ी ले जा।" बाबा ने अपनी पंखोंवाली छड़ी उसके हाथ में देकर कहा, "इस समय पैदल चलने से काम नहीं चलेगा। इस छड़ी पर घोड़े की भांति सवारी कर सकती हो। जितनी देर तक तू इसके पंखों पर हाथ रखे रहेगी, यह छड़ी वायु में उड़ती चली जाएगी। जब इसके पंखों से हाथ हटाएगी तो यह छड़ी स्वयं ही वायु में उड़ना बंद कर देगी और धरती पर उतर आएगी।"

राजकुमारी ने छड़ी पर सवार होकर कहा, "चलो मुझे पहाड़ी कौए के पिंजरे के पास ले चलो।"

इतना सुनते ही छड़ी के पंख ज़ोर-ज़ोर से फड़फड़ाने लगे। कुछ क्षणों के बाद राजकुमारी वायु में उड़ी जा रही थी। उलटे पेड़ की शाखाएं मीलों तक उसकी दृष्टि के नीचे जा रही थीं। कुछ देर के पश्चात् छड़ी एक ओर को

मुड़ गई। अब छड़ी एक गहरी खंदक से गुज़र रही थी, वहां से निकलकर छड़ी एक गहरी गुफा में घुस गई। राजकुमारी को बहुत भय लगा। परन्तु राजकुमारी बड़ी मज़बूती से छड़ी के पंखों पर हाथ रखे बैठी रही।

थोड़ी देर के बाद छड़ी सोतों के शहर की घाटी के ऊपर उड़ रही थी—ऊपर और ऊपर। छड़ी बादलों में अदृश्य हो गई। अब चारों ओर धुन्ध ही धुन्ध थी। बादल इधर-उधर आते-जाते और भैंसों की भांति एक-दूसरे से टकरा जाते। बिजली कड़कती और बादल गरजने लगते। राजकुमारी के सारे कपड़े पानी में भीग गए, किन्तु राजकुमारी छड़ी के पंखों पर हाथ रखे बैठी रही। अन्त में छड़ी बादलों से भी ऊंची उड़ने लगी और राजकुमारी ने देखा कि बादलों से भी ऊंचा एक पर्वत है। इस पर्वत पर न कोई पेड़ है, न घास, न झाड़ियां। बस, चारों ओर बर्फ ही बर्फ पड़ी है और बड़ी चट्टानों के ऊपर कहीं-कहीं मनुष्यों के पिंजर और हड्डियां बिखरी पड़ी हैं। और ये पिंजर पहाड़ की ढलानों से लेकर उसकी चोटी तक बिखरे पड़े हैं। छड़ी अब पर्वत की चोटी की ओर बढ़ रही थी।

पर्वत की चोटी पर एक अति सुन्दर क़िला था, जो सोने की भांति दमकता हुआ दिखाई देता था। जब राजकुमारी क़िले के निकट पहुंची तो उसने देखा कि सचमुच

क़िला सोने का वना हुआ है । ईंट, दीवारें, पत्थर की सीढ़ियां, खिड़कियां—प्रत्येक वस्तु सोने की वनी हुई है । सबसे ऊंचे वुर्ज पर ज़री के परदे सरसरा रहे थे । इस वुर्ज की छत से एक सोने की ज़ंजीर लटक रही थी । इस ज़ंजीर से एक पिंजरा लटक रहा था । इस पिंजरे में एक कौआ अपनी चोंच में चांदी की एक छोटी-सी डिविया दवाए वैठा था । वुर्ज के फर्श पर चारों ओर भयानक शेर मुंह खोले वैठे थे । राजकुमारी को देखकर वे दहाड़ने लगे ।

राजकुमारी ने भयभीत होते हुए कहा, "छड़ी, ऊपर उड़ो ।

छड़ी क़िले के विल्कुल ऊपर उड़ने लगी । राजकुमारी कुछ सोचने लगी । थोड़ी देर वाद राजकुमारी ने छड़ी से कहा, "मुझे क़िले के द्वार पर ले चलो ।"

छड़ी चक्कर काटती हुई नीचे उतरने लगी । जब वह क़िले के द्वार पर पहुंची तो राजकुमारी ने उसके पंखों पर से हाथ हटा लिया । छड़ी एकदम क़िले की सीढ़ियों पर रुक गई और राजकुमारी ठोकर खाते-खाते वची । छड़ी को हाथ में लिए राजकुमारी सीढ़ियां चढ़ती हुई क़िले के द्वार पर आई और उसने देखा कि द्वार खुला था ।

राजकुमारी क़िले के भीतर जाकर इधर-उधर देखने

लगी, कहीं कोई मनुष्य दिखाई नहीं देता था।

"कोई है ?" राजकुमारी ज़ोर से चिल्लाई।

"कोई है, कोई है।" राजकुमारी की आवाज़ गेंद की भांति टकराकर वापस आई और फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया।

राजकुमारी डरते-डरते आगे बढ़ी। बड़े हाल से गुज़रकर ऊंची सीढ़ियों की एक लम्बी पंक्ति आती थी, जिसके ऊपर बहुत-से मनुष्यों के पिंजर पड़े थे। राजकुमारी ये सीढ़ियां भी चढ़ गई। सीढ़ियों के ऊपर का द्वार बन्द था। राजकुमारी ने हाथ से ज़ोर लगाकर द्वार खोलना चाहा किन्तु द्वार न खुला। इसी प्रयत्न में अचानक छड़ी द्वार से छू गई। छड़ी के छूते ही द्वार चररर करके स्वयं ही खुल गया। राजकुमारी धीरे-धीरे भीतर गई। यह एक बहुत बड़ा कमरा था। छत पर हीरे-जवाहरात के झाड़-फानूस लटक रहे थे। सोने की दीवारों में बहुत ही सुन्दर कटी हुई बारीक-बारीक सोने की जालियां थीं, जिनसे धीमा-धीमा प्रकाश छनकर आ रहा था। राजकुमारी के क़दम उस अत्यन्त सुन्दर द्वार पर आकर रुक गए जो सारा नीलम का बना हुआ था। राजकुमारी ने देखा, कमरे में कोई न था।

राजकुमारी ने चिल्लाकर कहा, "कोई है ?"

"कोई है, कोई है।" राजकुमारी की आवाज़ गुम्वद की प्रतिध्वनि की भांति टकराकर चारों ओर से आई। फिर थोड़ी देर के वाद चारों ओर से क़हक़हों की आवाज़ आने लगी।

"हा, हा, हा, किसको ढूंढ़ती हो? हा, हा, हा, कोई है? अरे भई, यहां सव कोई है। तुम किसको ढूंढ़ती हो? हा, हा, भीतर आ जाओ।"

राजकुमारी डरते-डरते द्वार के भीतर गई। इस कमरे में एक पूरा पेड़ सोने का वना हुआ था। इसकी टहनियों में जवाहरात जगमग-जगमग कर रहे थे। सोने की दीवारों में जाले लगे हुए थे किन्तु वे भी सोने के थे। धरती पर मिट्टी पड़ी हुई थी। मेज़, कुर्सियां, फूल-दान प्रत्येक वस्तु सोने की थी, किन्तु धूल से अटी पड़ी थी। राजकुमारी ने हाथ लगाकर देखा, यह धूल भी सोने की थी।

एक सुनहरी विस्तर पर एक लड़की लेटी हुई थी; उसके सुनहरे केश, सुनहरे कपोल, होंठों की सुनहरो चमक से वह विल्कुल सोने की प्रतिमा प्रतीत होती थी। वह चुपचाप सोई पड़ी थी।

राजकुमारी ने उसे जगाना चाहा, किन्तु जव उसे झंझोड़ने के लिए हाथ लगाया तो उसे यह जानकर वड़ा

आश्चर्य हुआ कि वह लड़की सारी की सारी सोने की थी। उस लड़की के निकट आरामकुर्सी पड़ी थी। उस-पर एक बूढ़ा आदमी लेटा था। राजकुमारी ने चिल्ला-कर कहा :

"बापू !"

किन्तु नहीं, यह उसका पिता नहीं था। यद्यपि पहले उसे अपना पिता जान पड़ा। राजकुमारी ने एक पग आगे बढ़ाया तो उसे यह बूढ़ा जौहरी मालूम हुआ।

"जौहरी !" राजकुमारी चिल्लाई और पीछे हटी, क्योंकि अब उसे इस बूढ़े के चेहरे में अपने नीलाम करने-वाले अत्याचारी मनुष्य का चेहरा दिखाई दे रहा था।

"अत्याचारी, अन्यायी !" राजकुमारी भय के मारे पीछे हटकर चीखी।

"घबराओ नहीं।" किसीने समीप से हंसकर कहा, "यह मनुष्य तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। यह तो सारे का सारा सोने का बना हुआ है।"

राजकुमारी ने पलटकर इधर-उधर देखा, परन्तु उसे कहीं पर कोई मनुष्य दिखाई न दिया।

राजकुमारी ने चिल्लाकर कहा, "तुम कौन हो? कहां छिपे खड़े हो? सामने आकर बात करो।"

"मैं यहां तुम्हारे सामने तो बैठा हूं।"

"कहां ?" राजकुमारी ने जल्दी से पूछा।

"यहां, तुम्हारे सामने।" आवाज़ आई।

किन्तु राजकुमारी के सामने तो कुछ भी न था। बस उसके पास एक सोने की तिपाई पर एक सितार रखा हुआ था, जिसके तार स्वयं ही हिलते हुए प्रतीत होते थे।

"क्या तुम बोलते हो ?" राजकुमारी ने विस्मित होकर पूछा।

"हां, मैं ही बोलनेवाला सितार हूं।" सितार ने कहा।

"तो यह सब क्या किस्सा है, भाई ?"

सितार ने हंसकर कहा, "सितार भी कभी भाई हो सकता है ? मैं तो एक बेजान सितार हूं।"

"यह लड़की कौन है ?" राजकुमारी ने शीघ्रता से पूछा।

"यह लड़की इस बूढ़े की बेटी है।"

"यह तो सोने की है। इसको क्या हुआ ?"

"हां, इस क़िले के अन्दर की हरएक वस्तु सोने की है। मुर्गियां सोने की हैं और सोने के अण्डे देती हैं; फ़ुवारे सोने के हैं और सोने का पानी उछालते हैं; पेड़, फूल, फल, पत्ते—यहां सब वस्तुएं सोने की हैं। यहां तक कि यदि तुम इस कमरे के भीतर रोटी पकाओ तो वह

भी तवे पर पड़ते ही सोने की हो जाएंगी।"

राजकुमारी ने बड़े आश्चर्य से पूछा, "ऐसा क्यों है?"

"यह बूढ़ा जो कुर्सी पर पड़ा है न"—सितार ने कहा—"अपने समय का बहुत बड़ा अत्याचारी मनुष्य था। पारसपत्थर इसीका आविष्कार है।"

"पारसपत्थर क्या होता है?" राजकुमारी ने शीघ्रता से पूछा।

"इस बूढ़े के दायें हाथ की छोटी अंगुली में पड़ी सोने की अंगूठी में जो नग तुम देखती हो न, यही पारस-पत्थर है। यह पत्थर जिस वस्तु से छू जाएगा, वही सोने की हो जाएगी।"

राजकुमारी आगे बढ़ी सितार ने चिल्लाकर कहा:

"हाथ लगाओगी तो सोने की हो जाओगी।"

राजकुमारी पीछे हट गई और बोली, "पर यह आदमी तो ज़िंदा है; इसका दिल तो धड़क रहा है।"

"हां।" सितार ने कहा, "इसका सारा शरीर सोने का हो चुका है, परन्तु दिल सोने का नहीं हुआ। इसीलिए यह अभी तक जीता है।"

"इसका दिल क्यों सोने का नहीं हुआ?" राजकुमारी ने फिर प्रश्न किया।

पहले-पहल तो इसे सोने से बड़ा प्रेम था। हर वस्तु को नग के पारसपत्थर से छुआकर सोने का बना देता था। ऐसे ही मैं भी किसी समय एक साधारण लकड़ी का सितार था। अब सोने का हूं और बहुत भारी हो गया हूं। बातें करते-करते तार दुखने लगते हैं...तो हां, मैं क्या कह रहा था ?"

"तुम यही कह रहे थे कि मनुष्य बड़ा अत्याचारी था और अपने पारसपत्थर से छुआकर हर वस्तु को सोना कर दिया करता था।"

"हां, एक दिन जब इसने ग़लती से अपनी बेटी को पारस पत्थर से छू लिया और इसकी बेटी सोने की हो गई, तो उस दिन से इस मनुष्य को सोने से घृणा हो गई। इसने सब प्रकार के यत्न किए कि सोने की बनी हुई इसकी बेटी फिर से हाड़-मांस की लड़की बन जाए, परन्तु इसको सफलता नहीं मिली। क्योंकि किसी वस्तु को सोने में बदल देना आसान है, परन्तु सोने को हाड़-मांस में बदलना बिलकुल असम्भव है। इसलिए जब यह अपनी बेटी को जीवित करने में सफल न हुआ तो इसने अपने-आपको भी पारसपत्थर से छुआ लिया और सोने का हो गया। किन्तु इसके दिल में सोने से घृणा उत्पन्न हो गई थी, इसलिए इसका दिल अभी तक भीतर से मांस का है और

ज़िन्दगी की भांति हर घड़ी धड़कता है। हां, अब तुम बताओ कि तुम यहां क्यों आई हो? क्या पारसपत्थर की खोज में? रास्ते में क्या हज़ारों लालची मनुष्यों के पिंजर नहीं देखे, जो इस पारसपत्थर की खोज में इधर आए और रास्ते में मर गए।"

"देखे हैं।" राजकुमारी ने कहा, "किन्तु मुझे तुम्हारा पारसपत्थर नहीं चाहिए, मुझे पहाड़ी कौआ चाहिए।"

'पहाड़ी कौए पर शेरों का पहरा है, और यह शेर केवल एक बूढ़े का कहा मानते हैं, जो इस कुर्सी पर तुम्हारे सामने मूर्छित लेटा है। पहाड़ी कौए को पकड़ने का कोई उपाय नहीं, बस एक है।"

"वह क्या है?" राजकुमारी ने शीघ्रता से पूछा।

"यहां आसपास, कहीं से पानी ला सकती हो?"

"पानी? पानी की पहाड़ों पर क्या कमी हो सकती है?" राजकुमारी बोली, "रास्ते में मैंने चट्टानों पर चारों ओर बर्फ़ देखी है।"

"पगली, वह सोने की बर्फ़ है। इस पहाड़ पर जितने झरने हैं, वे सब सोने के हैं। उनमें पानी के बजाय सोना पिघलकर बहता है। इस पर्वत पर सब कुछ है, पर पानी नहीं है।"

पानी को लेकर क्या करोगे ?"

"अगर तुम कहीं से पानी ले आओ, वस सादा पानी, और उसे इस आदमी पर और इसकी वेटी पर छिड़क दो तो ये दोनों फिर से जी उठेंगे। अपने सोने के शरीर को त्यागकर फिर से हाड़-मांस के मनुष्य वन जाएंगे। फिर तुम इस वूढ़े से पहाड़ी कौआ मांग सकती हो क्योंकि तुम इसके प्राण वचाओगी, इसलिए यह तुम्हें इसके वदले में पहाड़ी कौआ ज़रूर दे देगा।"

"तुम क्यों इस वूढ़े की इतनी तरफ़दारी करते हो ?"

"इसलिए कि यह अपना अपराध स्वीकार कर चुका है, और मैं एक कोमल-हृदय सितार हूं; और मैं फिर गाना चाहता हूं। एक समय था जव मैं लड़की का सितार था और यह सुन्दर लड़की अपनी प्यारी-प्यारी उंगलियां मेरे वक्ष पर फेरकर ऐसे-ऐसे राग अलापा करती थी कि क्या वताऊं। मैं उन दिनों को फिर से वापस लाना चाहता हूं, जव मेरे वक्ष से राग फूटकर निकलते थे। अव मैं वोल सकता हूं, गा नहीं सकता।"

"क्यों नहीं ?"

"गाने के लिए सुन्दर उंगलियों की आवश्यकता है—जीवित उंगलियों की आवश्यकता है। और इस जीवन के लिए सोने की नहीं, सादे पानी की आवश्यकता

है। क्या तुम कहीं से पानी नहीं ला सकतीं। यदि तुम पानी ले आओ तो मैं तुम्हें इसके बदले पारसपत्थर, सोने के उबलते हुए झरने, सोने की मुर्गियां और यह सारा का सारा क़िला दे सकता हूं।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिए।" राजकुमारी बोली—"मैं केवल पहाड़ी कौआ चाहती हूं।"

और यह कहकर राजकुमारी छड़ी पर सवार हो गई। इसके पंखों पर हाथ रखकर बोली, शीघ्रता से किसी सादे पानी के झरने पर ले चलो।"

छड़ी के पंख फड़फड़ाए। कुछ क्षणों में छड़ी फिर से वायु में उड़ी चली जा रही थी। थोड़ी देर में वह अंधेरे में सफ़र करने लगी। फिर घूमघामकर बादलों में चक्कर खाती हुई एकाएक एक हरी-भरी घाटी में जा उतरी। यहां हरी-हरी घास उगी हुई थी और हरे-भरे पेड़ खड़े थे और दो चट्टानों को चीरकर एक सुन्दर झरना नीचे घाटी में गिर रहा था।

नीचे बहुत-सी स्त्रियां घड़ियां लिए पानी भर रही थीं। राजकुमारी ने शीघ्रता से पानी से भरी हुई एक घड़िया उठा ली और इससे पहले कि घड़िया की मालिक स्त्री चिल्लाती, वह छड़ी पर सवार होकर उड़ गई। स्त्रियां हैरान होकर देखने लगीं। कई तो मूर्छित होकर

गिर पड़ीं।

राजकुमारी छड़ी पर सवार होकर वापस क़िले में पहुंची। मार्ग में जहां-जहां वह पिंजरों पर पानी छिड़कती गई, मरे हुए ज़िन्दा होकर उसका अभिवादन करने लगे।

क़िले के भीतर पहुंचकर उसने सबसे पहले बूढ़े पर पानी छिड़का। बूढ़ा फिर से जीवित हो गया। राजकुमारी ने फिर बूढ़े की सुन्दर बेटी पर पानी छिड़का; वह भी जीवित हो गई और अपने पिता के गले लगने को आगे बढ़ी कि किसीने कहा :

"खबरदार ! आगे न बढ़ना, उसके हाथ में अभी तक पारसपत्थर है।"

यह सितार बोल रहा था।

बूढ़े ने शीघ्रता से अपने हाथ से पारसपत्थर की अंगूठी उतारकर क़िले के बाहर फेंक दी और दोनों हाथ बढ़ाकर अपनी बेटी को छाती से लगा लिया। बाप-बेटी दोनों ने राजकुमारी का धन्यवाद किया और जब राजकुमारी ने अपना उद्देश्य बताया तो बूढ़े ने बड़ी प्रसन्नता से उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वह ऊपर के बुर्ज में जाकर अपने सिखाए हुए शेरों के बीच में से पहाड़ी कौए का पिंजरा उठा लाया।

राजकुमारी, बूढ़ा और उसकी बेटी ऊपर के बुर्ज की ओर रवाना होने लगे तो फिर किसीने कहा :

"और हमें यहीं छोड़े जाते हो ? सच है, मनुष्य कितना कृतघ्न होता है ।"

राजकुमारी ने पलटकर सितार की ओर देखा और फिर उसपर भी पानी छिड़क दिया । सोने का सितार फिर से लकड़ी का सितार बन गया और बूढ़े की बेटी ने अपने सितार को पहचानकर गले से लगा लिया । टप-टप आंसू उसकी आंखों से बहने लगे; और सितार के तारों पर बहने लगे; और फिर उन तारों से ऐसा मधुर राग निकला कि क़िले की भूमि का प्रत्येक कण फिर से सजीव हो उठा । जहां सोने के पत्ते थे, वहां हरी-हरी कोंपलें फूट आईं ; जहां सोने के फूल थे, वहां गुलाब के फूल सौरभ लुटाने लगे; जहां नंगी चट्टानें थीं, वहां घास निकल आई ; और जहां सोने के तपते हुए सोते उबल रहे थे, वहां ठंडा, मीठा, सादा पानी कल-कल करता हुआ खेतों को अमृत-पान कराता हुआ धरती के वक्ष पर मचलने लगा ।

सोने की घाटी में फिर से वसन्त ऋतु आ गई ।

ऊपरले बुर्ज के पास जाकर बूढ़े ने इस हरे-भरे दृश्य को देखकर राजकुमारी से कहा :

"हां, अब तुम पहाड़ी कौआ ले जा सकती हो। इस पहाड़ी कौए की आंखों में भी पुतलियों की वजाय पारस-पत्थर है। इस कौए के मर जाने के बाद इस संसार में पारसपत्थर विल्कुल नहीं रहेगा।"

बूढ़े ने सोने की ज़ंजीर से पिंजरा खोलकर पहाड़ कौआ राजकुमारी के हाथ में दे दिया।

१०

राजकुमारी छड़ी पर सवार होकर कुछ ही क्षणों में सोतों के शहर में पहुंच गई। छड़ी उड़ती हुई दानवों के क़िले की ऊंची दीवारों के ऊपर से होती हुई क़िले के भीतर पहुंच गई। दानव 'मानस-गन्ध', 'मानस-गन्ध' कहते हुए, चीखते-चिल्लाते राजकुमारी की ओर दौड़े। राजकुमारी ने शीघ्रता से पिंजरा खोलकर कौए की चोंच से चांदी की डिबिया निकालकर अपने पास रख ली और कौए के दोनों पंख नोचकर फेंक दिए।

पंखों का नोचना था कि दानवों की दोनों बांहें कट-कर अलग-अलग गिर पड़ीं। पीड़ा से चिल्लाते हुए, भया-वनी दहाड़ें मारते हुए, वे राजकुमारी की ओर लपके। राजकुमारो ने कौए की दोनों आंखें निकाल दीं। पहाड़ी कौए की दोनों आंखों के निकलते ही दानव लोग बिल्कुल अन्धे हो गए। अब उन्हें राजकुमारी दिखाई नहीं देती थी और वे अन्धेरे में पागलों की भांति इधर-उधर दौड़ने लगे।

पर एक दानव, जिसके नथनों में मनुष्य की गन्ध

सूंघ लेने की अधिक शक्ति थी, गिरता-पड़ता किसी न किसी तरह राजकुमारी के निकट पहुंच ही गया। राजकुमारी के निकट पहुंचकर उसने अपना पांव राजकुमारी के शरीर पर रख देना चाहा—जिस प्रकार हाथी चींटी के सिर पर पांव रखता है। किन्तु उस समय राजकुमारी ने बड़ी फुर्ती और चतुराई से काम लिया। वह शीघ्रता से घूमकर पलट गई और उसने कौए को टांगों से पकड़कर बीच में से चीर दिया। कौए के चरिते ही चारों ओर बादलों जैसी कड़क और गर्जन पैदा हुई। धरती भूकम्प की भांति कांपने लगी। क़िले के गुम्बद टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े और राजकुमारी भी भूकम्प के धक्के से मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी।

थोड़ी देर के बाद जब उसे होश आया तो क्या देखती है कि न वह क़िला है, न वे दानव; न वह मरुस्थल है, न वे कैदी—एक हरा-भरा मैदान है, जिसपर मखमल की भांति नर्म-नर्म घास का गलीचा बिछा हुआ है और रंग-बिरंगे फूल अपनी बहार दिखा रहे हैं। इस मैदान के बीचोबीच एक मेज़ रखी है जिसपर वह बोलनेवाला शंख रखा है और उसके पास एक पिंजरा पड़ा है जिसमें यामीन कैद है।

यामीन को देखते ही राजकुमारी दौड़कर उसकी ओर

गई और शीघ्रता से पिंजरा खोलकर उसे आज़ाद किया। फिर चांदी की डिब्बिया से गुलाब का फूल निकालकर उसे शंख के ऊपर रख दिया।

शंख पर रखते ही गुलाब का फूल अदृश्य हो गया और शंख फूल की भांति हल्का हो गया। यामीन ने उसे अपने हाथों में उठा लिया और छड़ी पर सवार होकर वे दोनों पादरी के पास पहुंचे और उसके हाथ में शंख दे दिया। पादरी शंख को लेकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने शंख से कहा, "उठो, मेरी दुनिया के ग़रीबों को जगा दो।"

किन्तु शंख चुप रहा।

पादरी ने क्रोध से यामीन की ओर देखा और कहा :

"तुमने मुझसे छल किया है, यह असली बोलनेवाला शंख नहीं है। तुम कोई दूसरा नक़ली शंख लाए हो।"

यामीन ने कहा, "नहीं, असली शंख है।"

"तो फिर यह बोलता क्यों नहीं ?" पादरी ने पूछा।

यामीन ने शंख को उलट-पलटकर देखा, बिल्कुल वही शंख तो था। उसने शंख से पूछा, "तुम बोलते क्यों नहीं ?"

किन्तु शंख फिर भी चुप रहा।

पादरी ने क्रोध से कहा, "जाओ, तुम्हें लाल नहीं मिलेगा।"

राजकुमारी ने यामीन के हाथ से शंख छीनकर अपने होंठों से लगा लिया और इतने ज़ोर से शंख को फूंका कि एकाएक शंख बोल उठा :

"उठो, मेरी दुनिया के ग़रीबों को जगा दो।"

उसकी आवाज़ चारों तरफ गूंजती गई और जहां-जहां लोग सोए पड़े थे, आलस्य में पड़े थे या अपने आत्म-सम्मान को भूल चुके थे, वहां-वहां सब लोग इस आवाज़ को सुनकर जागते गए। प्रसन्नता के मारे उनकी आंखों में आंसू आ गए। आज वर्षों के पश्चात् वे जागे थे और अपने मित्रों को पहचान रहे थे और उनसे गले मिल रहे थे। सारी घाटी में जागृति की लहर उमड़ आई थी और शंख ज़ोर-ज़ोर से गा रहा था :

"उठो, मेरी दुनिया के ग़रीबों को जगा दो।"

पादरी ने बड़ी प्रसन्नता से शंख को कलेजे से लगा लिया और बोला, "अब मैं समझ गया। यह दानवों का शंख नहीं है, यह मनुष्यों का शंख है। यह स्वयं नहीं बोलता, इसमें मनुष्य का सांस और उसकी मेहनत बोलती है।"

पादरी ने यामीन और राजकुमारी की ओर देखा और गर्दन झुकाकर अपने गले का लाल उतारकर उनके हवाले कर दिया।

११

राजकुमारी और यामीन छड़ी पर सवार होकर उसी क्षण वापस हुए, क्योंकि समय बहुत कम था। सूर्य अस्त होने को था। थोड़ी देर के बाद यामीन और राजकुमारी उड़ते हुए छड़ी की सहायता से हरी पोशाकवाले बाबा के पास सांपों के शहर में पहुंच गए।

सूर्य अभी अस्त नहीं हुआ था, किन्तु पश्चिम की ओर देखने से पता चलता था कि आधे घंटे में अस्त हो जाएगा। बाबा ने लाल हाथ में लेकर कहा :

"समय बहुत कम है, परन्तु चलो चलते हैं; एक अन्तिम प्रयत्न करके देखते हैं।"

बाबा ने लाठी हाथ में ली, यामीन और राजकुमारी को अंगुली से पकड़ लिया और इस प्रकार तीनों ऊंचे मीनार की ओर चल दिए, जहां सांपों की सरकार रहती थी।

मार्ग में बाबा ने राजकुमारी और यामीन से कहा :

"मीनार के भीतर घुसने काके वल एक ही तरीका

है। उसे भली-भांति समझ लो। इसमें अगर ज़रा-सी भी भूल-चूक हो गई तो सव काम चौपट हो जाएगा।"

"बताइए, हम अभी से तैयार रहते हैं।"

बाबा ने कहा, "वह सामनेवाला जंगला दिखाई दे रहा है। वहां जाकर हम तीनों रुक जाएंगे। फिर गुम्बद के भीतर से एक आवाज़ आएगी, "तुम कौन हो?" इसके उत्तर में केवल यह कहना, "हम सरकार के ग़ुलाम हैं।" इस तरह हमें आगे जाने की आज्ञा मिल जाएगी। जब हम मीनार के लोहे के वन्द फाटक पर पहुंच जाएंगे, तो हमें फिर रुकना पड़ेगा। इस फाटक के बीच एक छेद है। इस छेद के भीतर से वे लोग हमें झांककर देखेंगे और इस वात का पता लेंगे कि वास्तव में हम सरकार के ग़ुलाम कि नहीं।"

"इसका पता उन्हें कैसे लगेगा कि हम सरकार के ग़ुलाम हैं! और फिर हमारे पास इसका क्या प्रमाण है कि हम सरकार के ग़ुलाम हैं?"

"देखो, वह तरकीब मैं तुम्हें वताता हूं। जव तुम इस द्वार के पास पहुंचो, तो खबरदार, अपनी पलकों को किसी भी अवस्था में न झपकाना। वस, चुपचाप टिकटिकी लगाए छेद की ओर देखते रहना, चाहे कुछ भी हो जाए पलकें मत झपकाना। सरकार के ग़ुलामों की सबसे बड़ी

निशानी यही है कि वे पलकें नहीं झपकाते—चुपचाप हाथ बांधे, आज्ञा मानने के लिए खड़े रहते हैं। समझ गए ?"

राजकुमारी ने कहा, "जो, समझ गए।"

बाबा ने फिर खबरदार करते हुए कहा :

"जो कुछ मैंने कहा है, उसपर पूरी तरह चलना होगा, नहीं तो राम के जीवन का मैं ज़िम्मेदार नहीं।"

इसके बाद बाबा, यामीन और राजकुमारी तीनों मीनार के बाहर सामनेवाले जंगले पर जाकर खड़े हो गए।

मीनार के भीतर से आवाज़ आई, "कौन है ?"

इन तीनों ने उत्तर दिया, "सरकार के ग़ुलाम।"

"क्या काम है ?"

"सरकार की ग़ुलामी चाहते हैं।" बाबा ने कहा।

"आगे बढ़ो।" आवाज़ आई।

वे तीनों आगे बढ़े।

सचमुच मीनार के बड़े फाटक के अन्दर एक छोटा-सा छेद था। इसके निकट ये तीनों खड़े हो गए। कुछ क्षण तक बिना पलकें झपकाए खड़े रहे, हालांकि यामीन की आंखों में जलन होने लगी और राजकुमारी की आंखों से आंसू बहने लगे। यदि कुछ क्षण तक इसी प्रकार और

खड़े रहना पड़ता तो शायद राजकुमारी की पलकें झपक जातीं, किन्तु यह तो खैर हुई कि थोड़ी देर के पश्चात् फाटक आप ही खुल गया और खुलकर आप ही वन्द दो गया।

मीनार के अन्दर जाकर बाबा ने हाथ से संकेत करके कहा, "इस ज़ीने पर चढ़ते आओ। हमें पहले बर्फ़-खाने के अन्दर जाना है, सूर्य अस्त हो रहा है।"

दौड़ते-दौड़ते उन्होंने बहुत-सी सीढ़ियां पार कर लीं और ठीक उसी समय जब सूर्य अस्त हो रहा था, वे तीनों वर्फ़खाने के भीतर पहुंच चुके थे।

और बूढ़े बाबा ने वह लाल राम के माथे से लगा दिया। लाल ने उस जगह से ज़हर चूसना आरम्भ कर दिया जहां सांप ने डंक मारा था। और उसी समय एक अनोखा दृश्य दिखाई दिया। ज्यों-ज्यों लाल ज़हर चूसता जाता था, मीनार के अन्दर रोशनी कम होती जाती थी।

थोड़ी देर में वर्फ़खाने के ज़ीने से सैकड़ों भागते हुए क़दमों की आवाजें सुनाई देने लगीं, जो अब वर्फ़खाने की ओर भागे चले आ रहे थे। बाबा ने आगे बढ़कर बर्फ़खाने का द्वार बन्द कर दिया।

ज़हर चूसकर लाल की रंगत हरी होती जा रही थी। राम के चेहरे पर जीवन की लालिमा दौड़ने लगी।

एकाएक लाल ने सारा ज़हर चूस लिया। राम ने आंखें खोल दीं और उसके आंखें खोलते ही मीनार के चारों ओर अंधेरा छा गया और चारों ओर सांपों की भयानक फुंकारें सुनाई देने लगीं।

"लाल कहां है?" बाबा ने घबराकर अंधेरे में टटोलना आरम्भ किया।

"मेरे हाथ में है।" राम ने चिल्लाकर कहा।

लाल के भीतर से हरे रंग का प्रकाश फूटकर निकल रहा था। चारों ओर सांपों की फुंकारें बढ़ती जा रही थीं। सांप तहख़ानों में से होते हुए बर्फ़ख़ाने में घुसते चले आ रहे थे।

बाबा ने चिल्लाकर कहा, "इस लाल को तोड़ दो।"

राम ने बाबा के हाथ से छड़ी ली और उसकी चांदी की मूठ को लाल पर मारकर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

लाल के टुकड़े होते ही ज़ोर का धमाका हुआ। चारों ओर बिजली-सी कौंध गई और उस बिजली के प्रकाश में बाबा ने देखा कि मीनार ऊपर से नीचे तक फट गया है और अड़ड़ड़-धम करके सारी इमारत नीचे आ रही है।

बाबा ने चिल्लाकर कहा, "भागो, भागो, यहां से

जल्दी भागो।"

बाबा ने राजकुमारी को अपनी बांहों में उठा लिया और राम और यामीन को छड़ी पर सवार कराके मीनार से शीघ्र बाहर निकल गया। उनके निकलते ही मीनार की सारी इमारत धम से नीचे गिर पड़ी।

सारा शहर हिल गया। बहुत-से मकान गिर गए। शहर के ऊपर जो जाली लगी हुई थी। वह तो साफ़ उड़ गई और शहर से बहुत दूर जा पड़ी। लोग चीखते-चिल्लाते घरों से बाहर निकल आए। मार्ग में उन्होंने बहुत-से छोटे-छोटे सांपों को मरे हुए देखा।

मीनार के पास लोगों ने एक अद्भुत तमाशा देखा।

उन्होंने देखा कि मीनार के मलवे के पास बहुत-से अज़गर और भयंकर सांप मरे पड़े हैं; लाल-जवाहरात और मूल्यवान वस्तुओं के ढेर के ढेर बिखरे पड़े हैं और उसके निकट एक हरी पोशाकवाला बूढ़ा खड़ा है; और उसके साथ एक लड़की और दो छोटे-छोटे लड़के हैं और वे तीनों विस्मित होकर उस सारे दृश्य को देख रहे हैं।

लोग बूढ़े के चरणों में आकर लेट गए और उसका धन्यवाद करने लगे कि उसने उन्हें सांपों से छुटकारा दिलाया।

बाबा ने कहा, "मेरा धन्यवाद मत करो, इन तीन नन्हे बच्चों का धन्यवाद करो, जिनकी बहादुरी से तुम्हारे जीवन बच गए हैं। आज के बाद तुम्हें कोई सांप नहीं काटेगा। सांपों की सरकार सदा के लिए समाप्त हो गई है।"

लोगों ने प्रसन्नता से तीनों को अपने कन्धों पर बिठा लिया और सारे शहर में बड़े धूमधाम से उनका जलूस निकाला।

१२

उस रात ये तीनों बच्चे बाबा के तहखाने में सोए। प्रातःकाल उठकर राम ने बाबा का धन्यवाद किया और पेड़ पर आगे बढ़ने की अनुमति मांगी।

बाबा ने कोई उत्तर न दिया और अपने जादू के शीशे को ठीक करने में लीन हो गया।

राम ने पूछा, "बाबा, हम जाएं ?"

एकाएक जादू का शीशा काम करने लगा। राम ने देखा एक झोंपड़ा है और उसके बाहर बहुत-से मनुष्य एकत्र हैं और बड़ा शोर मचा रहे हैं।

एकाएक राम ने पहचान लिया, "अरे यह तो मेरा झोंपड़ा है।"

बाबा कुछ न बोला, जादू के शीशे में देखता रहा।

फिर राम ने देखा, बहुत-से सिपाही एक चारपाई उठाकर बाहर लाए और उसे ज़ोर से फेंक दिया। चारपाई पर सोई एक बुढ़िया घबराकर उठी और चीखने लगी, "राम, तुम कहां हो। राजा के सिपाही मेरा घर

छीन रहे हैं। राम, मेरे बेटे, तुम कहां हो ?"

"हाय !" राम के मुंह से एकदम निकला।

"बाबा ने पलटकर कहा, "तुम्हारी मां मुसीबत में है।"

"हां बाबा !" राम ने घबराकर कहा, "मुझे शीघ्र उसकी सहायता के लिए पहुंचना है।"

बाबा ने जादू के शीशे के तार अलग कर दिए और धीरे से कहा :

"चलो, चलते हैं।"

बाबा ने छड़ी पर तीनों को बिठाया और उलटे वृक्ष की शाखाओं से नीचे को जाने लगे। अब तक राम और उसके साथी पेड़ पर चढ़ते आए थे। पर अब वे वापस राम के घर की ओर जा रहे थे।

सैकड़ों मीलों तक नीचे, और नीचे, पेड़ की टहनियां फैली हुई थीं। इन टहनियों के ऊपर वे मानो तैरते हुए जा रहे थे।

एकाएक यामीन ने पूछा, "बाबा, इस शहर में, जिसे हम छोड़ आए हैं, वे सांप कहां छिपे रहते थे ?"

बाबा ने कहा, "बेटा, वे सांप नहीं थे, वे आदमी थे और आदमी के वेश में लोगों के साथ रहते थे और समय और अवसर देखकर डंक मार देते थे। ऐसे आदमी

सांप से भी अधिक खतरनाक होते हैं जो मनुष्य के वेश में रहते हैं और लोगों को लूटते हैं।"

"ऐसे मनुष्यों की पहचान क्या है?" राजकुमारी ने पूछा।

"बेटी, ऐसे मनुष्यों के दिलों में ज़हर भरा रहता है, और उनकी आंखों में पुतलियों की बजाय चांदी की टिकियां होती हैं। यदि तुम इन मनुष्यों की आंखों में ध्यान से देखो तो उन्हें बड़ी अच्छी तरह पहचान लोगी। ये वे मनुष्य हैं जो मनुष्यों को लूटते हैं और उनमें लड़ाई करवाते हैं। इन मनुष्यों की आंखों में पुतलियां नहीं होतीं, चांदी की गोल-गोल टिकियां होतीं हैं।"

छड़ी वेग से उड़ी जा रही थी। अब पेड़ का तना निकट आ रहा था और धरती के छेद से प्रकाश भी छन-छनकर आने लगा था। थोड़ी देर में छड़ी नीचे उतरती हुई छेद से बाहर निकल आई।

अब वे चारों राम के झोंपड़ों के बाहर छोटे-से बगीचे में थे, जहां बहुत-से गांववाले, गांव का बनिया, राजा और सिपाही इकट्ठे थे और राम की बूढ़ी मां रो-रोकर विलाप कर रही थी।

राम ने चिल्लाकर पुकारा—"मां!"

मां ने विस्मित होकर अपने बेटे की ओर देखा और

फिर दौड़कर उसे गले से लगा लिया। वह राम का मुंह
ती जाती थी और रोती जाती थी।

एकाएक राजा ने क्रोध से चिल्लाकर कहा, "इसे भी पकड़ लो।"

राजा के सिपाहियों ने राम को भी पकड़ लिया। बाबा ने राजा से पूछा, "इस ग़रीब लड़के का क्या अपराध है?"

राजा ने कहा, "यह भगोड़ा है। यह मेरी फ़ौज में लड़ना नहीं चाहता। मैं साथवाले देश पर हमला करना चाहता था। इसने मेरी फ़ौज में भरती होने से इन्कार कर दिया।"

बाबा ने कहा, "तुम दूसरे देश पर क्यों हमला करना चाहते थे?"

"मुझे धन की आवश्यकता है।"

"तुम कितना धन चाहते हो?" बाबा ने पूछा और अपनी झोली में हाथ डालकर मुट्ठी भर ली। फिर हीरे-जवाहरात धरती पर फेंक दिए।

राजा और उसके सिपाही जल्दी-जल्दी धरती से हीरे और जवाहरात चुनने लगे। बाबा ने दूसरी बार फिर झोली में हाथ डालकर एक और मुट्ठी-भर लाल और जवाहरात निकाले और उन्हें उस छेद के अन्दर फेंक दिया

जिसमें वृक्ष उगा हुआ था।

कुछ सिपाहियों ने छेद के भीतर छलांग लगा दी।

राजा ने रुककर बाबा से कहा, "यह तुमने क्या किया ?"

बाबा ने कहा, "मैंने तुझे मार्ग दिखाया है। हम लोग इस गुफा के भीतर से आए हैं। वहां भीतर लाल और जवाहरातों की लाखों खानें हैं। वहां से तुम इतना धन इकट्ठा कर सकते हो जितना यहां तुम कभी नहीं कर सकते।"

राजा और उसकी लालची बेटी, दोनों ने छलांग लगा दी। राम ने चिल्लाकर कहा, "ठहरो-ठहरो।"

किन्तु बाबा ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "इन्हें रोको मत। ये सब लोग अब छेद के अन्दर जा चुके हैं। अब तुम शीघ्रता से इसको मिट्टी डालकर भर दो।"

राम हैरान खड़ा रहा।

बाबा ने मुड़कर गांववालों से कहा, "यदि तुम राजा से सदैव के लिए छुटकारा पाना चाहते हो तो यही समय है। शीघ्रता से इस छेद को मिट्टी डालकर भर दो, कहीं राजा लौट न आए।"

बात राम की समझ में आ गई।

राम ने बेलचा हाथ में लिया और उसमें मिट्टी

डालने लगा। उसकी देखा-देखी गांव के दूसरे आदमी भी मिट्टी डालने लगे। थोड़ी देर में सारे गांव ने इस छेद को मिट्टी डालकर भर दिया।

जब छेद को मिट्टी से बिल्कुल भर दिया गया और मिट्टी धरती के बराबर हो गई तो राम ने कहा, "बाबा, इसके भीतर तो मेरा पेड़ था।"

बाबा ने कहा, "वह पेड़ तो अब भी मौजूद है। इस पेड़ पर चढ़कर तूने जीवन का इतना अनुभव प्राप्त किया है। इस पेड़ से जो कुछ तुमने सीखा है, वह सब कुछ अपने साथियों और पड़ोसियों को सिखाओ।"

"किन्तु बाबा, मैं तो इस पेड़ पर पूरा चढ़ भी न पाया। मैंने तो इसकी चोटी भी न देखी। बाबा, मुझे इस पेड़ की चोटी देखने की बड़ी लालसा है।" राम ने कहा।

बाबा ने सुनकर कहा, "बेटा, यह कोई साधारण पेड़ नहीं है, यह मनुष्य की प्रगति का पेड़ है। इसकी चोटी आज तक किसीने नहीं देखी।"

राम के चेहरे से दुःख और खेद की लकीरें मिट गईं। उसके अन्तर के बहुत-से अंधेरे कोनों में प्रकाश फैल गया। एकाएक उसकी समझ में बहुत कुछ आ गया। उसने बड़े आदर से बाबा की छड़ी को चूम लिया और बोला :

"बाबा, तुमने मुझे बहुत कुछ सिखाया है, मैं तुम्हारा धन्यवाद कैसे करूं और कैसे कर सकता हूं ? बस, मेरी यही प्रार्थना है कि आज से यह झोंपड़ा तुम्हारा है; हम सब लोगों का है। आज से तुम हमारे साथ रहो बाबा, इस छोटे-से झोंपड़े में—जहां यामीन भी रहेगा और यह राजकुमारी भी।"

बाबा ने राजकुमारी के सिर पर हाथ फेरकर कहा, "राम, सभी छोटी लड़कियां राजकुमारी होती हैं। तुम इसको अपने घर में रखो और अपने मित्र यामीन को भी। अपनी मां की सेवा करो, अपने गांववालों को अपने अनुभव और अपने ज्ञान से लाभ पहुंचाओ। मैं अब जाता हूं।"

"क्यों बाबा, आप रहेंगे क्यों नहीं ?" यामीन ने पूछा।

"रुक जाइए न।" राजकुमारी ने बाबा से लिपटकर बड़े प्यार से अनुरोध किया।

"रुक नहीं सकता बेटी !" बाबा ने धीरे से कहा, "मेरा काम रुकना नहीं, चलना है। मैं चलता रहता हूं, सदैव चलता हूं, क्योंकि मेरा नाम इतिहास है।"

बाबा ने फड़फड़ाते पंखोंवाली छड़ी को अपने हाथ में लिया और आगे चल पड़ा। बहुत दूर तक राम, राजकुमारी और यामीन की दृष्टि उसका पीछा करती रही।

अन्त में मार्ग के एक मोड़ पर वह उनकी दृष्टि से ओझल हो गया।

राम की मां ने बड़े स्नेह और प्यार से राम और उसके साथियों की ओर देखा और कहा, "बाबा ठीक कहता था। चलो, अन्दर चलो, तुम्हारा घर तुम्हारी राह देख रहा है।"

राम ने यामीन और राजकुमारी का हाथ पकड़ा और अपनी मां के पीछे-पीछे फूलोंवाली क्यारियों से होता हुआ अपने झोंपड़े के अन्दर चला गया।

◇ ◇ ◇

4--66--2--1